सिंह मदनगोपाल ख्यालमे कहिता भजु प्रभुको दिलमे ॥ कलि कलूषको नाश सर्व्व गुरु देते मिकदार करि छिन मे ॥ २०८९ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीसे और सुग्रीवसे मित्रता ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

किष्किन्ध्या पथ भुपाल हों शुनो हनुमान लाय ॥ शवरीको प्रभु तारके ऋष्यमूकमो आय ॥ ऋष्यमूकमो आय देख सुग्रीव डराए ॥ आपुसमो वह भयो वीर यह वालि पठाए ॥ शुनत वचन हनुमन्त कह्यो नृपको समुझाई ॥ मति भुनता घवड़ाव तत्त्वलाऊं मै जाई ॥ २०९० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभय आशुग पुत्र सिधाये ॥ पहुचे विप्ररूप धरि आये ॥ पाणिजोड़ पदमो शिरनाई ॥ आवत लोचन कमल भराई ॥ २०९१ ॥ तपस्वीरूप शरासन पाणी ॥ श्याम गौर कोमल पदवाणी ॥ को तुम नाथ

कहांसि पाये ॥ विचरहु क्यों बन शस्त्र धराये ॥२०६२॥ प्रभा देख हम कीन विचारा ॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र अवतारा ॥ इनमो कौन आप प्रभु होवैं ॥ बोलि आलि मेरो सब खोवैं ॥ २०६३ ॥ शुनत वचन रघुनाथ बताए ॥ अवधि पती दशरथके आए ॥ राम लखण पख भ्रात कहावैं ॥ जनक सत्य पालन बन आवैं ॥२०६४॥ शून्य अवास लङ्कपति पाये ॥ जनकसुताको हरण कराये ॥ ताते शोक बहुत मै पाई ॥ अन्त एक मुझको बतलाई ॥ २०६५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मित्रता करो सुग्रीवसे ऋष्यमूकमो आय ॥ वह तेरे यह शोकका दवा करेंगे आय ॥ दवा करेंगे आय शुनत मारुत सुत भाई ॥ निज स्वामीको चीन्ह हर्ष पदमो लपटाई ॥ प्लवग रूपको धार जोड़कर माथ शुनाए ॥ करो भृत्यसे भेंट नाथको देख डराए ॥२०६६॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभय कांधे पर बैठाए ॥ सुग्रीव निकट प्रभुको ले आए ॥ निरख कपीश्वर अति हरषाई ॥ भेटैं चरण कमल लपटाई ॥२०६७॥ तब हनुमन्त भये समुझाए ॥ धन्य भाग तेरो कपिराए ॥ जो भव ध्यान धार नहि पावैं ॥ सो तुझको खोजत चलि आवैं ॥२०६८॥ तब

सुग्रीव नाथ निज जानी ॥ कन्दमूल बनते बहु आनी ॥ अर्च्चन पाद अर्घं दे करती ॥ लोचन उदक प्रेमकी भरती ॥२०९९॥ कृताञ्जलि करिके कपिराई ॥ परयो प्रभु पदमो शिरनाई ॥ नाथ कृपा मुझपर बहु कीना ॥ दर्शन खोज भृत्यको दीना ॥ २१०० ॥ अब अनकूल विधीभे मेरे ॥ जब दर्शन पाए प्रभुतेरे ॥ और प्रतीत मोहिं नहिं आवें ॥ जो पशुको प्रभु सखा बनावें॥२१०१॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत बचन सुग्रीवके नाथ कहैं हरखाय ॥ भक्ति बस्य जो जन्तु हैं सो मुझसे अधिकाय ॥ सो मुझसे अधिकाय हृदन वायूसुत लाये ॥ तिनको साखी राख नाथ मित्रता कराये ॥ भये खालसासिंह भाग मर्कटको भारी ॥ तीन लोकके नाथ मित्र भए आदि पुकारी ॥ २१०२ ॥

अथ श्रीसुग्रीवका श्रीसीता देवी उद्धार अङ्गीकार।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जोड़ भये सुग्रीव कर राम चरण लपटाय ॥ आय मन्द दे रावका कन्या भु लेजाय ॥ कन्या भू लेजाय

देख मुझको कलपाई ॥ दीना भूषण मेक यन करि
भृत्य रखाई ॥ सुनत वचन रघुनाथ भये कपिको
हरषाये ॥ हतो मित्र मम शोक आभरण शीघ्र दिखाये
॥ २१०३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तत्काल सुग्रीव सिधाए ॥ सन्मुख अलङ्कार लै
आए ॥ भूषण निरखि नाथ कलपाई ॥ पूछैं लक्ष्मणको
दिखलाई ॥ २१०४ ॥ चीन्हौ भ्रात सियाको गहना ॥
है या नाहिं सत्य मोहि कहना ॥ देख अनुज प्रभुको
बतलावैं ॥ सबको मै नहिं चीन्ह सकावैं ॥ २१०५ ॥
यह भूषण पदके रघुराई ॥ है जगदम्बाको सच भाई ॥
सुनत वचन क्रन्दन प्रभु करते ॥ लोचन कमल
शोकते भरते ॥ २१०६ ॥ तब सुग्रीव देख घबड़ाए ॥
पाणिजोड़ प्रभुको समुझाये ॥ मित्र शोक जिन आप
करावैं ॥ दुष्ट मार सीता मै लावैं ॥ २१०७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कीना अङ्गीकार मै पावक साखी राख ॥ सीताको
उद्धार करि राखो अगभो साख ॥ राखो अगभो साख
प्रभो काहे कलपावैं ॥ मै पशु हो कर मित्र कछू नहि
शोक करावैं ॥ भये खालसासिंह प्रभो पुछैं घबड़ाए ॥
कह आपनो कहो मित्र मुझको समुझाए ॥ २१०८ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजी बालको मारके सुग्रीवको राज देने अंगीकार किया।

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

सुनकी कपिराई हर्ष बढ़ाई माथ निवाई बतलाए॥ हरली मम नारी अग्रज मारी देश निकारी रघुराए॥ भाखें रघु नायक भ्रात नलायक मारण लायक तोर सखा। ॥ प्रभुकी सुन बाणी कष्ट अपाणी आज नशाणी कीश लखा। ॥ २१०९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुन राघव पूछें कपराई॥ कारण कवन बैर पख भाई॥ सुनत बाक सुग्रीव बखानें॥ बैर विरोध नाथ नहिं जानें॥ २११०॥ पुर्व कथा निज नाथ बतावें॥ ताते आप विचार करावें॥ अक्षय नामक जनक रहाए॥ किष्किन्ध्यामो राज कराए॥ २१११॥ तिनकी सुगल पुन रघुराई॥ पुर्वज बालि अवर मैं भाई॥ अब पितु स्वर्गलोक मम भाए॥ तब अग्रज शिरछत्र धराए॥२११२॥ मै युवराज काजको पाई॥ ज्येष्ठ सहित पितु राज कराई॥ अधिप स्नेह बहुत मम करते॥ निरख दुष्ट मनमो जर मरते॥ २११३॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मायावी सो दुन्दुभी मय सुत कहुँर होय ॥ महिष रूपको धारके करे समर नित सोय ॥ करैं समर नित सोय यातु मायावी आए ॥ अर्द्ध निशा पुरद्वार वालिको गर्ज्ज बलाए ॥ युद्ध करी कपिराज आज शृङ्गार तजाई ॥ प्राय रहैं सुखभोग कीश करि ही काल आई ॥ २११४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत वचन अग्रज गर्ज्जाए ॥ संग्र हेतु सम्मुख कलि आए ॥ तब आसर भाग्यो भय पाई ॥ घेर्‌यो वालि सङ्ग लगि धाई ॥ २११५ ॥ मे भी बन्धु साथ प्रभु धाए ॥ पैठ्यो गुहा मध्य खल जाए ॥ देखत बालि गुहामे जावैं ॥ मे बहु भांत ताहि समुझावैं ॥ २११६ ॥ सोदर मोर कहा नहि मानें ॥ कहा प्रभो मुझको शरतानें ॥ कृत तुम वास करी पख वारा ॥ मे अपु मार मिलो सुन प्यारा ॥ २११७ ॥ पखभए भ्रात सुरङ्ग सिधाए ॥ बीतो वर्ष लौट नहिं आए ॥ रुधिर धार निकस्यो बहु भारी ॥ मे समुझा तिनको खल मारी ॥ २११८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

आसर भ्राता मारके मुझको मारे आय ॥ ऐसी

रघुवर आनकी लाए आवन आय ॥ लाए आवन आय गुहाको बन्द कराए ॥ पहुंचे हनुमान आय हाल मन्त्री सब पाए ॥ भूप सिंहासन हीन देख बहुता समुझाई ॥ दीना मुझको राज तिलक शिरछत्र धराई ॥२११९॥

॥ पाद्दा कुलकछन्द ॥

अनु मार बालो अब आये ॥ मारग बन्द देख घबड़ाये ॥ लात मार शिखरिनको तोरे ॥ आयो कोपधारि गृह मोरे ॥ २१२० ॥ राजछत्र मम माथ लखाई ॥ दीना गाल कोट रघुराई ॥ मै करजोड़ विनय बहु कीना ॥ मन्त्री राज तिलक दे दीना ॥२१२१॥ मै समुझा मुझको खल मारी ॥ तिह कारण दीना शिल भारी ॥ राजछत्र शिर आप धरावैं ॥ मै सेवकतव सेव करावैं ॥२१२२॥ यह विधि कोट प्रभो समुझाये ॥ पुर्व्वज चित्त दया नहि आये ॥ लात मार मईन करि डारा ॥ पुर दीलत लीना हरदारा ॥ २१२३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तबते मै भागा फिरूं स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ सुनत हाल सुग्रीवते पूछैं दीन दयाल ॥ पूछैं दीन दयाल सखा दुश्मनकी हारी ॥ क्या साहसते रहो बहुत हसमो है खारी ॥ सुनत वचन सुग्रीव जोड़कर भाष सुनाए ॥ इस पर्वतका हाल सत्य सुनिए चितलाए ॥२१२४॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुर्वं नाम दुन्दभी बतायें ॥ मायावीको खवर रखाये ॥ महिष रूप धरिकै वह योधा ॥ भयो सरित पतिको करि क्रोधा ॥२१२५॥ सागर समर करो झट धाए ॥ तव वह सिन्धु भयो भय पाए ॥ मे दुर्बल मुझसे क्या लड़िये ॥ समर हिमालयसे जा करिये ॥२१२६॥ सुनत वचन रजनीचर धाए ॥ शृङ्गाघात करो गिरि जाये ॥ भये शैल तिनको समुझाई ॥ मुझसे प्रधन करो क्या भाई॥२१२७॥ जो तव मयजको धरि मारे ॥ ता सो करि आयोधन प्यारे ॥ सुनत दैत पूछो कलपाई ॥ कौन मोर भ्राताको घाई ॥२१२८॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कहा हिमालय यातुको किष्किन्ध्यामो बाल ॥ सुन महिषासुर कोप करि लौटि चला ततकाल ॥ लौटि चला ततकाल पुरी वालीकी धाए ॥ करि शृङ्गा से घात ग्रामको तोड़ खपाए ॥ सुनत खबर कपि-राज क्रोध करिकै झट धायो ॥ भयो परस्पर संख्य यातुको बाल खपायो ॥ २१२९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताका रक्त मास लै वाली ॥ फेंक दयो युग कोर उछाली ॥ मुनि मतङ्ग गिरिमो तप करते ॥ तिनपै

चहु रुधिर पल परते ॥२१३०॥ कोप धारि द्विज श्राप चलाई ॥ जौन पलक मुझपर बरषाई ॥ तौन ऋष्य-मूक पर आवें ॥ परसत शिल यमलोक सिधावें ॥२१३१॥ सुनि अभिशाप बाल घबड़ाई ॥ ऋषामूक तजते रघुराई ॥ सुनि यह खबर नाथ मैं आये ॥ निर्भय हो धर बास कराये ॥ २१३२ ॥ तब रघुनाथ भये समुझाई ॥ देहुं राज मैं बालि खपाई ॥ सुन सुग्रीव भये मुशकाये ॥ बाली महाबली रघुराये ॥ २१३३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सन्ध्या नितयुग सिन्धुमो करते राजा बाल ॥ सप्तद्वीपकी मध्यमो चुनि चुनि लाभैं माल ॥ चुनि चुनि लाभैं माल सुनत लछमणजी भाखैं ॥ जिसमो हो परतीत आप मुझको सो भाखैं ॥ भये ओह सुग्रीव पाखि प्रभुको शिरनाई ॥ यह पांजर दुन्दुभी नाथ जी देहु हटाई ॥ २१३४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताही लख शिशब उठ धाये ॥ ले पांजर सत कोश गिराये ॥ पुन सुग्रीव भये मुसकाई ॥ बालि महाबलबन्त गुसाई ॥२१३५॥ एक समय सन्ध्या नृप करते ॥ निरख धाय लङ्का पति धरते ॥ सन्ध्या त्याग

भ्रात नहिं कीना ॥ द्रुमसों बांध हुवा जल हीना ॥२१३६॥ छवक छवक गोता बहु खावे ॥ यह विधि युग सागर भ्रम वाये ॥ जब सन्ध्या करि मन्दिर आयो ॥ तब विनती करि प्राण बचायो ॥ २१३७ ॥ बालि शरण परते जो आये ॥ ताको नहिं कपिराज अघाये ॥ ताते प्रभो आप यह कीजे ॥ प्रथम कारा पुर्वन सों दीजे ॥ २१३८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनि लक्ष्मण कपिको भयो क्या लङ्कापति हार ॥ एक बाण रघुनाथजी मारें बालि हजार ॥ मारें बालि हजार सुनत सुग्रीव चलावें ॥ सप्तताल तरु छेद नाथ मुझको दिखलावें ॥ तब होवे परतीत खूब सेवकको भाई ॥ सुनत वचन रघुवीर ताल छेद्यो सुखदाई ॥ २१३९ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

यह देखत कीशं गावत शीशं भाषत ईशं जोर कहो ॥ सुनके प्रभुवाणी जोड़त पाणी भूप बखाणी कष्ट रहो ॥ हरि हो पशु तारण दुष्ट विदारण कष्ट निवारण मोर सखा ॥ कवि सिंह पचाई शोभ बनाई नाथ सकाई भृत्य लखा। ॥ २१४० ॥

अथ वालि और सुग्रीवका युद्धारम्भ ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीराघव सुग्रीवको भणे मित्र तुम जाव ॥ कौन प्रयोजन देर का मुझको शीघ्र दिखाव ॥ मुझको शीघ्र दिखाव कौन सुनिके हरषाये ॥ राज हेतु तत-काल सधन कुबंजको धाये ॥ पुरद्वारोंके निकट प्रभो तिनको समुझाई ॥ मैं पादपके आड़ रहूं शर चाप चढ़ाई ॥ २१४१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सिंहनाद जा आप करावैं ॥ ताको वालि सुनत चलि आवैं ॥ समर परस्पर होन लगाई ॥ तब ताको मैं देहुं खपाई ॥ २१४२ ॥ सुन सुग्रीव हर्ष अति धाए ॥ सिंहनाद पुरद्वार कराए ॥ सुनत नाद नृप कोप कराई ॥ पहुंचे संग्राम हेतु गर्जाई ॥ २१४३ ॥ युद्ध परस्पर होन लगाए ॥ तब श्रीराघव मनमो घब-ड़ाए ॥ कौन वालि को मित्र हमारा ॥ रूप युगल है भूमि प्रकारा ॥२१४४॥ वालिजानि जो मित्र खपावैं ॥ तो मैं अयश कष्ट बहु पावैं ॥ जौन मित्र हिंसा जन करते ॥ तौन कीट विष्टा हो मरते ॥ २१४५ ॥ अस-

भय प्रभो मर्मे मन मोर्षें ॥ तबतैं बालि कोप धरि जावें ॥ धायो पटक प्रहार कराई ॥ बाढ़ि बाढ़ि सुग्रीव पलाई ॥२१४६॥ कहं युद्ध सुनके अपबाणी ॥ दौना छोड़ धनुश निज जानी ॥ तब सुग्रीव भाग गिरि आए ॥ निरखि राम लक्ष्मणजी धाए ॥२१४७॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कहा क्रोध सुग्रीव कर रामचन्द्रको पेख ॥ मे प्रथमे प्रभुको कहा कोमल तन तव देख ॥ कोमल तन तव देख बालि विक्रमसो भारी ॥ क्यों करि ताको हतो वीर जाते सब हारी ॥ प्रथमतः यह हाल नाथ तनको लखि पावें ॥ तो काहे मे युद्ध हेतु पग्रज सों जावें ॥ २१४८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब ही मे प्रभुको समुझाई ॥ बाली बड़ो वीर रघुराई ॥ क्यों करि ताको नाथ खपावें ॥ समन देख जाको भय पावें ॥ २१४६ ॥ यद्यपि ऋष्यमूक नहि होते ॥ तो मे प्रेत भूमिमे सोते ॥ सुनि रघुनाथ सखाकी बाणी ॥ बोलें कलप परस मिरपाणी ॥२१५०॥ बन्धु काज बहुता मे पाए ॥ पर जिन कही कलप कपि राए ॥ भ्रात युगल भूरूप लखाई ॥ भ्रम होयो मुझको पसभाई ॥ २१५१ ॥ अब जान जी मित

खपावैं ॥ तौ मम अयश त्रिभुवन गावैं ॥ और पाप दूसमो है भारी ॥ ताते मै शरको नहि मारी ॥२१५२॥ प्रात चिन्ह दै करि पठवावैं ॥ तब ताको मै मित्र खपावैं ॥ शुन सुग्रीव चरण गहि लीना ॥ रात्रि वास ग्रावन पर कीना ॥२१५३॥ होत प्रभात प्रभो हरषाई ॥ चिन्ह लखणको दैन कहाई ॥ शुन लक्ष्मण मनमो हरषाए ॥ कुसुम माल कपिको पहिराए ॥ २१५४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दै करि ताके कण्ठमो हार चिन्ह रघुनाथ ॥ ग्रावनते चलते भए धनुषवाण लै हाथ ॥ धनुषवाण ले हाथ अहुं मारगमो आये ॥ कदली वनके बीच कुटी तपस्वीको पाये ॥ भणै खालसासिंह प्रभो कुटिको शिरनाई ॥ कीना पुन प्रस्थान चापमो वाण चढ़ाई ॥ २१५५ ॥

अथ वालि वधः ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कदली वनके बीचते जब कीना प्रस्थान ॥ तब कपिको राघव भणै शुनो सखा दै कान ॥ शुनो सखा दै कान सत्य निज अद्य रखावैं ॥ शुनत वचन सुग्रीव

जोड़ कर विहस अनावैं ॥ मैं सेवक तव करौं प्रभो सब विधि सेव कराई ॥ कोट जन्म तक त्राण नहीं तुमसे रघुराई ॥ २१५६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वीर परस्पर अस बतलाए ॥ पहुंचे सिन्धु ताल जित आए ॥ वहां गुप्त हो नाथ रहावैं ॥ समर हेतु सुग्रीव सिखावैं ॥ २१५७ ॥ सिंहनाद पुरद्वार कराए ॥ सुनत बालि बलवन्त रिसाए ॥ बाजि हेतु जावैं गरजाई ॥ पकड़ पाणि तारा समुझाई ॥२१५८॥ नाथ को जिन आप करावैं ॥ आज आजि कारण मति जावैं ॥ अवरज जानि क्षमा पति करिए ॥ अपर होय तासौं जा लड़िए ॥ २१५९ ॥ और सुनो भर्त्ता मम वाणी ॥ सुर नर मुनि अरु वेद बखाणी ॥ जौन नाम सुनते मरि जावैं ॥ तौन यदी लड़नेको आवैं ॥ २१६० ॥ तासौं समर बूझके कीजै ॥ अवश्य सहाय कोय सुन लीजे ॥ और प्रभो मैं भी सुन पाए ॥ अवधि कान्त दशरथके जाये ॥ २१६१ ॥ राम लक्ष्मण हैं पख भाई ॥ विचरैं वनकर चाप धराई ॥ जो सुग्रीव तिन्हे ले आए ॥ तो तेरो पतिप्राण नशाये ॥ २१६२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ताते क्रोध सम्हालकी क्षमा करो बलवन्त ॥ ले

अवरजको साथमे राज करो मम कन्त ॥ राज करो मम कन्त एक दृष्टान्त शुनावैं ॥ कौन भरतके हेतु राम काननमो आवैं ॥ ताको दे करि राज आप वनकी हो वासो ॥ फिरैं जटा शिर धार भो जस विप्र उदासी ॥ २१६३ ॥

॥ पादकुलक छन्द ॥

शुनि ताराको वालि बतावैं ॥ भरत तुल्य भ्राता कित पावैं ॥ दुष्ट तुल्य अग्रजको देखैं ॥ शत्रु तुल्य जननीको पेखैं ॥ २१६४ ॥ जबते राम भये वनवासी ॥ तबते भरत तज्यो सुखरासी ॥ जटा शीर्ष तन भस्म लगाये ॥ सेवक हो करि राज कराये ॥२१६५॥ तस नहिं अनुज मोर शुन रानी ॥ नित चाहत मेरो बहु हानी ॥ तदपी मै नाहि खपावैं ॥ करि बन्धन ताको ले आवैं ॥ २१६६ ॥ धर्मवन्त दशरथकी जाये ॥ सत्य हेतु काननमो आये ॥ तिनशौं वैर भाव नहि कोई ॥ विन अपराध हतें नहि मोई ॥२१६७॥ जौ सहाय हो करि प्रभु आये ॥ तौ अनीक करि हौं मै जाये ॥ अयश होय रण देख डरावैं ॥ असमभय वालि पयान करावैं ॥ २१६८ ॥ कीना मल्लयुद्ध पख भाई ॥ भूमिकम्प सम भूमि हिलाई ॥ प्रहर चन्द्र भल प्रधन कराये ॥ तब सुग्रीव थकी घबड़ाये । २१६९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वालि पकड़ सुग्रीवको पटक भूमिमो कीन ॥ चढ़ि छातीपै वोधमो दाव कण्ठको दीन ॥ दाव कण्ठको दीन प्रभो सुग्रीव चलाये ॥ सप्ततालको भेद बाण रघुनाथ चलाये ॥ भणे खालसासिंह वालि लोटे तड़फाई ॥ गिरे अचेतन होय निकट पहुचे रघुराई ॥ २१७० ॥

अथ राजा वालिका सतकार्ज्ज ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीराघवको देखिके हृदय प्रीति करजोर ॥ मुखते वाली भणत हैं चुनि चुनि वचन कठोर ॥ चुनि चुनि वचन कठोर प्रभो बोले सब कोई ॥ दीन बन्धु रघुनाथ आज देखा मै सोई ॥ आप तुल्य धर्म्मिष्ठ नाथ देखन नहि पाये ॥ युद्ध वीरसे होय प्राण लीना मम आये ॥ २१७१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जस ही दीन दयाल रघुराई ॥ सो प्रतक्ष देखन मै पाई ॥ और प्रभो तुमरो नहि कार्जे ॥ परहिंसा

मनमो नित राजै ॥ २१७२ ॥ निशवासर कर शस्त्र धरावै ॥ फिरै विपिन हिंसा चित लावै ॥ भगड तपस्वी रूप बनाई ॥ जीवजन्तु सब देह खपाई ॥ २१७३ ॥ चवौ धर्म्म कछू नहि पावैं ॥ व्याध तुल्य सब जीव खपावैं ॥ जाको महावीर गुन पायो ॥ ताको छिपकै प्राण हतायो ॥ २१७४ ॥ जो सन्मुख मुझसे प्रभु लड़ते ॥ तो यथा हाल जान कछु पड़ते ॥ सन्मुख समर कठोर लखाई ॥ व्याध तुल्य शर नाथ चलाई ॥ २१७५ ॥ विनि अपराध हतो प्रभु मोये ॥ ताते राज पाट नहि पाये ॥ नारि निषेध बहुत मम कीना ॥ तिया बोल चितमो नहि लीना ॥ २१७६ ॥ धर्म्मवन्त प्रभुको गुन पाये ॥ ताते मै धोखा यह खाये ॥ जो अनीत तन को लखि पावैं ॥ तो काहे निज प्राण हरावैं ॥ २१७७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन वालीके वचनको भणे प्रभो मुश्काय ॥ विना दोष मारौं नहीं शुनो कोशकी राय ॥ शुनो कोशकी राय कहो क्यों नीत बिसारो ॥ अनुज वधू जो हरे चोर भम्मी सुतनारो ॥ अस पापी बिन कहे चाहि जैसे जो मारैं ॥ ताको कछु नहि दोष वेद मुख चार उचारैं ॥ २१७८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

आज बालि तेरो बड़ भागी ॥ मुक्त भयो मेरो शरणागी ॥ इन्द्रपुत्र इन्द्रालय जावो ॥ सुख सम्पति सब भोग करावो ॥ २१७९ ॥ सुनि कपोश प्रभुकी यह बाणी ॥ बोलत कलपि जोड़ निज पाणी ॥ मै निर्बोध जन्तु कहि लावें ॥ और कष्ठ शरते बहु पावें ॥ २१८० ॥ ताते नाथ अबोल अलाई ॥ क्षमा करौ मुझपर रघुराई ॥ मै शरणागत नाथ तम्हारे ॥ क्षान्ति करौ अपराध हमारे ॥ २१८१ ॥ असभण बालि नुती बहु कीना ॥ चरणौ चूम पांश मुख दीना ॥ पुन कर जोड़ भयो शिरनाई ॥ अङ्गदको सेवक रघुराई ॥ २१८२ ॥ कीजे नाथ देहु बरदानू ॥ और बकृश कीजे यह श्रानू ॥ नारि सुसेन सुता मम तारा ॥ ताको अवर न हतें हमारा ॥ २१८३ ॥ यह बरदान देहु रघुराई ॥ बिहस प्रभो बोले समुझाई ॥ तात आप जिन शोंच करावें ॥ कर्म्म लिखा अपनो सब पावें ॥ २१८४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अन्त समय कपि राज तब नारायण सुधभीव ॥ जीन तुझे भवसिन्धुते पार करेंगे देव ॥ पार करेंगे देव पुत्र पत्नी तव भाई ॥ जिनसे करते प्रीति वहां कछु काज न आई ॥ सुनत ज्ञान ततकाल ब्रह्म उद्भव

हो जाए ॥ तबते पशुकी नारि और अङ्गज उत जाए ॥ २१८५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तारा कन्त देख घबड़ाई ॥ करि क्रन्दन पदमो शिरनाई ॥ लोटैं भूमि कीश छिटकाएँ ॥ कलप तड़फ बोलै घबड़ाए ॥२१८६॥ समर सुरासुर देख डरावैं ॥ मानुषते पति प्राण हरावैं ॥ नाथ तुम्हे कितनो समुझाए ॥ अबला जानि चित्त नहि लाए ॥ २१८७ ॥ असभण रामचन्द्र पै आई ॥ कर उठाय बोलै गरजाई ॥ सर्वनाश मम नाथ कराये ॥ ताका दण्ड लेहु प्रभु आये ॥ २१८८ ॥ क्षमावन्त बड़ कन्त हमारे ॥ ताते शाप न नाथ उचारे ॥ मै नहि क्षमा करौं रघुराई ॥ दै करि दण्ड लेहुं बदलाई ॥ २१८९ ॥ मति जानौ मै हौं भगवाना । लगे श्राप मम तीर समाना ॥ जौ मै सतीव्रता पति होवैं ॥ तौ मम शाप नाथको खोवैं ॥ २१९० ॥ असभण शाप देत गर्जाई ॥ जस रघुनाथ कान्त मम घाई ॥ तस तव और जन्म भगवाना ॥ अङ्गद प्राण हतै शुन काना ॥ २१९१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सीताको प्रभु पाओगे लङ्काको करि नाश ॥

किन्तु सदा न जानकी रहैं आपकी पास॥ रहै आपकी पास मुझे जै सो कलपाए॥ तैसो प्रभुको छोड़ जनक ला स्वर्ग सिधाए॥ सीताका बिछोह कष्ट तनमो जब पावैं॥ तब मेरो यह क्लेश नाथ सब याद करावैं ॥ २१६२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनि अभिशाप बालि कलपाए॥ भार्य्याको भार्षै धमकाए॥ दुष्ट मुझे राघव नहि मारैं॥ मम अधर्म्म मम प्राण बिदारैं॥ २१६३॥ अन्त समय मुनि आहि धिआई॥ लेवैं मुक्ति पदारथ जाई॥ तिनको शाप क्रूरतैं दीना॥ तातै सर्व्वनाश मम कीना॥ २१६४॥ जो प्रभुको जो दान करावैं॥ ताका कोट गुणा सो पावैं॥ दुष्ट अधर्म्म बड़ो तूं कीना॥ मैं अभिशाप काहि नहि दीना॥२१६५॥ असभण बालि बहुत कल-पाए॥ करि क्रन्दन प्रभुको समुझाए॥ नाथ जन्तु अबलाको जातो॥ तातै शाप दयो बहु भातो॥२१६६॥ क्षमा करो भगवन्त हमारे॥ बिहस प्रभो भाषैं शुन प्यारे॥ मै अति तुष्ट भये शुनि शापा॥ आप चित्त कीजे जिन तापा॥ २१६७॥ असभण प्रभो प्रबोध कराए॥ तब अघरजको बालि बुलाए॥ भयो रोय आशीस कराई॥ बैर बिरोध कीन बहु भाई॥२१६८॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तेरो कछु नहि दोष है कर्म्म लिखा मम तात ॥ राज करो सुखसे रहो शोक तजो मम भ्रात ॥ शोक तजो मम भ्रात प्रभोका काज करायो ॥ इन्द्रदयो यह हार अवर अपने जग पायो ॥ एक अयअसे वीन कीश गलमो निज पाई ॥ तब अङ्गदको नीत बालि बोलें समुझाई ॥ २१६६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तात शोक जिन मोर करावें ॥ मम समान पितृव्य लखावें ॥ चाचाकी सेवा नित कीजे ॥ राम भक्ति चितमो धरि लीजे ॥ २२०० ॥ असभण बालि प्रबोध कराई ॥ रामनाम रट प्राण तजाई ॥ इन्द्रबिमान दीन पठवाए ॥ चढ़ि तापर सुरलोक सिधाए ॥ २२०१ ॥ इत तारा अङ्गद पुरवासी ॥ रोवत कलप तड़फ दुख रासी ॥ हाहाकार नगर सब कीना ॥ पशुपची रोवत जल मीना ॥२२०२॥ तारा विकल देखि हनुमाना ॥ भयो करो सुत लखि दुख हाना ॥ सुन राणी बोलैं अकुलाई ॥ स्वामी विना गतो नहि भाई ॥ २२०३ ॥ पुत्र सहस्र रहैं क्या होई ॥ तौभी पराधीन है सोई ॥ भर्त्ताको जो मन्द चलावें ॥ मनमो विहस खमा करि जावें ॥ २२०४ ॥ वचन पुत्रको भयो कठोरा ॥ छसा

फिरि कोप करि घोरा ॥ तातें कन्त तुल्य नहिं कोई ॥
असमय कलप कलप पुन रोई ॥ २२०५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब राघव सुग्रीवको भयौं मित्र तुम जाव ॥ सत्य-
कार कपिराजका उत्तम आप कराव ॥ उत्तम आप
कराव सुनत सुग्रीव सिधाये ॥ लै बिमानकै बीच
रामका नाम पढाये ॥ भये बालबासिंह नदी पम्पा
तट आई ॥ दोना मुख मै आग चिताकै बीच सुताई
॥ २२०६ ॥

अथ सुग्रीवका राजाभिषेक ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सत्यकार करि बालिका प्लवग सर्व्व जव आय ॥
श्रीराघवकै चरणको बन्दैं शीर्ष निवाय ॥ बन्दैं शीर्ष
निवाय प्रभो लक्ष्मणको भाषैं ॥ राज करो अभिषेक
मित्र परजाको राखैं ॥ सुनत वचन सुग्रीव भये पदमो
शिरनाई ॥ आप चलो मम नाथ देहु अभिषेक कराई
॥ २२०७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब कौशल्य आखें समुझाए ॥ जनक मोहि बनवास कराए ॥ क्यों कर नगर बीच मे आऊं ॥ पितु आदेश न टार सकाऊं ॥ २२०८ ॥ राज करौ अभिसर तुम जाई ॥ अङ्गदको कीजे युवराई ॥ तारा कृशोदरीको सीता ॥ कीजे पटराणी मे दीता ॥२२०९॥ रुमा नाम पत्नी निज भाई ॥ ले करि राज करौ तुम जाई ॥ लक्षमण प्रभो ताहि समुझाए ॥ अवरजको दे साथ पठाए ॥ २२१० ॥ लक्षमण राज पुरीमो जाई ॥ राज तिलक अभिषेक कराई ॥ अङ्गदको युवराज बनाए ॥ तारा कृशोदरी बुलवाए ॥ २२११ ॥ तिनको पटराणी पद दीना ॥ राणी लघू रुमाको कीना ॥ राजपाट भार्य्या निज पाई ॥ रामनाम सुग्रीव अलाई ॥ २२१२ ॥ तारा चन्द्रमुखीको पाए ॥ दान पुण्य बहु भांत कराए ॥ लक्षमणका अर्चन पुन कीना ॥ चरण धोय चरणोदक लीना ॥ २२१३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दे लक्षमण सुग्रीवको राज कीन प्रस्थान ॥ माल्य वान गिरकी विषे पहुंचे राघव थान ॥ पहुंचे राघव थान जाय लक्षमणजी पाए ॥ कीना प्रभुसे भेंट लीन पावन पर जाए ॥ भयो खालसासिंह अवर सब जाल

जनाई ॥ चतुर मास धर भव्य बास कीना रघुराई ॥ २२१४ ॥

अथ श्रीसीतादेवी उद्धारनार्थ सुग्रीव प्रति ताड़ना ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वर्षाॠतु बीत्यो जबै कीना शरत प्रवेश ॥ तब रघुपति चितमो किया सीताको उद्देश ॥ सीताको उद्देश हेतु मनमो घबड़ाई ॥ लक्ष्मणको प्रभु भणै लाव सुग्रीव बुलाई ॥ राजभोग मै मत्त होय कारि मौज करावैं ॥ ताते अपनो सत्य और मम सेव लजावैं ॥ २२१५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत बचन लक्ष्मण शिरनाये ॥ कोप धार शर चाप उठाए ॥ रघुपतिको बोलैं समुझाई ॥ दे हौं कीश कीट सम बाई ॥२२१६॥ शुन रघुपति पुन ताहि भलावैं ॥ मित्रद्रोह जिन ख्यात करावैं ॥ तास दिखा निज काज करायो ॥ तिनको साथ शीघ्र लै आयो ॥ २२१७ ॥

असमथ रामचन्द्र पठआए ॥ निरख स्वरूप शमन भय पाए ॥ पहुंचे भूप द्वारमो जाई ॥ प्रणति करैं बानर गण आई ॥ २२१८ ॥ अङ्गदको भाषैं धमकाये ॥ कहो आगमनको मम जाये ॥ शुनि अङ्गद प्रस्थान कराई ॥ जोड़ पाणि नृपको बतलाई ॥ २२१९ ॥ रामानुज शरचाप चढ़ाये ॥ गर्ज्जत द्वार देखभय पाये ॥ शुन सुग्रीव जोड़कर धावैं ॥ लै शरचाप नाय धमकावैं ॥ २२२० ॥ दुष्ट अधर्म्म कुटिल पशुजाती ॥ विसरो राम कार्य्य मदमाती ॥ आज तोहि यमलोक पठावैं ॥ अङ्गदको शिर छत्र धरावैं ॥ २२२१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्लवग कान्त लखि कोपको धरे चरणको जाय ॥ तवापी लछमण भये तर्ज्ज गर्ज्ज धमकाय ॥ तर्ज्ज गर्ज्ज धमकाय निरख तारा भय पाई ॥ पादपद्मसो गिरी नयनसो नीर बहाई ॥ भये खासासिंह राम प्रहंसो शिरनाए ॥ कीना प्रभुको तुष्ट नारि मन्दिरमो लाए ॥ २२२२ ॥

अथ श्रीसीतादेवी उद्धारनार्थ कटक सञ्चय ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्वर्णघाटकी मध्यमो लक्ष्मणको तिहाय ॥ राजा रावी जोड़की भये पाणि शिरनाय ॥ भये पाणि शिर नाय राम विष्णू अवतारा ॥ धार प्रभोका कौन विघ्न मे बोधन हारा ॥ सीताका उद्धार नाथ वह आप करावैं ॥ मे सेवक हौं भक्त प्रभो भक्तत्व बजावैं ॥ २२२३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

और प्रभो पशुजाति हमारी ॥ तापर मिली राज अरु नारी ॥ राग रङ्गमो दिवस कटाए ॥ प्रभो कार्य्य मे भूल रहाए ॥ २२२४ ॥ सुरनर मुनि नारी सुख पाई ॥ भूलें इष्टदेव पितु माई ॥ मे तो अधम जन्तु कहिलावैं ॥ तव मायावस नाथ भुलावैं ॥ २२२५ ॥ अव चैतन्य कीन रघुराई ॥ सुख सम्पत सुत नारि भुलाई ॥ क्षमा करी मुझपर रघुनाथं ॥ शासन तव करि हौं धरि माथं ॥ २२२६ ॥ सुनत वचन लक्ष्मण हरखाए ॥ धरि नृपको निज कण्ठ लगाए ॥ और भये तिनको समुझाई ॥ तुम अभिमत पुण्य जनी भाई

॥ २२२७ ॥ तातै उचित मुझे नहि ऐसा ॥ वचन कठोर कहा मे जैसा ॥ तब सुग्रीव भये सिरनाई ॥ नाटक एकाब करैं रघुराई ॥ २२२८ ॥ ससभय पवन पुत्रको भाषैं ॥ चनुचरको आकारि चस भाखैं ॥ मर्कट देश देश मे जोई ॥ आवैं दिवस दीक मे सोई ॥२२२९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत वचन हनुमन्त तब चर सबको बुलवाय ॥ देश देश युग चोर मे दोना चीघ्र पठाय ॥ दोना चीघ्र पठाय दूत पूरबको धाये ॥ पश्चिम उत्तर चोर कोय दच्छिणको चाये ॥ देश देशकी चोच कोय जितने जो पावैं ॥ सब करते सत्कार निरखि मङ्गल सुर गावैं ॥ २२३०॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

चतुर्हील सुग्रीव मगाई ॥ तापर लक्ष्मणको बैठाई ॥ मर्कट चमर शीर्षमो फेरे ॥ सङ्ग बलय चलते सब घेरे ॥२२३१॥ वाजन सर्व बाजने लागे ॥ लखि सुर मुनि हर्वैं बड़ भागे ॥ माल्यवान निकटे जब चावै ॥ उतरे चतुर्हीलते राये ॥२२३२॥ सुन कचरव राघव हरखावैं ॥ भये मित्र भेटनको चावैं ॥ पहुंचे माल्यवान पर जाई ॥ देख प्रभो चति हर्ष बढ़ाई ॥२२३३॥ वन्दैं भूप चरण शिरनाये ॥ लोन प्रभो निज

आराठ लगाये ॥ पूछें रामचन्द्र हर्षाई ॥ कहो मित्र अपनी कुशलाई ॥२२३४॥ पाणिजोड़ सुग्रीव अलायं ॥ कुशल दया तुमरी रघुरायं ॥ लीना प्रभो निकट बैठाई ॥ पुन सुग्रीव भयो शिरनाई ॥ २२३५ ॥ तब मायावस नाथ भुलाये ॥ निश बासर ले नार रहाये ॥ सुख सम्पति पाकि रघुराई ॥ चरण कमल तब त्याग कराई ॥ २२३६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अब मुझको वर देहु अब कृपा सिन्धु रघुराय ॥ चरण कमल बिसरैं नहीं जब लौ गात रहाय ॥ जब लौ गात रहाय प्रभो भाषैं हरषाई ॥ आप भरतसे अधिक प्रीय मेरे हो भाई ॥ भणे खालसासिंह सुनत कपिधव हरषाये ॥ लै लै कोश असङ्ख दूत बासर दिस आये ॥ २२३७ ॥

अथ श्रीसीतादेवी अन्वेषणार्थ सकटक विनोद सेनापतीको पूर्व दिशा प्रेरण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीराघव अब देखके मनमो करैं विचार ॥ श्वेत नील अरु रक्त हैं पीतवर्ण चितकार ॥ पीतवर्ण

चितकार देख सुग्रीव भजाए ॥ असङ्क कीश सब रङ्ग मित्र द्वारे पर आये ॥ सीताके उद्देश प्रभो युग ओर पठावैं ॥ भखे विधी हरि जौन सखा सब आप करावैं ॥ २२३८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन कपीश रघुनाथ मनाए ॥ सेनापती विनोद बुलाए ॥ तिनको भखै खूब समुझाई ॥ राम काज मम तात सहाई ॥ २२३९ ॥ करो आप पूरवको जाए ॥ सङ्ग बलय तब कोट सिधाए ॥ भखै विनोद जोड़ निज पाखी ॥ करि हौं यत्न प्राण लौ ठाखी ॥ २२४० ॥ देहु महीप मोहि बतलाये ॥ कहां कहां खोजौं मै जाये ॥ तब सुग्रीव भखै समुझाई । गङ्गा सरयू यमुना माई ॥ २२४१॥ टप टप जाव कौशिकी पारा ॥ और गोमती शारद धारा ॥ शोणभद्र आदिक नदनाला ॥ मिलि है कोट कोट बन काला ॥ २२४२ ॥ यह सब पट मन्दर धर जाओ ॥ तथा किरात देशको पाओ ॥ किरात देश नरकूप अनूपा ॥ स्वर्ण वर्ण तन सुख तमरूपा ॥ २२४३ ॥ चन्द्रचरण अपकी हैं वासी ॥ नर अहार बल अतुल प्रकाशी ॥ तिनसे सावधान हो भाई ॥ ऋषभ गिरी खोजौ पुन जाई ॥ २२४४॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सर्ब्ब काल वह शैल पर करैं पुरन्दर केलि ॥ वहां तत्व भल कीजिए वृक्ष लताको ठेलि ॥ वृक्ष लताको ठेलि वहीं सीता नहि पावैं ॥ तिसके पूरब और क्षीर सागर तट जावैं ॥ श्वेत गिरी है चन्द्र सिन्धुके ऊपर भाई ॥ श्वेत नाग हैं तहां फणीश सहस्र धराई ॥ २२४५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

फणि सहस्र पर शीश हजारा ॥ और मणी फण फणमो मारा ॥ तिन सबको वन्दन करि भाई ॥ शैल उभय खोजो पुन जाई ॥ २२४६ ॥ स्वर्णताल पादप उत पाओ ॥ तहां तत्व युग और कराओ ॥ यद्यपि तव सिया नहि पावैं ॥ कालोदक पर्ब्बत पर जावैं ॥२२४७॥ श्याम उदक यावनमो पाओ॥ सर्प्प करोड़न देख डराओ ॥ सावधान हो करि उत भाई ॥ करि हौ तत्त्व जानकी माई ॥ २२४८ ॥ यद्यति तव मात नहि पावैं ॥ धर लोहित प्रस्थान करावैं ॥ वहां प्रियोजन नहि है भाई ॥ पूरब लोहित सिन्धु रहाई ॥ २२४९ ॥ रक्त कमल सागरको पावैं ॥ स्वर्ण वृक्ष तट माहि लखावैं ॥ पादप नाम शिमूलि कहाये ॥ खपते यातु कोट नित आये ॥ २२५० ॥ केलि करैं

तरुपर चढ़ि भाई ॥ धरि धरि जीव जन्तु सब खाई ॥
तिनसे सावधान ह्वै जाओ ॥ पुर्व्व सिन्धुकी ओर
सिधाओ ॥ २२५१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

द्वादश योजन पाट है सरित कान्तकी कूद ॥
उदयाचलकी बीचमो खोजौ तरु तरु जूद ॥ खोजौ
तरु तरु जूद सियाको तत्त्व न पाओ ॥ मास चन्द्रकी
बीच लौटकै खबर जनाओ ॥ भर्णै खाजसासिंह इष्ट
गुरु देव मनाए ॥ लै विनोद निज फौज दिशा पूरबको
धाये ॥ २२५२ ॥

अथ श्रीमतीसीतादेवी अन्वेषणार्थ ससैन्य सुषेण सेनापतीको पश्चिमदिशाको प्रेरण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सेनापती विनोदको पुर्व्व दिशा पठवाय ॥ कान्त
अनीक सुषेणको लीना भूप बुलाय ॥ लीना भूप
बुलाय भर्णै तिनको समुझाई ॥ तत्त्व करौ तुम

जाय दिशा पश्चिमको भाई ॥ जोड़ पाणि सुषेण भयो नृपको समुझाए ॥ खोज करौं मै कहां नाथ सो देहु बताए ॥ २२५३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब ताको सुग्रीव बतावैं ॥ सिन्धुदेश मलयापुर जावैं ॥ कावेरी नदिकि तट भाई ॥ खोजौ जनक सुताको जाई ॥ २२५४॥ यद्यपि वहां मात नहि पावैं ॥ क्रिमी जीवकि देश सिधावैं ॥ तथा निरखि ङिङ्गुलिधर जाओ ॥ तब तत्त्व भल भांति कराओ ॥ २२५५ ॥ ग्रावनकी पूरब दिश भाई ॥ सिन्धु नामि नदिकि तट जाई ॥ अन्वेषण युग ओर करावैं ॥ यद्यपि मात तब नहि पावैं ॥ २२५६॥ ङिङ्गुलिकि पश्चिम पुन भाई ॥ खोजौ सरित कान्त तट जाई ॥ यद्यपि वहां मात नहि पावैं ॥ चन्द्रवान ग्रावन पुन जावैं ॥ २२५७॥ तबभूमि का खोज कराई ॥ पहुचो चक्रवाड़ गिरि जाई ॥ जहां असुर हय ग्रीव खपाए ॥ विष्णुचक्र निज त्यार कराए ॥ २२५८॥ चक्रचरण वन्दन कर भाई ॥ खोजै मही पुविका जाई ॥ यदी वहां कछु तत्त्व न पाओ ॥ गिरि वराह प्रस्थान कराओ ॥ २२५९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गिरि वराहकी मध्यमो वरुण करतु हैं वास ॥

नरक नाम भू यातुहैं सखा वरुणकी पास ॥ सखा वरुणकी पास खोज याचनको भाई ॥ गिरि सुमेरुकी बीच तत्त्व कीजे पुन आई ॥ भये खालसासिंह मासकी भीतर आवैं ॥ ले सुषण निज वलय दिशा पश्चिमको जावैं ॥ २२६० ॥

अथ श्रीमतीसीतादेवी अन्वेषनार्थ ससैन्य शतवली सेनापतीको उत्तरदिशा प्रेरण।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सेना कान्त सुषेणको पश्चिम ओर पठाय ॥ सतीवली पृतना पती लीना भूप वुलाय ॥ लीना भूप वुलाय खूब तिनको समुझाये ॥ खोज करो तुम तात दिशा उत्तरको जाये ॥ भये जोड़ शतवली पाणि पद्मो शिरनाई ॥ कही कहां लौ तत्त्व प्रभो करि हौं मै आई ॥ २२६१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब सुग्रीव तिन्हें बतलावैं ॥ प्रथम देश बर्बरमो जावें ॥ उतरहि खोज जानकी माई ॥ खोजी शैल

हिमालय आई ॥ २२६२ ॥ यद्यपि तबै तत्त्व नहि पाश्रो ॥ धर कैलास विषै पुन जाश्रो ॥ गौरी शङ्कर का करि पूजा ॥ अलका नाम पुरी पुन दूजा ॥२२६३॥ तहां तत्त्व कीजो भल भाई ॥ जहां कुबेर धनेश रहाई ॥ विमला नाम नदी उत पाश्रो ॥ उनकी तट पख खोज कराश्रो ॥ २२६४ ॥ यद्यपि वहां मात नहि पावैं ॥ तब त्रिशृङ्ग शैलपर जावैं ॥ तब निरखि उत्तर पुन जाश्रो ॥ यत्र स्वर्ण जम्बू तरु पाश्रो ॥ २२६५ ॥ ताकी कथा मैं सुयश चलावैं ॥ जाते जम्बूद्वीप कहावैं ॥ तहां देख प्रस्थान कराश्रो ॥ उत्तर सिन्धु महेश सिधाश्रो ॥ २२६६ ॥ महेश सिन्धुके भीतर भाई ॥ अस्ताचल ग्रावन पर आई ॥ भौमलिङ्ग दर्शन उत पाश्रो ॥ करि वन्दन धर तत्त्व कराश्रो ॥ २२६७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यद्यपि वहां न पावोगे सीताका उद्देश ॥ क्रौञ्च गिरी रखि वाम दिश करो द्रोण परवेश ॥ करो द्रोण परवेश अनन्त सिन्धु पुन जाश्रो ॥ तब तत्त्व करि खूब हेम गिरि तत्त्व कराश्रो ॥ अधै खासमासिंह मास भीतरमो श्रावैं ॥ शतबलि के निज कटक दिशा उत्तरको जावैं ॥ २२६८ ॥

अथ श्रीमतीसीतादेवी अन्वेषणार्थ ससैन्य पञ्चसेनापि को दक्षिणादिशा प्रेरणा।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शतबलिको उत्तरदिशा भेज भूप हरषाय॥ पञ्चद औ नल नीलको हनूमान बुलवाय॥ हनूमान बुलवाय और मन्त्रीको लाई॥ ज्ञाती जाम्बुवान रहे तिनको समुझाई॥ कही तात उपकार आप दक्षिण दिश जाये॥ लै लै चारि निज फौज आव भट तत्त्व कराये॥२२६९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जाम्बुवान कर जोड़ सुनावैं॥ प्राण रहत सो तत्त्व करावैं॥ कहो भूप मुझको समुझाई॥ जाना पड़े कहां लो भाई॥२२७०॥ तब सुग्रीव तिन्हे बतलावैं॥ प्रथम कृष्णवेणी तट जावैं॥ पुन नर्म्मदा गोदावरि भाई॥ ऋष्यमुखो गिर तत्त्व कराई॥२२७१॥ कावेरी सरिता तट जाओ॥ विन्ध्यागिरि भल तत्व कराओ॥ कलिङ्गदेश उत्कल बतलावैं॥ तब निरखि मलयागिरि जावैं॥२२७२॥ वहां तत्व करिके भल भाई॥ गिरि महेन्द्र देखो पुन जाई॥ तब यदी सीता नहि

पावैं ॥ दक्षिण लवनसिन्धु पुन जावैं ॥ २२७३ ॥ ताको कूद लक्ष्मो भाई ॥ खोजो खूब जानकी माई ॥ तब यहीं सीता नहि पायो ॥ उतसे लौट आप पुन आयो ॥२२७४॥ नामक रूपभ शैल पर जाई ॥ करि हो तत्व जानकी माई ॥ तब यही सीता नहि पायो ॥ श्रमन भवन प्रस्थान करायो ॥ २२७५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रमन भवनको खोजके मिलौ तात भट आय ॥ जनकसुताकी तत्वको मास चन्द्रमो लाय ॥ मास चन्द्रमो लाय पवन सुत हर्ष अलवैं ॥ मुंदरी प्रभुकी देहु मात परतीत करावैं ॥ भयो खानसासिंह प्रभो अंगुरोट दीना ॥ लै लै करि निज कटक सबै दक्षिण मग लीना ॥ २२७६ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका खेद ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

इह प्रकार सुग्रीवने भेजि वरूथ युग ओर ॥ वास करै वह शैल पर प्रीत प्रेमकी जोर ॥ प्रीत प्रेमकी जोर प्रभो पूछैं मुसकाई ॥ कहो मित्र यह

तत्व आप कैसे सब पाई ॥ भणे जोड़ सुग्रीव पाणि पदमो शिरनाये ॥ बालि त्रासते नाथ भ्रमण युग चोर कराये ॥ २२७७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सिन्धु हीतमो बालि सिधावैं ॥ चुन चुन रुपु यम लोक पठावैं ॥ ताते त्रास पाय रघुराई ॥ भ्रमण कीन युग चोर सिधाई ॥ २२७८ ॥ यद्यपि तत्व भ्रात मम पावैं ॥ तत्तकाल यमलोक पठावैं ॥ तिहं कारण इत उत रघुराई ॥ भ्रमण करत निज जन्म गमाई ॥२२७९॥ ऋष्यमूक ऋषि शाप चलाए ॥ तबते गिरिपर वास कराए ॥ कृपासिन्धु जब कृपा कराई ॥ सुख सम्पति पत्नी तब पाई ॥ २२८० ॥ किष्किन्ध्याकी भूप कहावैं ॥ निशवासर तव यश प्रभु गावै ॥ शुनत हाल राघव हरषाये ॥ मास मही पूरण हो आये ॥ २२८१ ॥ पूर्व दिशाको तत्व कराई ॥ पहुंचे चौर सर्व्व वह आई ॥ पाणिजोड़ सब हाल जनाए ॥ खोज थकी सीता नहि पाए ॥ २२८२॥ शुन राघव रोवै कलपाई ॥ पश्चिमते पहुंचे दल आई ॥ पूरबकी सम हाल जनाए ॥ ताते नाथ चौर घवड़ाए ॥ २२८३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लक्ष्मण सौ सुग्रीव कर जोड़ भणे समुझाय ॥

बीर प्रभी पवन बीर मैं मिलैं जानकी माय ॥ मिलै जानकी माय कटक उत्तरते आये ॥ उनका भी तस हाल श्रवण करि होश हराये ॥ भयो खालसासिंह भूप प्रभुको समुझावें ॥ अवश्य मातको तत्व प्रभो दक्षिणते आवें ॥ २२८४ ॥

अथ पवनबीर ससैन्य अधोभू प्रवेश ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

दिश लोचन निस्फल भयो राम चरण चितलाय ॥ दक्षिण दिश खोजत फिरैं कटक सहित युवराय ॥ कटक सहित युवराय नदी यावन बन जाई ॥ बिन्ध्या धरकी मध्य तत्व युग घोर कराई ॥ मास गयो है बीत कीश सीता नहि पाए ॥ जामवन्तको भयो कलप अङ्गद भय पाए ॥ २२८५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

प्राण जाय निश्चय मम भाई ॥ सीताकी उद्देश न पाई ॥ जौन ज्येष्ठ भ्राताकी घाए ॥ तिनको वथा मम प्राण नशाए ॥ २२८६ ॥ जनक तुल्य पुर्वज हैं भाई ॥ ताको राज लोभ जो घाई ॥ सो क्या मुझपर क्षमा करावैं ॥ मम बध कारण युक्ति रचावैं ॥२२८७॥ असमंध कलपि कलपि युवराई ॥ तत्व करैं इत उत

घबड़ाई ॥ चन्द्र सुरज देख वन पाए ॥ ताके मध्य कोश सर्व थाए ॥ २२८८ ॥ वहां पथो भूखमो जाई ॥ सघन निरखि स्वर्णमय पाई ॥ कन्दमूल फल फूल अपारा ॥ कन्या सुन्दर गेह मझारा ॥ २२८९ ॥ कनक पलङ्ग पर शयन करावैं ॥ सुर नर मुनि लखि रूप भुलावैं ॥ तिनके निकट जाय सब कोशा ॥ पूछैं चरण नाय करि शीसा ॥२२९०॥ को तुम मात कहो समुझाई ॥ कन्या निज परिचय बतलाई ॥ गिरि सुमेरु मम जनक कहावैं ॥ सम्भरा नाम मम जनक रखावैं ॥ २२९१ ॥ मयदानवको पुर यह भाई ॥ जाको हेमा नारि रहाई ॥ हेमा सखीरूस मम भागे ॥ तिनकी तत्व हेत वह लागे ॥ २२९२ ॥ सखी हेतु यह पुर मैं आवैं ॥ निज परिचय कपिवर बतलावैं ॥ तब हनुमन्त भणे शिरनाए ॥ रामचन्द्र दशरथके जाये ॥ २२९३ ॥ लै दारानुज कानन आवैं ॥ सुपर्नखाकी घ्राण नशावैं ॥ ताते रावण कोप कराई ॥ लै सीता रखि दीन चुराई ॥ २२९४ ॥ सखा प्रभो सुग्रीव बनाए ॥ वालीको यम लोक पठाए ॥ सीताकी खोजनको भाई ॥ हम सबको रघुनाथ पठाई ॥ २२९५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन राघवके नामको नारि भणे करजोर ॥ भवन

नयनकी नाथ हैं रामचन्द्र कपितोर ॥ रामचन्द्र कपि तोर दुष्ट पक्षप जब पाए ॥ तुम लोगनको देख घातु करि धरि बह खाए ॥ भये खालसासिंह नारि कर-जोड़ि मनावैं ॥ कन्दमूल बन खाय शीघ्र प्रस्थान करावैं ॥ २२९६ ॥

अथ श्रीरामायणजी श्रवण करणेसे सम्पाती पक्षीका पक्षोदय।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कन्दमूल सब खायके कीन कटक प्रस्थान ॥ बन उपवन सब खोजके करे सिन्धुमे स्नान ॥ करैं सिन्धुमे स्नान जानकी को नहि पाये ॥ विन्ध्याधर पर तिष्ट भये अङ्गद कलपाये ॥ प्राण जाय मम सत्य नही इसमो कछु बाधा ॥ जनक मार मम राम काज अपना क्या साधा ॥ २२९७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जो रघुनाथ जनकको भाई ॥ देते भार सियाका जाई ॥ तो काहे इतनो दुःख पावैं ॥ अबतो ले सीता गृह जावैं ॥२२९८॥ रावणको दुमति धरि भाई ॥ जनक लाय देते झट जाई ॥ सुन हनुमान भये समुझाए ॥

क्यों सुग्रीव आप चलङ्ग ए ॥ २२९९॥ रामकाज निज आप करावैं ॥ केवल सुयश अयश जिव पावैं ॥ हम लोगन क्या कारज सवाऊं ॥ राम नाम रट कुशम वजाऊ ॥ २३०० ॥ प्रभो कार्य्य निज आप सम्हारैं ॥ केवल सेवक सिर विचारे ॥ करि रण वीर जटायू भाई ॥ राम काज लगि प्राण हराई ॥२३०१॥ जितनहुं लङ्केश्वर समुझाए ॥ पर कारण क्यों प्राण गमाये ॥ तदपि शकुनि शुन्यो नहि काना ॥ राम काज मरणा भल जाना ॥ २३०२ ॥ शुनि सम्पाति गुहाते भाखैं ॥ कौन मरण सोदरका भाखैं ॥ निकट आय बोली समुझाए ॥ को तुम तात कहाते आए ॥ २३०३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन खग वानी वचनको कीश भये सब धाय ॥ उदर भरणकी विधि भली कीना बात वनाय ॥ कीना बात वनाय भये पविन समुझाई ॥ विश्वासघात नहि करौ मर्कं मे सत्य कराई ॥ तव अङ्गद हनुमन्त जाय चरणजको लाए ॥ मर्कटगणको मध्य दीन ताको तिराए ॥ २३०४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तिनको पुन अङ्गद वतलावैं ॥ जौन तरे खग प्राण हरावैं ॥ शुन विष्फिर वहुता कलपाई ॥ रोवत

हाहाकार कराई ॥ २३०५ ॥ देखि विकल अद्भुत
अनुमाना ॥ बचन प्रबोध भये बिधि नाना ॥ लावे द्विज
निज शोक नशाय ॥ पौर कथा निज भाख सुनाय
॥ २३०६ ॥ कहहु पुत्र हम से पख भाई ॥ वासर भू
यह सत्य कराई ॥ कौन दिवाकर पर्स करावैं ॥ कौन
वीर जग माहि कहावैं ॥ २३०७ ॥ अस कहि पख
धाता छड़ भाई ॥ सुर्य्यं निकट पहुचे झट जाई ॥
अरुण बिन तनको जब लागे ॥ विकल होय पवरज
तब भागे ॥ २३०८ ॥ मै पहुंचे भास्कर ढिग जाई ॥
गिरे शैल पर पक्ष जलाई ॥ चन्द्र नाम मुनिवर तब
पाये ॥ ध्यान धारि मुझको बतलाये ॥२३०९॥ प्रापो
पर अपनो खगराई ॥ अब्द पचास बीत जब जाई ॥
धरि गोविन्द मनुज अवतारा ॥ क्रीड़ा करैं विपिन
फिर सारा ॥ २३१० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रभुकी जाया जानकी रावण हर लै जाय ॥
तिनकी खोजन कारणे फिरैं कपी घबड़ाय ॥ फिरैं
कपी घबड़ाय आप तिनको बतलावैं ॥ सीताको सब
हाल तत्व जाने बह पावैं ॥ सुन तिनसे करि विनय
सुनौ रामायण भाई ॥ तत्तकाल पर उदय तोर होवै
खग राई ॥ २३११ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सो मै राम काज कपि करि हौ ॥ सुन प्रभु यश
कौतुक पर धरि हौ ॥ प्रथम कह्यो रामायण गाई ॥
तौ सीता मै देहुं बताई ॥ २२१२ ॥ सुन सब कीश
अद्भुत बरनाए ॥ रामायण हनुमन्त सुनाए ॥ सुनत
कथा आनन्द घर लागी ॥ धन्य कौन पूरब बड़ भागी
॥ २२१३ ॥ उदय भये विधिकर्मी पाखा ॥ सर्व नाय
कपिन थिर भाखा ॥ सागर पार त्रिकुट गिर आई ॥
तापर है लङ्का दुख दाई ॥ २२१४ ॥ तीन अशोक
विपिन है नामा ॥ तह जानकी हैं शुभ धामा ॥
तुमको निरख परै नहि भई ॥ मै हौं गीध योनि
लखि पाई ॥ २२१५ ॥ कूद कीश लङ्कापुर जायो ॥
कौन शोच मन माहि करायो ॥ जाको रट भवसागर
पारा ॥ जावें जीव जन्तु सुन प्यारा ॥२२१६॥ ताको दूत
होय तुम भाई ॥ लवन सिन्धु तुछ लखि भय पाई ॥
असभय कोट कोट समुझाए ॥ कै पाहार ताकि सुत
आए ॥ २२१७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देख विकट आकारको मर्कट सब भग पाय ॥
सम्पातीकी पाङ्मो छिपै दौड़की जाय ॥ छिपै दौड़की
जाय विगह सुतको धमकावैं ॥ हे सुपार्श्व क्या करौ

वैग पदमो शिर नावैं ॥ भये खालसासिंह पुत्र प्रणिपात कराए ॥ भये विदा खगराज प्रवगको माथ निवाए ॥ २२१८ ॥

॥ समया छन्द ॥

गुरु नानक देव सहाय भये पत्र भीतर कीट रच्यो मन लाई ॥ मन चञ्चलको थिर कौन करै प्रभु नाम बिना जगमो यह भाई ॥ जप नाम सदा मन वाहि गुरू सुम कौन तुझे भवसिन्धु तराई ॥ सति नाम बिना कविसिंह गहीं यमराजकने तुमरो छुटकाई ॥२२१९॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वाहिगुरू पदपद्मको करि बन्दन सखवार ॥ किष्किन्ध्या पूरण कह्यो रामचन्द्र उरधार ॥ रामचन्द्र उरधार सन्त पदमो शिरनाईं ॥ करि बन्दन सब तीर्थ और सब अमर मनाईं ॥ भये खालसासिंह पितृपदमो शिरनाए ॥ ग्रन्थ करो सम्पूर्ण प्रभो अब होय सहाए ॥ २२२० ॥

इति खालसा कृत रामायणे चतुर्थ सोपान किष्किन्ध्या काण्डमभि समाप्तः ॥

॥ एक ओंकार सत्य गुरु प्रसाद ॥

॥ श्रीवाहि गुरूजीकी फते है ॥

अथ सुन्दराकाण्डमभि लिख्यते ।

श्लोक ।

नमो ब्रह्मानानकाय ॥ नमः शङ्कररूपिणे ॥ नमस्तुभ्यं महादेव ॥ नमस्ते रुद्र रूपिणे ॥२३२१॥ नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष ॥ नमस्तुभ्यं कपर्द्दिने ॥ नमस्ते व्योमकेशाय ॥ नमः वृषानुरेतसे ॥ २३२२ ॥ नमस्ते सितिकण्ठाय ॥ नमस्तुभ्यं पिणाकिने ॥ नमो वै वामदेवाय ॥ नमः शम्भोवृषध्वज ॥२३२३॥ नमस्ते भीमरूपाय ॥ नमस्ते बभ्रकाय च ॥ नमस्ते देवदेवेश ॥ नमस्ते पर्व्वतेश्वर ॥२३२४॥ नमो नील लोहिताक्ष ॥ नमो हैमवतीश्वर ॥ नमस्तुभ्यं क्रतुध्वंसिन ॥ नमस्ते त्रिपुरान्तक ॥२३२५॥

अथ बारहमासी ।

॥ दोहरा ॥

गुरू नानक पदपद्मको अर्चं वड़ा वैशाख ॥
लिखैं खालसा प्रेमसे गुरुचरणामृत चाख ॥ २३२६ ॥

॥ गजल ॥

वैशाखमो गर्म्मी पड़े क्या शोर है जाने किया ॥ हर-
मुल्कमो कूये अजब दरिया वहा गर्मी का दिया

॥१३२७॥ हम खौफसे गुरुदेव बालम शोच यह दिन रात है ॥ आकर कजा घेरे नहीं सति नाम तेरा ना लिया ॥ २३२८॥ मरनेसे बन्देको नहीं कुछ खौफ है ऐ सद्गुरू॥ यह ग्रन्थ लीला रामका। जब तक न पूरा हो पिया ॥२३२९॥ पौरुष हमारे थक् गये औ चश्म धुंध आने लगे ॥ यह ग्रन्थ पूरण कीजिये उज्जल हमारा कर दिया ॥ २३३० ॥ दुशमन् जो मेरा क्रोध है उसने मुझे बरबाद कर ॥ दुनियांसे मुझको गुम किया खुश नामको छोया छिया ॥ २३३१ ॥

॥ दोहरा ॥

वैशाख कहे यह ग्रन्थको पूरण अगले मास ॥
बैठि रहो मति बावरे प्रभौ पुरावैं आस ॥२३३२॥

॥ गजल ॥

कहने लगा वैशाख मुझको क्यों मुझे बद नाम कर ॥ जो हमारे अमलमे भजता प्रभोको ध्यान धर ॥२३३३॥ आव हलुषा नान जो देता गरीबोंको तई ॥ देते वहिश्त उनको लिये सौ सौ गुणःको माफ कर ॥ २३३४ ॥ करता जो पापी पापको मेरे अमलके बीचमे ॥ उसको मै देता एकको सौ सौ सजा यमसे जबर ॥ २३३५ ॥ शुनकर मुझे यह बातको आने लगी शरमिन्दगी ॥ चुपका मैं हो करके रहा सद्गुरुके

पद्का ध्यान धर ॥ २३३६ ॥ कहने लगा वैशाख फिर जाता हूं शुभ के मावरे ॥ अब ज्येष्ठको शरणी परी कल छिद्रको सब छोड़कर ॥ २३३७ ॥

॥ दोहरा ॥

ज्येष्ठ जटा यत धारिकै सति गुरु चरण मनाय ॥
धन्य रचौंगे खालसा होवैं नाथ सहाय ॥ २३३८ ॥

॥ कवियात् ॥

जेठमो तपने लगे गुरुदेव आशके जिगर ॥ फोले कलेजेमो पड़े तड़फे ज्यों मछली जल विगर ॥२३३९॥ दुनियांके सब माशूक हैं वेदर्द जालिम्बिष भरे ॥ यह जानके गुरुदेव सरणी आयकै तेरे परे ॥ २३४० ॥ सो आप भी दुख घोर देनेको लगे मुझको शनम् ॥ अब जल्द दर्शन दीजिये जाता विता मेरा जनम् ॥ २३४१ ॥ जेठमो जितनी सोहागन् शाथ ले पति सोवती ॥ मै तुमारे दर्शको दिन रात वैठी रोवती ॥ २३४२ ॥ शन्दल अगर चोआ चमेली मलवटन् केशर कली ॥ ले ले लगाने कन्तको फिरती सोहागन् दरगली ॥ २३४३ ॥

॥ दोहरा ॥

ज्येष्ठ भये शुन खालसा उनको है वड़ भाग ॥
निशवासर चितकै विषे प्रीत रही है जाग ॥ २३४४ ॥

॥ अवियात् ॥

उठ समुझा कर कहे तुझपर पियाका मार है ॥ तूं क्यों न करती प्रीति साची नेगका ज्यों वाद है ॥ २३४५ ॥ भर भागमे रंग नामका दिलदारको तूं याद कर ॥ शायेद करम करके तुझे लेवें बुला चुम-कार कर ॥ २३४६ ॥ शुनकर य बातें जेठकी मज्मो तशवी हो रही ॥ अब वैर बाधा कोकिलोंने क्या मुझे दुख दे रही ॥२३४७॥ मत बोल बोलो कोकिलो अब तक शजन् मिलते नहीं ॥ शुनकर छठीली और भी दूना गुरचनेको लगी ॥ २३४८ ॥ हाय किश्मत् क्या करूं लाचार तेरे रेखसे ॥ आषाढ़ भी आकर मिला क्या जल्द मुझको पेंचसे ॥ २३४९ ॥

॥ दोहरा ॥

जेठ कहे मैभी चले कशोन करूं उपाय ॥ अवसरकी आषाढ़की पड़ो खालसा जाय ॥ २३५० ॥

॥ अवियात् ॥

आषाढ़मो ले ले सोहागन कन्तको सब गाजती ॥ विजली कड़कती देखके ले ले सजनको भाजती ॥ २३५१ ॥ घेर ली काली घटा लट्मो पिया लटका लिया ॥ लवसे लवोंको जोड़के शीरी मोहब्बतका पिया ॥ २३५२ ॥ तेरे जुदाई से शनम् मेरा जिगर

टुकड़े हुआ ॥ अब देर बाकी मौत की है हाय किसमत् क्या हुआ ॥ २३५३॥ मत बार उठ तूं बोल कोयिल् पीविना लोचन भड़े ॥ जिन्को न काटे इस्कको उनको बलाएं शिर पड़े ॥ २३५४ ॥ शुन्कर हमारे गमको रोनेको। कहा आषाढ़ने ॥ किसमत्मे तेरे जो लिखा सो क्या सकेगी फाड़ने ॥ २३५५ ॥

॥ दोहरा ॥

आषाढ़ भणे शुन खालमा सति गुरु दीन दयाल ॥
मुझको दोष न दीजियो क्यों न मिलें गोपाल ॥
॥ २२५६ ॥

॥ अवियात् ॥

आषाढ़ समझाने लगा तुझ पर प्रभोकी प्यार थी ॥ चाहते थे वे तुझे तुझको न उनकी चाहथी ॥ २३५७ ॥ अब देखकी तूं हिर्स करती है पती बरताओंका ॥ तबतो रही मगरुरमे तू जब सजनका प्यार था ॥ २३५८ ॥ शुन अरे नादान तूने क्रोध करके क्या किया ॥ दस्तसे यश खो दिया सामान अपयशका किया ॥ २३५९ ॥ अब समझ आई तुझे रो रोके फिरती बावरी ॥ किसमत्का तेरे दोष है अब फिरसे बार तूं भावरी ॥२३६०॥ जब तक कि

तनमें प्राण है तब तक सजनकी आस है ॥ कभी तो होवेगा करम जिनको पियाका प्यास है ॥२३६१॥

॥ दोहरा ॥

आवण बादल गगणमें गर्जं गर्जवे गौर ॥
वर्षत हैं युग चोरमें शीतल होय शरीर ॥ २३६२ ॥

॥ मुरव्वेयात् ॥

आवण अजव्वाहार है ले ले सजनको साथमे ॥ प्रीतकी डोरी बना झूलें हिंडोला बागमे ॥ मै तुमारे दर्शको दिल्दार प्रीतम आगमे ॥ जल्ती हूं मारा इश्कका तन खाक हूंआ रावमे ॥ २३६३ ॥ मैं छोड़ न्यामत् औरका खुश हूं तुमारे शागमे ॥ विधिने मुझे तुमको दिया लिख कर हमारे भागमे ॥ आप चाहें काट डालें शिर तुमारे हाथमे ॥ चाहे करम करके मुझे रख लें अपाने साथमे ॥ २३६४ ॥ जादू मे तेरे वश करणको खोजती हरदेशमे ॥ पाया मै वसका मन्त्र तेरा नाम प्रभु सब भेषमे ॥ अब नहीं मुझसे निकलने पावोगे हो हाथमे ॥ खूब मुझको ठग रहे थे अब रखूंगी साथमे ॥ २३६५ ॥

॥ दोहरा ॥

श्रावन कहे सुन खालसा वशीकरणको मन्त्र ॥ वाहि गुरुका नाम है प्रीति जिगरको तन्त्र ॥ २३६६ ॥

॥ मुखम्मस ॥

श्रावन कहा फिर बावरी क्या सोचती दिन रात है ॥ जप नाम अपने कन्त का सच्चीकी जैसी बात है ॥ सारेह करम होवे कभी माशूक की यह कार है ॥ करता किसिको खुश कभी देता किसीको मार है ॥ २३६७ ॥ जल बरसनेको लगा वन कोकिलां कोहलात हैं ॥ जिसपर पियाकी प्यार है सो तीज खेलन जात हैं ॥ पर्व आया पञ्चमीका पूजना सब नाग है ॥ लाज सजनको खोजकी मिलना बड़ा यह भाग है ॥ २३६८ ॥ वट प्रीत होगी दूससे बांधूं उसे जो यार हैं ॥ ला करके भरूं नागकी जिसपर वे करते प्यार हैं ॥ फिर कहां य पर्व मिलना जिन्दगीके हाथ हैं ॥ अबतो लाहा लूट ले तूं पी तुमारे साथ हैं ॥ २३६९ ॥

॥ दोहरा ॥

श्रावन आवन कह गये भादो निश अंधियार ॥
तिनकी विनती जा करो मिलें खालसा यार ॥२३७०॥

॥ अरियाल ॥

भादोंमे जादों मिलनकी अब मन्मे मेरे आश है ॥ जिस देश मेरा पी गया वह देश मेरा खास है ॥ २३७१ ॥ नन्दके नन्दन भये उस ग्रामको बन्दन

किया ॥ हित प्रेम डोरी बांधके चोरी दधी गोरसकिया ॥ २३७१ ॥ क्या खूब लीला रासका प्रभुने किया ब्रजमें बिखे ॥ जितनी थीं गोपी कृष्ण भी तेतने भये कवि क्या लिखे ॥ २३७२ ॥ प्रभु मार केशी कंसको सब भक्तका रक्षा किया ॥ क्या कूजको हरके हरी खुश रूप कुब्जाको दिया ॥ २३७४ ॥ सब छोड़ न्यामत भूपका प्रभुभक्तके घर मौजसे ॥ लेशाकगोटी छोरके खाया विदुरका मौजसे ॥ २३७५ ॥

॥ दोहरा ॥

भादोंकी अधियार निश महा पियारी लाग ॥ रिली खालसाको हरी भाग उठी है जाग ॥ २३७६ ॥

॥ अबियात ॥

भादो भये शुन बावरे मैंने तुझे आगाहकी ॥ तूंने भी अपने जानको श्रीकृष्ण पर कुर्बान की ॥ २३७७ ॥ बोली थी जो बैठी हुई कोकिल तुझे समझावती ॥ हो बर क्यों गाफिल भो रही अब क्यों न तुझको भावती ॥ २३७८ ॥ भर रक्त अपने भागमे क्यों कान्तकी अभी नहीं ॥ फिर तुझे अपसोश मिलने का रहेगा मुज्यही ॥ २३७९ ॥ शुनकर मुझे दिल बीचमे क्या रञ्ज आनेको लगा ॥ लाचार हूं तकदीरसे दुख पाप हरनेको लगा ॥ २३८० ॥

दुशमन है मेरा काम तनमे क्रोध ले छेगाजते ॥ वे हमारे कृष्णकी पद प्रेमको ले भाजते ॥ २३८१ ॥

॥ दोहरा ॥

काम क्रोध जाको कहो कपृ चार दो घोर ॥ सो मेरे शुभ कर्म्मको ले ले भागे कोर ॥ २३८२ ॥

॥ अविचात ॥

आशोज आकरके मिला इसवख्त मेरे भागसे ॥ देवेंगे पानी पितरो पूजेंगे देवी हाथसे ॥ २३८३ ॥ एकमको करके स्थापना निज कूलकी देवी पूजसे ॥ चाडीकी करके पाटको परसाद पावें बूझसे ॥ २३८४॥ दुश तोरसे नित अर्च्चसे पूजों मे सप्ती अष्टमी ॥ नैवेद्य पूजा होम कर वर मांग लूं फल दंवली ॥ २३८५ ॥ दश रोजके दिन अर्च्चके वरदान ले फिर मात से ॥ गुरुदेव बालमको करू नित सेव अपने हाथसे ॥ २३८६ ॥ य शौक मेरे दिलका है आशोज पूरा कीजियो ॥ सद्गुर हमारे देव नानकको मिला भेट दीजियो ॥ २३८७ ॥

॥ दोहरा ॥

क्वार कहै मै क्या करूं प्रीत जिगरकी तन्त ॥ बाहिगुरूका जाप जप सत्य नामको मन्त ॥ २३८८ ॥

॥ अवियात ॥

कहने लगा आशोज क्यो सति नामको जपता नहो ॥ बेशक नानक शाहका पावेगा दर्शन शुन सही ॥ २३८६॥ तशवी मोहव्वत्का बना ले दस्तमे तूं याद कार ॥ विभूत उसकी नामका तनमो लगा कर ध्यान धर ॥ २३९० ॥ योगका कासी गुशल यतको जटाकी धार ले ॥ घरकी अधारी साबरे अङ्गलगे जादिजान ले ॥ २३९१ ॥ नेमकी नाखूनकी घर त्यागको मुर्शद बना॥ मुरीद आतमको करो दुनियांको जानो है फना। ॥ २३९२ ॥ दिव्य लोचन धारकी सब योनमो देखो जरा ॥ आत्मरूपी ब्रह्म निर्गुण घट घटकी अन्दर है धरा ॥ २३९३ ॥

॥ दोहरा ॥

ऐसो भण उपदेशको कार कथो प्रस्थान ॥ अब मुझ पर कार कारमको पहुंचे कार्त्तिक आन ॥२३९४॥

॥ अवियात ॥

कार्त्तिक अजब्बाहार है जाड़ेकी मोशम आगई ॥ फूलोंकी कलियां झूमती मेवेकी डाली पकरही ॥ २३९५ ॥ क्या खूब औवल योग है तिथि पूर्णमासी आगए ॥ गुरुदेव निर्गुण ब्रह्म नानक जन्म आकरके लए ॥ २३९६ ॥ ले ले कुशुमको दस्तमे सब

देवते अस्तुत् करें ॥ पवन फेरें चमरको ले आरती इन्दर धरें ॥ २३९७ ॥ ब्रह्माजी पढ़ते मन्त्रको सब देवते पूजा किया ॥ ले दस्तके वे फूलको पञ्जाबमे छिड़का दिया ॥ २३९८ ॥ देखके धरती कहा धन आज मेरा भाग है ॥ शेषजी गुण गारहे वे अन्त जिनका कार है ॥ २३९९ ॥

॥ दोहरा ॥

कार्त्तिक कहे शुन लालसा मुझको अर्जी धाय ॥
सतगुरु नानक ब्रह्मको दीना तुझको लाय ॥ २४००॥

॥ अर्जियाम ॥

कार्त्तिक लगा कहने मुझे मेने तुझे आशानकी ॥ ब्रह्म निर्गुण देव नानकको बुला जगतार दो ॥२४०१॥ अबतो मेरे कह्नको लाजिम तुझे है पूजना ॥ कैसा है प्रभो भक्त तूं मुझको भि लाजिम बूझना ॥२४०२॥ सुनकर अपाने शोहरके मैं नामको खुश हो रही ॥ लखवार कार्त्तिक अर्जके शुभ कदमको उनने गही ॥ २४०३ ॥ जिशने हमारे भजनको जगमें बुना मुझको दिया ॥ तिनकी मैं तारिफ क्या लिखूं जैसा खुशी खुझको किया ॥ २४०४ ॥ अब कन्तमें मिलने का मुझको आरजू दिलमें बड़ा ॥ लाचार अपने करमसे नित पाप करणेको पड़ा ॥ २४०५ ॥

॥ दोहरा ॥

चित चञ्चल थिर ना रहै पाप कर्म्मकी धाय ॥
यह विपत्ति मुझपर पड़ी अब क्या करूं उपाय
॥ २४०६ ॥

॥ अवियात ॥

संगशिर लगा कहने मुझे मेरे अमलकी वीचमे ॥
जपमन्त्र तूं सति नाम का है पाप नाशक शोतमे
॥२४०७॥ वाहिगुरू हर स्वासमे दिन रात तुम रटते
रहो ॥ ले ले अपाने पापको इश आगमे दहते रहो
॥ २४०८ ॥ पापकी दहनेकी हक आतश वड़ा यह तेज
है ॥ अन्तमे ले कन्तको शोनेका तेरा शेज है ॥२४०९॥
शुनकर मुझे संगशिरकी बातें कुछ तशल्ली हो रही ॥
अब वैर वाश्ना कामते ले क्रोध छे मन खो रही ॥२४१०॥
ए मुझे देते नहीं छिण भर भी लेने नामको ॥
फुर्सत् नहीं पल भर काहै इनकी फसाए कामको
॥ २४११ ॥

॥ दोहरा ॥

शन्त कृपा कर नामका यही शुनामे आय ॥
जहर तुल्य है कर्णको पहुची निद्रा धाय ॥ २४१२ ॥

॥ अवियात ॥

इश नर्क्का द्वारू अगर होवे किशीकी पासमे ॥

देवे गुरूजी राह पर चाकर मुझ व खाशमे ॥२४१३॥ हकीम कोई मेहरवां मिशकीन पर करिये करम् ॥ इशमर्ज़ से मुझको वचा कलिकालमे रखिये धरम् ॥२४१४॥ शुनकर हमारे गमके रोनेको कहा मंगशर मुझे ॥ इश मर्ज़का दारू है शाधू सङ्ग मै बोला तुझे ॥ २४१५ ॥ शन्तका सेवा करो गुरु भक्तका कर संग्सदा ॥ चभक्त का सङ्ग छोड़की दुर्जनसे भागा फिर सदा ॥ २४१६ ॥ तव तुमारा मर्ज य सव दूर होगा आपसे ॥ शुभकर्म मे चित जायगा फिर मुक्ति होगा जापसे ॥ २४१७ ॥

॥ दोहरा ॥

ऐसे भण चगहन मुझे करगो चाप प्रस्थान ॥ चब शरणागति पौषकी पड़े खालसा आन ॥ २४१८ ॥

॥ चवियात ॥

पौषकी तारीफ मुझसे टुक न जाती है किया ॥ जिस मास मे दशरूप नानक ब्रह्म निर्गुण धर लिया ॥ २४१९ ॥ एकते दो तीन ले फिर चार के दश रूप धर ॥ गुर देव लीला ब्रह्म नानक करि रहे हर मास पर ॥ २४२० ॥ पौषको शुभ शप्तमीमे शुक्लकी पख अन्दरे ॥ गुरुदेव निर्गुण जन्म लीना भवन मे हरमन्दरे ॥२४२१॥ शुभ नाम गोविन्द सिंह अपना ब्रह्म निगुण

धारकै ॥ पुन पन्थ कीना खालसा सब जक्तको उद्धारकै ॥ २४२२ ॥ औरङ्गको फिर मारकै हन्दूरका रक्षा किया ॥ राजको ले देव निर्गुण ग्राह जाट्टाको दिया ॥ २४२३ ॥

॥ दोहरा ॥

पौष भणै शुन खालसा धरो हमारे बैन ॥
जो सुखको चाहो सदा इनसे जोड़ो नैन ॥ २४२४ ॥

॥ अत्रियात ॥

दुनियाकी सब माशूक हैं दिन चारके शुन बावरे ॥ कौड़ी भी योबन देख तेराकर रही है भावरे ॥२४२५॥ जिश दिन य तेर हुश्नको जातो रहैगो खूबियां ॥ उसदिन य तेरे रूहपर मारेगी जालिम् जूतियां ॥२४२६॥ कौडी अगर जो पासमे तेरे रहा तो बावरे ॥ आपके टिप्शे चोंचले दिखला करेगी भावरे ॥२४२७। इस वास्ते मने कहा तुझ पर बड़ा करके करम् ॥ गुरु ब्रह्मको माशूक कर दुनियांका सब तजके भरम् ॥२४२८॥ वे तुमारे हुश्न का दौलतका नहि परवा धरें ॥ इस लोकमे पर लोकमे तेरा सदा रक्षा करें ॥ २४२९ ॥

॥ दोहरा ॥

यह मेरे उपदेशको धरो खालसा कान ॥ अब

अस्त,त कर माघकी सन्मुख पहुचा आन ॥ २४३० ॥

॥ कवियात ॥

माघमे गुरुदेव वालमकी लगी आसा मुझे ॥ सब छोड़ आसा औरका खोजा फिरूं बन् बन् उसे ॥२४३१॥ आम मौले कमल फूले ऋतु वसन्ती आगई ॥ क्यों न मिलते कान्त मुझको हाय किशमत क्या भई ॥ २४३२ ॥ जिनके लिये मै छोड़ दी दुनियांके सब माशूकको ॥ वे कहां एकान्तमे आकरके बैठे कूसको ॥ २४३३ ॥ क्या खूब है तनपर वसन्ती वस्त्र भूषण अङ्गमे ॥ ले ले सोहागन कन्तको सब सोवही हैं सङ्गमे ॥२४३४॥ मै तुमारे दर्शको महिबूब पीतम मर रही ॥ अब जल्द आकरके मिलो मै कबको तेरे गहि ॥ २४३५ ॥

॥ दोहरा ॥

माघ भणे शुन खालसा पिया मिलनकी आस ॥ कबहु न दिलसे छोड़िये जब लग तनमे स्वांस ॥२४३६॥

॥ कवियात ॥

कभी तो होवेगा करम् तुझ पर शजन्का शुन सही ॥ ऐसा मती दिलमे धरो माशूक य मिलना नहीं ॥ २४३७ ॥ कान्तका जो इश्क पूरा है तुझे शुन बावरी ॥ वेशक आकरके मिलें वे देख तेरा भावरी ॥ २४३८ ॥ हरदम अपाने प्रेमसे दिलदारको तूं याद

कार ॥ सब छोड़ आसा और का निज कान्तसे तूं प्यार कर ॥२४३९॥ होकर खुशी देवेगे तुझको दिव्य लोचन साइयां ॥ तब सूझ उनकी कद्रको तुझको पड़ेगा भाईयां ॥ २४४० ॥ ले प्रेमडोरी दस्तमे निज कान्तको बन्धन करो ॥ छोड़ दुनियेदारको ले भजनको चितमे धरो ॥ २४४१ ॥

॥ दोहरा ॥

फाल्गुनमे सब लोगकी अजब बनी है चाल ॥
पागलसे होकर फिरें युवा वृद्ध औ बाल ॥ २४४२ ॥

॥ अविशान ॥

ले ले गुलाल दस्तमे माशूक के रू परमलें ॥ भर भर गुलाब आबकी पिचकारिया शर शर चले ॥२४४३॥ ले लेके चङ्ग ढोलको दे गालिया नाचत फिरें ॥ पीपी शराब तड़ियां जाजाके नहरमा गिरें ॥ २४४४ ॥ ऊपरसे किसी शख्श ने रू पर पिशाब जा किया ॥ कहने लगा क्या खूब क्योड़ा आसना छिड़का दिया ॥ २४४५ ॥ ऐसे बहार का नहि दुनियामे है कोई अमल ॥ शाबास है वे शख्शको जो रहते हैं इस्से अमल ॥ २४४६ ॥ ले ले गुलाल कृष्णलाल पर उड़ाय दीजिये ॥ गागाके उनके नामको अमृतका धार पीजिये ॥ २४४७ ॥

॥ दोहरा ॥

अन्तनको अर्च्चन करो फाल्गुनमो गहलाय ॥
विष्णुपदीको गायको फिरो गुलाल उड़ाय ॥ २४४८ ॥

॥ अवियात ॥

जिस तौरसे सब खालसा गुरु ब्रह्मको ले साथमे ॥ क्या खूब किर्त्तन कर रहे ले ढोल वीणा हाथमे ॥ २४४६ ॥ होला निकालें अन्तको ऊपर गुलाली फेंकते ॥ गाली न गुफ्ता है कहीं साधूको ले ले भेंटते ॥ २४५० ॥ इस तौरसें खेला करें होली जो दुनिये दार सब ॥ रोते फिरें कलवार अपने कर्म्म मे दे हाथ तब ॥२४५१॥ शरावे वीर क्या गुल्जार दोजको किया संसारमे ॥ जितने थे दौलतवन्त डेरा कर दिया उस वागमे ॥ २४५२ ॥ गरीबोंका दोजकमे नहीं काल जुगमे अब गुजरान है ॥ फक्त साधूवर्गमे उनका जरा अनमान है ॥ २४५३ ॥

॥ दोहरा ॥

चैत्र नगाड़ा ठोकके चढ़ा जोमसे आय ॥ जिनके पीतम घर नहीं उनपर पड़ो वलाय ॥ २४५४ ॥

॥ अवियात् ॥

चैतमे तप्ने लगी तेरे लिये मेरी जिगर ॥ तेरी जुदाई से अनम रोती फिरूं इतसे उधर ॥ २४५५ ॥

शेज सूनी देखकी वेहाल हो खोजतफिरूं ॥ अब जल्द वालम् आईये मैं कदम पर तेरे गिरूं ॥२४५६॥ चत बोते वर्ष भी पूरे भये अब क्या करूं ॥ लेशीस अपना काटके उसकामनी आगे धरूं ॥ २४५७ ॥ अब शही जाती नहीं मुझसे जुदाईकी शनम् ॥ कण्ठसे आकर मिलो करके हमारे पर करम् ॥ २४५८ ॥ पड़के तेरे इस्कमे अपनेको मै बर्बादकर ॥ बैठी हूं तेरे नाम पर पदपद्मका तव ध्यान धर ॥ २४५९ ॥

॥ दोहरा ॥

चैत्रमास पूरण भयो वर्ष गयो है बीत ॥ उनको कभी न चैन है जिनके बिछड़ मीत ॥ २४६० ॥

॥ अबियात् ॥

अब प्रभो आकर मिलो यह ग्रन्थको पूरा करो ॥ शीसपर मेरे शनम् शुभ कदम अपना ला धरो ॥२४६१॥ यह ग्रन्थ लीला रामका अब जल्द पूरण कीजिये ॥ अब पापको हरके हमारो नाम अपना दीजिये॥२४६२॥ देख अपने पापको हरवख्त मै कलपा करूं ॥ यम राजसे कैसे बचूं दिन रात यह शोचा करूं ॥२४६३॥ जो आप मुझपर कर करम् सब पापको खण्डन करें॥ तो तो य भवसिन्धुसे पापातमा जाकर तरे ॥२४६४॥

अगर्चे होकर खफा मुझपर करम करते नहीं ॥ लेकर तुमारे नामको दोजकी भोगूंगी गही ॥ २४६५ ॥

॥ दोहरा ॥

पाणिजोड़ करि खालसा भयो शुनो सब मीत ॥
गुरु प्रसाद पूरण करो बारह मासो गीत ॥ २४६६ ॥

अथ श्रीहनूमानजीका जन्म ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

काण्ड सुन्दर भणत हौं संत गुरु चरण मनाय ॥ सत योजन सागर निरख मर्कट सब भय पाय ॥ मर्कट सब भय पाय देख छिलीन कणोता ॥ तब अङ्गद युवराज कटक सब को सम दीता ॥ निज निज विक्रम कीश वीप्र मुझको चतलावें ॥ सुनत वचन भट सर्ब्ब द्रविण निज गर्ज्ज सुनावें ॥ २४६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

गय नामक वस पुव बतावैं ॥ दिशयोजन मे कूद सकावैं ॥ गवाक्ष योध स्यामन् निज गाई ॥ कूदौं तिथि शर योजन भाई ॥ २४६८ ॥ शरभवीर निज प्राण चलावैं ॥ तिथि तिथि योजन कूद सकावैं ॥ शशि गन्धमादन निज गाई ॥ कूदैं मास रोप तिथि

भाई ॥ २४६९ ॥ वल महेन्द्र निज विहस अलाए ॥ कूदौं मास मास युवराए ॥ भणै देवेन्द्र तरस निज आई ॥ कूदौं मास मास दिश भाई ॥ २४७० ॥ शुष्मन् वीश्वकर्म्मा सुत गावैं ॥ दिश दिश मास मास टप जावैं ॥ शौर्य्य अनल अङ्गज निज गाये ॥ तिथि तिथि मास मास टप जाये ॥ २४७१ ॥ तारक वीर सहस निज गावैं ॥ मास मास शर मास सिधावैं ॥ ब्रह्मापुत्र भालु पति आये ॥ पुर्ब्ब पराक्रम निज वतलाये ॥ २४७२ ॥ जव वामन वलिको छल कीना ॥ स्वर्ग घेर पदते निज लीना ॥ तव मै कूद त्रिदिवमो जाये ॥ वार सिन्धु फेरी दै आये ॥ २४७३ ॥ अव मै वृद्ध हेतु भय पायं ॥ अल्प पराक्रम गात धरायं ॥ तदापी मन माहिं करावैं ॥ मास मास निधि मास सकावैं ॥ २४७४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन मन्त्रीके वचनको विहस भणै युवराज ॥ योजन लोचन कारणे कीना आप अकाज ॥ कीना आप अकाज सिन्धु कूदौं मे जाई ॥ आनेकी है शक्ति मुझे उतसे नहि भाई ॥ जामवन्त शुन वाक भणे तिनको समुझाये ॥ चन्द्रवार क्या कहो सको शतवार लंघाये ॥ २४७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

किन्तू उचित नहीं तव जाना॥ जाको काज सुनो दे काना ॥ मौन होय हनुमन्त रहाये ॥ देहु तिन्हें युवराज पठाये ॥२४७६ ॥ कौ बल तिनका भाष सकावैं ॥ पवन पुत्र बल अतुल धरावैं ॥ जन्म कथा तिनका मै गाये ॥ देवैं भूपज भ्रान्ति नशाये ॥ ॥ २४७७ ॥ विद्याधरी रही भु भाई ॥ कुञ्जर तनया नाम रहाई ॥ ताको कौशिक शाप अलावैं ॥ ताते सो वंदरी हो जावैं ॥२४७८॥ उसने भूमि पुत्रिका जाई ॥ अञ्जनि ताका नाम रखाई ॥ ता सौं व्याह केशरी कीना ॥ पटभूषण उत्तम बहु दीना ॥ २४७९ ॥ मलया गिरिपर वास करावैं ॥ पुत्र विना मनमो दुख पावैं ॥ तीर्थ प्रभास केशरी आये ॥ धवल नाम कुञ्जर उत पाये ॥ २४८० ॥ भारद्वाज मुनीको धाई ॥ वध कारण निज शुण्ड उठाई ॥ निरख केशरी कोश रिसाए ॥ पटक भूमि यम लोक पठाए ॥ २४८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्राण दान निज पायके भणे विप्र हरषाय ॥ जो चाहो सो लेहु वर चोप्र कोश वर आय ॥ चोप्र कोश वर आय केशरी विहस अलावैं ॥ पुत्र विना मुनि राज कष्ट भूरी मै पावैं ॥ भणे मुनी तव हर्ष पुत्र

होवें बलवन्ता ॥ खुशी रहें सब लेख और उनसे भगवन्ता ॥ २४८२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत बचन कपिवर हरषाये ॥ मुनिवरकी पदमो शिर नाये ॥ भवन हर्ष प्रस्थान कराई ॥ भार्य्याको सब हाल जनाई ॥ २४८३ ॥ शुनत अञ्जना अति हर्षावें ॥ पुन वह पुष्पवती हो जावें ॥ स्नान हेतु नर्म्मदा सिधाई ॥ पवन बाटमे वस्त्र उड़ाई ॥२४८४॥ आलिङ्गन करि भवन सिधावें ॥ गर्भवती अञ्जनि हो जावें ॥ अष्टादश जब मास वितायं ॥ कार्त्तिक वदी चतुर्द्दशि आयं ॥ २४८५ ॥ पहुची निशा लग्न शुभ आई ॥ तब अञ्जनि सुत प्रसव कराई ॥ प्रात उदय भानू जब होवें ॥ रक्तवर्ण लखिके बहु रोवें ॥ २४८६ ॥ कूदे मात गोदते भाई ॥ पहुंचे सूर्य्य निकटमो जाई ॥ ग्रहण हेतु राहु उत आवें ॥ इन्हें निरख सुर लोक सिधावें ॥२४८७॥ भये शीघ्र वासवको जाई ॥ काको मम अधिकार कराई ॥ राहु दूसर देख डराए ॥ हाल देन निकटे तब आए ॥ २४८८ ॥ शुनि सुरपति निज होश हरावें ॥ चढ़ि कुञ्जर प्रस्थान करावें ॥ निरख पवन सुत अरुण तजाई ॥ झपटे ऐरावणको जाई ॥ २४८९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब वज्रिन भय पायकै मारा वज्र चलाय ॥ लगा हनूके वीचमो गिरे भूमिमे आय ॥ गिरे भूमिमे आय अनिलने कोप कराए॥ करि अपने को रोध विश्वका प्राण हराये ॥ तब ब्रह्माजी अमर सर्व्व लै करि झट आई ॥ दै करि कोट प्रबोध समीरणको समुझाई ॥ २४९० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जगत प्राण क्यों जगत नशावैं ॥ मै तव सुतको अमर करावैं ॥ शुन मारुत निज रोध तजाई ॥ विश्व जीव जीवन पुन पाई ॥ २४९१ ॥ सुरगणको ब्रह्मा वतलावैं ॥ सुतको आशीर्व्वाद करावैं ॥ शमन भणै कपिको हरषाई ॥ मुझते मरण त्रास तज भई ॥ ४२९२ ॥ वरुण भणै शिरपाणि लगाए ॥ जलमो तव नहि प्राण नशाए ॥ अग्नि भणै सुतको हरषाई ॥ मुझमे तन तव जलै न भाई ॥ २४९३ ॥ इन्द्र भणै मनमो शरमाए ॥ मै तुझपर जो वज्र चलाए॥ तौन वज्र सम होय शरीरा ॥ यह विधि वर दीना सब धीरा ॥ २४९४ ॥ निज निज वल दीना पुन सोई ॥ लागा वज्र हनू मे जोई॥ ताते हनूमान कहिलाए ॥ दै वरको सुरभवन सिधाए ॥ २४९५ । वल भूरी

हनुमन्त धरावैं ॥ पढ़नेको भार्गव ढिगजावैं ॥ युग दिनमो विद्या सब पाए ॥ ताते हनूमान बबराए ॥ २४९६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पञ्चम दिन भार्गव भयो विद्या दिया सिखाय ॥ अब दखणा दै करि मुझे मौज करो गृह जाय ॥ मौज करो गृह जाय सुनत हनुमन्त अलाए ॥ यतनहि विद्या शीख आप शिक्षक कहि लाए ॥ भयो खालसा-सिंह गुरूने आप अलाई ॥ ताते विक्रम वृद्धि सर्व हनुमान हराई ॥ २४९७ ॥

अथ श्रीहनूमानजीका लङ्का प्रवेश ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनि अङ्गद हनूमानकी जन्म कथा हरषाय ॥ ले आये सन्मान करि जामवन्त समुझाय ॥ जामवन्त समुझाय तात क्या मौन रहाए ॥ रामचन्द्रके काज आप यह गात धराए ॥ कौन काज जग माहि जौन तुम नाहि सकाओ ॥ ले रघुपतिको नाम आप निज शाप नशाओ ॥ २४९८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत पवनसुत हर्ष बढ़ाये ॥ राम राम शुभ नाम चलायें ॥ ताते अपनो शाप नशाई ॥ पूर्व्व पराक्रमको निज पाई ॥ २४९९ ॥ अरुण तेज सम तेज धराए ॥ चढ़ ग्रावन सव अमर मनाए ॥ रामचन्द्र पदमो शिर नाई ॥ लक्ष्मण और जानकी माई ॥ २५०० ॥ ग्राऽनको सम गात धराये ॥ जय जय रामचन्द्र जय गाए ॥ कपि सव रामचन्द्र जय गाई ॥ महावीर कूदे हरषाई ॥ २५०१ ॥ निरख अमर सव विहस चलावैं ॥ अव वन्धन रघुनाथ खपावैं ॥ नागप्रसू सुरसा बुलवाई ॥ दीन परिच्छा हेतु पठाई ॥ २५०२ ॥ विकटाकार धार करि आवैं ॥ सिन्धुमध्य वड गर्ज्ज चलावैं ॥ बहुत दिवस उपवास कराई ॥ भल अहार विधि मोर पठाई ॥ २५०३ ॥ मुखमो चीप्र प्रवेश करावैं ॥ शुनि अनिलज कर जोड़ चलावैं ॥ रामकाज जिन विघ्न कराओ ॥ कारज याद मोरतन खाओ ॥ २५०४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत वचन हनुमन्तको सुरसा गर्ज्ज चलाय ॥ वज्रदन्तको चीपदे तोको खाउं चिवाय ॥ तोको खाउं चिवाय चोर वोलैं मुशकाई ॥ तुच्छ तुण्डको

धरो करो भक्षण असमाई ॥ शुन सर्पिन गर्जाय वदन योजन दशकीना ॥ देख पीशभे वीर तीस मागिन धरलीना ॥ २५०५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वीर मास दिश गात बढ़ाए ॥ दिश दिशसो मुख मास कराए ॥ बातज मास माम तन कीना ॥ सुरसा अधिक दिशा धरि लीना ॥ २५०६ ॥ वायुज तिनसि टीक बढ़ाए ॥ मास माससो मास कराए ॥ सतयोजन तन वीर बढ़ावें ॥ तुरत सवासतसो करि आवें ॥ २५०७ ॥ मेउलसम तन वीर धराए ॥ मुखते पैठ कर्णते आए ॥ पाणि जोड़ पुन विहस अलाई ॥ तुमरो काहा कौन मे माई ॥ २५०८ ॥ विदा करौ प्रभु काज करावें ॥ नाग प्रसू तव विहस अलावें ॥ कावोदरकी हौ मै माता ॥ लेन परीक्षाको तव भ्राता ॥ २५०९ ॥ अमर सर्व मुझको पठवाए ॥ कोजे रामकाज अव जाए ॥ अस भण सुरसा भवन सिधावें ॥ धर मैनाक सिन्धु पठवावें ॥ २५१० ॥ जोड़ पाणि रावनसो आए ॥ महावीरको आइ शुनाए ॥ करि विश्राम प्रभो फल खाओ ॥ पुन रघु-पतिका काज कराओ ॥ २५११ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन पर्व्वत की बचनको हनूमान हरषाय ॥ पुंकतभे मैनाकसे सागर मोक्यों आय ॥ सागर मोक्यों आय अद्रि आगे शिर नाये ॥ जब वासव पर काटि अचल सब लुण्ड कराये ॥ तबमै पाकरि वास शरण सागरका लीना ॥ जनक हिमालय मोर प्रभो तिनको तजि दीना ॥ २५१२ ॥

॥ पादाकुलका छन्द ॥

शुनत धाल हनूमान बलाई ॥ जाततमोमे परण कराये ॥ बिन विश्राम जावं मै लङ्का ॥ कागे कोय डरो जिन सङ्का ॥ २५१३ ॥ क्योंकरि मै निज सत्य तजाऊं ॥ लखि तब प्रेम न छोड़ सकाऊं ॥ अंगुलि एक छुवा करि भाई ॥ करिहौं राम काज मैं आई ॥ २५१४ ॥ अस भण अंगुली दीन लगाए ॥ निरखि सुन्द बोले हरषाए ॥ आस मोर धर त्याग कराये ॥ निश वासर तन प्रगट रखावैं ॥ २५१५ ॥ शुनत अभय शिखरी हरषाए ॥ पवमानज प्रस्थान कराए ॥ कछुक दूर पहुचे जब धाई ॥ रजनीचरी सिंहिका पाई ॥ २५१६ ॥ विकट अकार धार तन भारी ॥ तर्ज्ज गर्ज्ज भाषत वह नारी ॥ कहां कीश ले प्राण सिधाए ॥ मम अहार विधि तोहि पठाए

॥२५१७॥ निरखि गात ताको अति भारी ॥ विप्रन
प्रमाण वीर तन धारी ॥ झट उसके मुखमो घुस
जावैं ॥ उदर चीर बाहर चलि आवैं ॥ २५१८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

छट पटाय चितकार करि तजै दुष्ट वह प्राण ॥
देख तुष्ट सब लेख भे हनूमान हो वाण ॥ हनुमान हो
वाण कूद लङ्कामो जावैं ॥ स्वर्णपुरीको देख दृष्टि युग
ओर करावैं ॥ भणै खालसासिंह गुरुगोविन्द मनाए ॥
जिनको भजिकरि जीव जाय भवसिन्धु तराए॥२५१९॥

अथ श्रीहनूमानजी और चामंडा देवीसे कथोपकथन एवं श्रीसीतादेवीका दर्शन

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अस्ताचल दिनकर गए रजनी कर आकाश ॥
तुच्छरूपको धारिके गये लङ्कके पास ॥ गये लङ्कके पास
देख चामुण्डा पाये ॥ जोड़ि पाणि हनुमान भणै
तिनको शिरनाये ॥ मात करो क्यों वास आप लङ्कामो

आई ॥ बिहसि हाल निज सर्ब मात तिनको बतलाई ॥ २५२० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

परम भक्त लङ्कापति भाई ॥ तिह कारण शिव मोहि पठाई ॥ और भणै शङ्कर समुझाये ॥ करौ लङ्क रचा तुम जाये ॥२५२१ ॥ जब होवे रामा अवतारा ॥ हर लावें तिनको तब दारा ॥ हनूमान चरनाथ पठावें ॥ ताको देख आप गृह आवें ॥ २५२२ ॥ सो तुम कौन कहो समुझाए ॥ पाणि जोड़ हनुमन्त बताए ॥ हौ मै राम दूत शुभ माई ॥ सिया हेतु रघुनाथ पठाई ॥ ॥ २५२३ ॥ शुनत वचन देवी हरषावैं ॥ तत्त काल कैलाश सिधावैं ॥ तब हनुमन्त लङ्क मो आये ॥ गृह गृह मो सब खोज कराये ॥ २५२४ ॥ कतहूं सीताको नहि पाई ॥ पहुंचे रावणकी गृह जाई ॥ रत्न पलंग पर शयन करावैं ॥ रावणगण युग पोर लखावैं ॥ २५२५ ॥ जैसे चन्द्र गगणमो भाई ॥ तारा गणमे शोभा पाई ॥ मन्दोदरी देख हरषाये ॥ कोट रती सम रूप रहाये ॥ ॥ २५२६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सब लङ्का गृह गृह निरख वीर करैं प्रस्थान ॥ बन बन मो उपवन निरख बन अशोक मतिमान ॥ बन

अशोक मतिमान देख सीता हरषाये ॥ पति सचीमहे भेष शोक भर श्वास चलाए ॥ भयो खासासिंह प्रभो दर्शन निज दीजे ॥ यातुधान कुल नाश सुता सुभको भटकीजे ॥ २५२७ ॥

अथ रावणके आज्ञासे श्रीसीता देवी प्रति चेरीगणका दौरात्म्य ।

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

सीतल मात चले युग चोर नभं रजनीपति देख हंसाये ॥ रावण साथ हजार लिये दिश नारि अशोक गयो हरषाये ॥ देख दशाननको हनुमान रहे तरु ऊपर जाय लुकाये ॥ मात सियामनमे घवड़ाय दशानन भाषत हैं शिरनाये ॥ २५२८ ॥ क्या तुम शोच करी निश वासर वासर देव न प्रेत सतावें ॥ मानुष राम अहार शुनो मम सो तुमको विधतौर छुटावें ॥ सागरदेख कठोर बड़े यहको वह कौन तरे तर आवें ॥ के मुझको तुम राज करी हम सेवक हो कर तोर रहावें ॥ २५२९ ॥ भूमि सुता करि कोप भयो युग

लोचन हीन न तोहि लखाये ॥ सागरका तुछ दर्प करे भवसागरसे रघुनाथ तराये ॥ मूरख चेत करी चितमो तुम सिवका बोल मुझे शिरनाये ॥ कौन तरे अब खोट करो जननीसमको हम तोर रहाये ॥२५३०॥ कोप करो मुनशे दशग्रीव कह्यो अस्निके तिनको धय काई ॥ काट तुझे झट नाश करौं पुन मात भणे तिनको समुझाई ॥ नाश करो मुझको तुम क्या यह आपन नाश कह्यो गृह लाई ॥ श्राप मुन्यो सब नार जवे झट रावणको घर लै करि धाई ॥ २५३१ ॥ त्रास दिखावनको उससे पुन चेरिनको दशनाथ पठावें ॥ आकरके वह नार भणे दशमास विते पखमास रहावें ॥ मास विते अब पाणि मुनो हमलोग तुझे यमलोक पठावें ॥ जो अब आपन प्राण चहे घर भूपतिके चलिवास करावें ॥ २५३२ ॥ आय जटा पुन लोचन नाम भणे सब चेरिणको धमकाये ॥ क्या तुम त्रास दिखावतहो दिन वेद विषे कुलका दुःख जाये ॥ श्राप करौं मुन शेडु सबै हमने सपना काल देख डराये ॥ लङ्क जलाय दई रघुनाथ पठाकरि कीश सिया हरषाये ॥ ॥ २५३३ ॥ आसरको कुल नाश भई यमराजपुरी दशनाथ सिधावें ॥ राज बिभीषण पाय गये मनमो सब लेख बड़ो हरषावें ॥

वास भयो सुनके सपना सब चेरिय जा पद शीस नियावैं ॥ सिंहभणै हनुमान कहैं मनमों सपना कल सांच करावें ॥ २५३४ ॥

अथ श्रीहनुमानजीके हस्तसे निज स्वामीके हस्तका अङ्गुरी प्राप्त होकर श्रीसीतादेवीका क्रन्दन ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

कोट नुती करिकै सब चेरिय ध्यानकरयो निज आसन आये ॥ सोच करैं हनुमान तबै हम क्योंकर हाल भणै समुझाये ॥ रावणका चर जान मुझे हमसे यह मात न बातकराये ॥ जान यही मनमो हनुमान भणै रघुनाथ कथा सिरनाये ॥ २५३५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अवधिपती दशरथके जाये ॥ जनक सत्य पालन वन आये ॥ श्यामगौर सुन्दर पख भाई ॥ कोट काम वत रूप लखाई ॥२५३६॥ पहुची सुपर्णखा वन आये ॥ ताकी कर्ण घ्राण प्रभु धाये ॥ ताते खर दूषण पख भाई ॥ ले निज कटक समरको आई ॥ २५३७ ॥

तिन सबको रघुनाथ खपावैं ॥ पुन बहु नारि लछमी आवैं ॥ रावणको सब हाल जनाई ॥ पुन दशगर्द्दन कोप कराई ॥ २५३८ ॥ कनक मृगा मारीच बनाये ॥ रघुपतिकी सनमुख चलि आये ॥ सीता एण देखहर-षावैं ॥ धरणेको पतिको पठवावैं ॥ २५३९ ॥ ताको प्रभो जाय घरमारैं ॥ अन्त समय बहु दुष्ट पुकारैं ॥ हे लछमण अवरज झट आओ ॥ मारीच दुष्टते मोहि बचाओ ॥ २५४० ॥ अन्त तुल्य वाणी सुन माई ॥ लछमणको झट तौन पठाई ॥ रावण शुन्य अवास लखाये ॥ हरण जानकी जाय कराये ॥ २५४१ ॥

मत्त गयन्द छन्द ॥

मात शुन्यो पतिको जब हाल भयो खुशहौ युगा ओर लखाई ॥ को तुम तात कहो मुझको यह हाल तुझे सब कौन बताई ॥ कीश भयो पदमो शिर ना करि मात मुझे रघुनाथ पठाई ॥ मात कहैं पुन कीश कहो नर बांदर क्यों करि प्रीति कराई ॥२५४२॥ कूद भयो हनुमान तबै सब हाल सियापदमो शिरनाये ॥ रोवत मात कहैं पुनतात कथो मुझको पतियाद कराए ॥ भाषत हैं हनुमान शुनो नित रोवत नाथ महा कलपाये ॥ सो जननी हम भाष सकै नहिं जो हम प्रभुका प्रीति लखाये ॥ २५४३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन सीता रोवे कलपाई ॥ सो वर्णन कवि कौन कराई ॥ पुन क्रन्दनकरि मात भलावें ॥ कोकोसुत क्या नाम कहावें ॥ २५४४ ॥ वातज पाणि जोड़ वतलाये ॥ पवन पुत्र हनुमान कहाये ॥ रामचन्द्रके सेवक माई ॥ तव कारण यह गात धराई ॥ २५४५ ॥ सुन माता बोलें कलपाये ॥ दुष्ट निशाचरके गृह आये ॥ माया कोट असुर सब जाने ॥ क्यों करि कन्त दूतभे माने ॥ २५४६ ॥ तब अङ्गुरी प्रभुकी दिखलाए ॥ ले सीता निज माथ लगाए ॥ अङ्गुरीपाय मात वह जाना ॥ यह किङ्कर मेरो हनुमाना ॥२५४७॥ आशीर्वाद करें हरषाई ॥ अमर पुत्र मै तोहि कराई ॥ अस्त्र गात तुमरे नहिं लागें ॥ रण तव देख सुरासुर भागें ॥ २५४८ ॥ नित गिरि जा पति गिरि जा तेरा ॥ रक्षा करें प्राण वर मेरा ॥ सरस्वती तव कण्ठ रहावें ॥ मारग अग्नि वरुणते पावें ॥ २५४९ ॥

॥ अमला छन्द ॥

अस दे वरको पुन मात भणै अब तात सुनो हमरो मन लाए ॥ विन आजि नहीं मम है दुखको अवसान तुभै हम सांच अलाए ॥ अरविन्द भणै अब भ्रात विभीषण ले करि भूमि सुता तुम जाए ॥ झट प्रीत करी रघुवीर मना करि तो तुमरो यह वंश

रहाए ॥ २५५० ॥ सुनकै यह बाक भये बहु पामर नाम सुने मम नाक डरावैं ॥ यमराज डरै अरु प्रेत शचीपति भूत पिशाच सबै भय पावैं ॥ नरको सब देख डरो जिंह कारण नाम सुने हमरो भगि जावैं ॥ विधि ने सब दैतन के हितु को नर कोमल मास अहार बनावैं ॥ २५५१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

बहुत दिवस नर को नहि खाई ॥ पौवज हेतु विधी पठवाई ॥ आनन्दा नामक भूनारी ॥ श्रेष्ठ विभीषण अन्त कुमारी ॥ २५५२ ॥ तिनसे सब्ब हाल मै पाए ॥ बिना समर नहि और उपाए ॥ सुनत वचन हनुमन्त चलावैं ॥ त्रिकुट सहित लङ्का ले आवैं ॥ ॥२५५३ ॥ सुन जननी भाषें घबड़ाई ॥ विघत प्रमाण गात तब भाई ॥ क्यों करि त्रिकुट आप ले जावैं ॥ तब निज रूप वीर दिख लावैं ॥ २५५४ ॥ शीर्ष अभ्रमो टीन लगाई ॥ भूमिकम्प सम लङ्क हिलाई ॥ निरख मात तिनको समुझावैं ॥ पूर्ब रूप झट पुत्र धरावैं ॥२५५५ ॥ सुन वातज मनमो हरषाई ॥ पुर्व गात तत काल धराई ॥ तब बोलैं सीता हरषाए ॥ यातुधान कुल नाश कराए ॥ २५५६ ॥ जो मुझको उद्धार करावो ॥ तो यम लोक गयनमो पावो ॥ सुनत

बाक हनुमन्त चलावैं ॥ करौं मात जो आप बतावैं ॥ २५५७ ॥

॥ कमला छन्द ॥

असबोल तबै पुन मात भयो फल खाव सुधा हमरो सुत आए ॥ झट लै कर मो कर जोड तबै सुखमो हनुमान दयो शिर नाये ॥ फल खा करिकै खुश होय महा कर जोड़ भयो बन देहु बताए ॥ गुरु नानक शाह सहाय भयें कवि सिंह तबै यह पाठ बनाए ॥ २५५८ ॥

अथ अमृत बाग उजाड़ और मूढ़ सेनापति वधः।

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

आशुगकी सुत की बतियां शुन भूमि सुता तिनको समुझाई ॥ तात निशाचर को यहदेश इहां तुम राड़ कगे मति जाई ॥ जो धरिकी सुत कोट करे हमारो कछुहाल पती नहिं पाई ॥ मार तुझे पख टूक करे यदि तो शुन की मम प्राण नशाई ॥ २५५९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत मुसन सुत विहस चलावैं ॥ तव प्रसाद रण जीत करावैं ॥ राम दूत लङ्कामो आये ॥ कछुक त्रास पुरजन नहि पाये ॥ २५६० ॥ व्यर्थ भयो आवन मम माई ॥ आज्ञा मुझे देहु हरषाई ॥ तव सीता सब अमर मनाये ॥ भये पुत्र रण जीत कराये ॥ २५६१ ॥ मिलो वेग मुझको तुम आई ॥ अस कहेउ वन दीन दिखाई ॥ करि प्रणाम प्रस्थान कराये ॥ पहुंचे सुधा बागमें आये ॥ ॥ २५६२ ॥

॥ अमला छन्द ॥

जड़िके तरुपे वगिया सबको कपि नोच खसोट सुधा फल खाये ॥ धरिके रखवारण के पदको झट भूमि गिरा करि प्राण नशाये ॥ रजनी चर भाग फिरे युग ओर बड़ो मनमो सव त्रास धराये ॥ जस वारिध नाचत हैं इतसि उत वात चले जव कोप कराये ॥ ॥ २५६३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

चेरियको धरि धरि कि कीशं ॥ फोड़ें पटक भूमिमो शीस ॥ जबन अवन तब प्राण धरायं ॥ भाग सिया पदमो शिर नायं ॥ २५६४ ॥ रक्षा करो मोर अब मातं ॥ करती कीश लङ्कको पातं ॥ को यह मर्क

कहीते आयं॥ भये मात पुत्री तुम जायं ॥ २५६५ ॥ सुनत बाक चेरिय घबरातं ॥ दीना खबर भूपको यातं ॥ कालरूप सीताको जायं ॥ सो लङ्कापुर नष्ट करायं ॥ २५६६ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

कोप करयो सुनकै सब हाल पती दशमाथ भयो गरजाये ॥ सेवक नामक मूढ़ बुला कपिको धरनै झट दीन पठाये ॥ जे घर चाप भये बड़ मूढ़ कहां बनको पशु देहु दिखाये ॥ दौड़ तबै सुनकै हनुमान तड़ा तड़ झापड़ दीन रिसाये ॥ २५६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब सरमे बड़ चाप लगाये ॥ निरख कोप पादप ले धाये ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ बलय सर्ब्बं हनुमन्त खपाई ॥ २५६८ ॥ रहा मूढ़ ताको धरि लाये ॥ रदन पाणि पद दीन खसाये ॥ छूट पटाय तन त्याग कराई ॥ चोर सर्ब्बं हैंतनजो पाई ॥ २५६९ ॥ धरि गईन सिन्धू तट जाये ॥ रगड़ तुरत यमलोक पठाये ॥ भयो भग्न पादप तब जाई ॥ कटक सर्ब्बं कपि राज खपाई ॥ २५७० ॥

॥ चमला छन्द ॥

सुनकै मनमो कलपे दशग्रीव भये सुतको निज

फौज सजाये ॥ अबही धरहि बह बानरको तुम जाकरि के सुत देहु खपाये ॥ सुनही ततकाल अनीक तयार करो तब रावण देख बजाये ॥ गुरु गोविंद सिंह मना करिकै कवि सिंह यथा मति भाव सुनाये ॥ ॥ २५७१ ॥

अथ जाम्बूमाली सेनापति वधः ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुन रावण सुतको भयो ताप आप जिम आव ॥ प्रहस्त पुत्रको भेजही अक्षको पकड़ मगाव ॥ अक्षको पकड़ मगाव जाम्बुमाली बुलवाये ॥ कटक सहित ततकाल भूप ताको पठवाये ॥ उत्तम रथपर तिष्ठ दुष्ट पहुँचा वह जाई ॥ भयो गर्ज्ज अक्षु तोय भूपसी राड़ कराई ॥ २५७२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत बाक हनुमन्त रिसाये ॥ दीना कोट गाल गर्ज्जाये ॥ अधम निशाचर कोट समाना ॥ क्या जाने रण मरम अजाना ॥ २५७३ ॥ जन्तु दुष्ट सुभको वत लाये ॥ देखो समर वीप्र मम पाये ॥ अस भया मरो

कूद ले धावैं ॥ मार बजाय यम लोक पठावैं ॥ २५७४ ॥ जाम्बुमालि तब बाण चलाई ॥ लागे पवन पुत्रको जाई ॥ चला रुधिर लगती छवि भारी ॥ चलि फागमो जस पिचकारी ॥ २५७५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कर यावन हनुमान ने मारा सन्मुख धाय ॥ मार मार शर हँनते दीना शैल खपाय ॥ दीना शैल खपाय देख हनुमन्त रिसाये ॥ ताकि करकि शस्त्र छोर मारा गर्जाये ॥ भयो खाकसा सिंह दुष्ट यमलोक सिधाई ॥ कहा भूरश्रो हाल भग्न पाछक सब जाई ॥ २५७६

अथ सप्त सेनापती वधः।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन रावण मनको विषे कीना कोप अपार ॥ वीर लोक सन्मुख रहे भाखे ताहि पुकार ॥ भाखे ताहि पुकार आय पशुको धरि भाई ॥ रोम रोम शर मार देहु यमलोक पठाई ॥ लोचन सत्वरु धूम्र वीर शार्दूल सिधाये ॥ चरु प्रधान विड़लाच सप्त सन्मुख भट धाये ॥ २५८७ ॥

पादा कुलकछन्द ॥

देखि पवन सुत कीन विचारा ॥ कीटन ते क्या समर हमारा ॥ इनकी युद्ध सुयश क्या पावै ॥ अस विचार लघु गात धरावै ॥ २५७८ ॥ तरु पर चढ़ि तन दीन लुकाई ॥ खोजैं यातु सरितपति आई ॥ राम दूत देखन नहि पाये ॥ तातें दुष्ट भये गरजाये ॥ २५७९ ॥ कठिन समर हमरो सुन भाई ॥ भाग प्लवग निज प्राण बचाई ॥ अस भण यातु सिन्धु हरषाये ॥ चढ़ि स्यन्दन प्रस्थान कराये ॥ २५८० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब मारुत सुत गर्ज्जकी घेरा सन्मुख धाय ॥ चढ़ि स्यन्दनकी चक्र पर मारा वृक्ष चलाय ॥ मारा वृक्ष चलाय वीर सागर घबड़ाए ॥ भागन को नहि ठाँव मरे रथ पर तड़फाए ॥ भणे खालसा सिंह भगनपाइक तब आई ॥ रावणको रण हाल सर्व्वं भाषै कलपाई ॥२५८१ ॥

अथ अक्षय कुमार वधः ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन रावण मनमो भणै कठीन वीर हनुमन्त ॥ सेवक ते नहि होयगा कबहूं छनका अन्त ॥ कबहूं छनका अन्त शोच निज पुत्र बुलाए ॥ अक्षय ताको नाम भूप भाखै समुझाए ॥ जा करके सुत शीघ्र प्रवग बन्धन करि लाओ ॥ यद्यपि धरा न जाय मारि यम लोक पठाओ ॥ २५८२ ॥

॥ पादाकुलकछन्द ॥

शुनत वचन मनमो हरषाए ॥ चढ़ स्यन्दन रण-भूमि सिधाए ॥ सेना सर्व चले गर्ज्जाई ॥ अग्र करो रण साज वजाई ॥ २५८३ ॥ पहुचे समर भूमि मो आए ॥ निरख पवन सुत कोप कराए ॥ रथ ते भूपज भूपर आई ॥ पवन पुत्रको गर्ज्ज ग्लाई ॥ २५८४ ॥ पशु हो कर येतनो हङ्कारा ॥ कछुक त्रास मनमो नहि धारा ॥ देखो समर मोर कपि आई ॥ अस भण सुत शर तीन चलाई ॥ २५८५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वाण आय तनमो लगे पवन पुत्र घवड़ाय ॥ तब स्यन्दन पर बैठके भूपज ध्यान कराय ॥ भूपज ध्यान

कराय रोप पुन दीन चलाई ॥ मारुत सुत करि कोप धरयो चक्रिनहिपर जाई ॥ भयो खालसा सिंह पटक धरणीमो घाए ॥ दिया भूपको खबर भग्नपाइक तब जाए ॥ २५८६ ॥

अथ श्रीहनूमान जीका ब्रह्म फास मो बंधन ।

कवित ॥

सुन सुत बध छाया रावण फोड़त भाल रोवत अपार हाल मन्दोदरी पायसी ॥ हाल पुरजन पाय प्रबोध करत आय मेघनादको पुकार रावण बुझायसी ॥ भाषत गातज वेग वानरको मारतेग मुझको दिखाव छिप्र वाको शिर लायसी ॥ शोक नाश होय तब खावें ताको पल अब भयो इन्द्रजीत अभी लावे मुगड जायसी ॥ २५८७ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

अस पितुको भण कटक सजाए ॥ चढ़ि स्यन्दन प्रस्थान कराए ॥ बाजन सर्व बाजने लागी ॥ भूत पिशाच शब्द शुनि भागी ॥ २५८८ ॥ पंहुचे समर भूमिमो आई ॥ निरखि अनिल सुत द्रुम उठाई ॥ विलोक मेघनाद गर्जाए ॥ भणे पशू मरणे क्यों आए ॥

॥ २५८६ ॥ मूर्ख अजान दुष्ट नहिं जाने ॥ सुरपति जीत भवनमो आने ॥ लोचन लोल जनक पुत्रवाई ॥ तैं वनको पशु राड़ कराई ॥ २५६० ॥ मम अहार वानर नर जानो ॥ क्या मुझसि रणको पशु ठानो ॥ शुनत प्रभञ्जन कुमर अलाए ॥ दुष्ट अधम क्या समर कराए ॥ २५६१ ॥ रावण सहित लङ्क पुरवासी ॥ यद्यपि भिड़ो रोम नहि पासी ॥ शुनत कोप रावण सुत कीना ॥ जे शर छोड़ चापते दीना ॥ २५६२ ॥ ताति अपनो अङ्ग वचाई ॥ मारैं लात यातु को जाई ॥ ताका छवि कविने लखि पाए ॥ झपटैं सिंह एण समजाए ॥ २५६३ ॥

॥ कवित ॥

लातको प्रहार खाय इन्द्रजीत घवड़ाय पल भर बाद पुन चेतनको पायो है ॥ पच्च मदकाल जस लड़त भिड़त तस डोलत अवनि मानो भूमिकम्प आयो है ॥ करत परसपर प्रधन प्रहर भर निरखि अमर रण सम वतलायो है ॥ इन्द्रजीत कोप कीन धार ब्रह्म फांस लीन मन्त्र पाठ करि ताको प्रेरण करायो है ॥२५६४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ब्रह्म फांस सो कोप कराए ॥ बांधा हनूमान को जाए ॥ महावीर मनमो वतलावे ॥ जो याको मै आज

खुपाव ॥ २५९५ ॥ ब्रह्म फांस मानै नहि कोई ॥ महिमा घटै सुन सम होई ॥ अस विचार खण्डन नहि कीना ॥ यातु सर्व्व धरिकी भट कीना ॥ २५९६ ॥ तद्यपि वीश तीश सत भाई ॥ गिरत पहुत दीना बल धाई ॥ जाको भज बन्धन भव जाए ॥ ताकी पर बन्धन मो आए ॥ २५९७ ॥ लिखत लिखत कवि अति घव-ड़ावैं ॥ क्या कारण प्रभु अयश रखावैं ॥ कालिकी जीव कलूष भराए ॥ ताते भ्रम कीना ववराए ॥ २५९८ ॥ को अस रामदूत धरि लावैं ॥ प्रभु कारज कवि खेल मचावैं ॥ लङ्का दहन हेतु कपि राई ॥ कीवा युक्त फांसमो आई ॥ २५९९ ॥ लै रजनी चर डंफ वजाये ॥ पहुंचे सभा वीचमो आये ॥ निरखि सभासद भाखण लागे ॥ यमन तुल्य वानर यह लागे ॥ २६०० ॥

कवित ॥

रावण विलोक करि भाषत करोध धरि मुरख प्रवग काल वस इत आयकी ॥ कानन उजाड़ अर मारत कुमार धर यमनसे भेट अब करी तुम जायकी ॥ यदि निज प्राण चहो काके घर मांच कहो भषत कपीश कोप अति मन लायकी ॥ मदन गोपाल सिंह पुस्तक रचतभिन्न श्रीगुरू पूरण ब्रह्म नानक मनायकी ॥ ॥ २६०१ ॥

अथ लङ्का दग्ध ।

भुजङ्ग प्रयाद छन्द ॥

दिया जो तुझ राजको टीका माथं ॥ किया तोर जो सोदरा प्राण घातं ॥ खपा भ्रात चौदे दिया तोर जोई ॥ हन्यो वालिको भायकी वीर सोई ॥ २६०२ ॥ मुझे वे पठाये किया यातु पातं ॥ चहूं भी तुझे मारबे एक लातं ॥ यही ठानकी फांसकी वीच आयि ॥ कहो आपनो काल क्यों आप लायि ॥ २६०३ ॥ सुना यातुने कोप कीना अपारं ॥ उठा मारणे तेगको पाणि धारं ॥ भणे भूपको छोटका भ्रात आयि ॥ नहीं नीत है दूत को भूप घायि ॥ २६०४ ॥ किया कोशने शोच ही घात भाई ॥ अरा दंड देकी बुसि दो पठाई ॥ कहा भूपने पूछ सी मोह भारी ॥ जला आगसे देशसि दो निकारी ॥ २६०५ ॥ सुना दाशने वेग ले बास आये ॥ महा नेत्र को वीर ढोला वढ़ाये ॥ लगी बावने वासकी यातु जेते ॥ वढ़ाने लगे पूंछ को वीरतेते ॥ २६०६ ॥ भई लंक खाली नहीं और वासं ॥ दिया तैल ते नेत्रको खूब पासं ॥ लगा आगको शोचिसो फांस पाई ॥ चले ग्राममो ढोल डंका वजाई ॥ २६०७ ॥ सबे देखने ग्रामके लोक धाये ॥ भणे क्या तमाशा महाराज लाये ॥

कहा वीरने कोपको धार भाई ॥ तमाशा अभी देखुंगा मे दिखाई ॥ २६०८ ॥ अरा आप ठेरो सबे लोग जेते ॥ करोगे मुझे याद को खूब तेते ॥ यही बोलके छोटका रूप धारी ॥ छटा फांसको गात लौना निकारी ॥ ॥ २६०९ ॥ लगे कूदने कोटके बीच धाये ॥ जलाने लगे गेहको खूब ढ़ाये ॥ चला कोपको धारके बात भाई ॥ किया लंकको आरके खूब छाई ॥ २६१० ॥ अरे यातु सारे मरें यातु नारी ॥ लगी भागने फेंकके नार सारी ॥ गिरें तालमें नारि भी यातु नंगे ॥ कहा वीर देखो मजा खेल चंगे ॥ २६११ ॥ किया मे तमाशा कहो यातु कैसा ॥ भला या बुरा भाखियो होय जैसा ॥ सुना रावणा भागनेको विचारे ॥ घुसा पूछ्नो वीरने गाठ मारे ॥ २६१२ ॥ गिरे भूमि मो घूमके भूप भाई ॥ लगे जारणे गेज वीरं घुमाई ॥ लिया भूपको छोरके फौज धाये ॥ दिया तालके बीचमो जा छिपाये ॥ २६१३ ॥ लगे मारणे यातुको धाय वीरं ॥ भगे लोग जेते सबे छोड़ चीरं ॥ लखी आगमे कीशको मात रोई ॥ लगी पूजने आतसं बैठ सोई ॥ २६१४ ॥ कहें देवते लोगने आय माई ॥ लगी रोवने आप क्या शोच लाई ॥ वरं आपने वीरको जो दिया है ॥ करें आग क्या खाक लङ्का कियाहै ॥ २६१५ ॥ सुना

हाल माता खुशी हो अपारं ॥ रहीं मौन हो रामको ध्यान धारं ॥ वहां बालकी पूतने शोच कीना ॥ अरीं मात मेरी बड़ो दोष लीना ॥ २६१६ ॥ मह्ंगा अभी बागको बीच जायें ॥ कहा देवतोंने तिन्हें चौप धायें ॥ मथीं मातके बागमें आग भाई ॥ करो लंकको आरके आप छाई ॥ २६१७ ॥ शुना हालको वीरने प्राण पाये ॥ लगे नाचने गेहते गेह जाये ॥ किया धामको आरके खूब छाई ॥ बचा भूपकी भ्रातको गेह भाई ॥ ॥ २६१८ ॥ रहा सोय जो देवता रोक लीना ॥ रहा मौन साधू उसे छोड़ दीना ॥ जला लंकको सागरं तीर आए ॥ बुझा तेजको जानकी पास धाये ॥ ॥ २६१९ ॥ कहा शीसको नायके हाल जेते ॥ शुनी मातने कोट आशीस देते ॥ भणै वीर दीजे मुझे चिह्न माई ॥ जिसे देख नाथं प्रतीतं कराई ॥ २६२० ॥ दिया मातने माथको फूल भारी ॥ कहा हाल बीतो लखो जो हमारी ॥ यही मासकी बीचमो नाथ पावैं ॥ तबैं जानको जीयते देख पावैं ॥ २६२१ ॥ भणै शीसको नायके रोय वीरं ॥ करूं मासमे लंक को ध्वंस फीरं ॥ लगीं रोवने मात जी शोक पाई ॥ चली नैनसे नीरकी धार भाई ॥ २६२२ ॥ लगे भाषणे बात के पूत रोये ॥ मुझे देहु आज्ञा खुशी मात होये ॥

कहा मात आयो करो शोक घातं ॥ करो यातुधी वंस को चीप्र पातं ॥ २६२३ ॥ चले हो खुशी मातको शीस नाये ॥ चढ़े शैलमो कूदके व्योम धाये ॥ लगे गर्ज्जने पार आवाज पाई ॥ कहा भालुने वातकी पूत आई ॥ २६२४ ॥ सिया मातको देखने वीर पाये ॥ तभी एतनो गाजकी कीश आये ॥ कहा अंगदं वाक है ठीक भाई ॥ मिलि एतने बीचमो वीर आई ॥२६२५॥ कहा खालसा सिंहने प्रेम नालं ॥ बचे जो पढ़े काल से सो करालं ॥ शुभे रामकी गीतको जीव भाई ॥ चली नाककी पापकी तौन घाई ॥ २६२६ ॥

अथ सकट अङ्गदादिक पञ्च वीर का किस्किन्धा प्रस्थान ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अङ्गदको कर ओड़के भयो हाल हनुमन्त ॥ लङ्का को हम जारके कीना पुरका अन्त ॥ कीना पुरका अन्त मात सीताको पाये ॥ बन अशोक के बीच शोक दिन रात कराये ॥ भयो हर्ष युवराज वीर सबको समुझाई ॥ रावण को मै मार चलू सीता लै भाई ॥ ॥ २६२७ ॥

भुजङ्ग प्रयात छन्द ॥

कहा भालुने भूपजं को बुझाये ॥ सखि कौन जो वारिधिं कूद जाये ॥ भयो कोप को धारिके बालि पूतं ॥ लखो वृद्ध है आपनो न्याय बूतं ॥ २६२८ ॥ भयो भालु शाचो कहो आप भाई ॥ सको वीर को कोटले आप जाई ॥ सवै जानकी चालको जा लखावैं ॥ तवै मातको शाथ लै नाथ आवैं ॥ २६२९ ॥ यही हेतुसे भूपजं भे कहा है ॥ करो आपसो ध्यान मो जो धरा है ॥ कहा वातकै पूतने जोड़ पानी ॥ कगे आपसो वृद्धने जो वखानी ॥ २६३० ॥ तवै हो खुशी देशको वीर धाये ॥ मधू वाग की वीचमो यूथ आये ॥ भयो फौजको भूपजं प्रेम लाई ॥ मधू पान कीजे सवै वीर आई ॥ २६३१ ॥ लगे खान पीने तवै कीश धाये ॥ किया वागको नोचके नाश जाये ॥ दधी मूखने भूपको हाल भाषो ॥ मधू वाग को नाचकै फौज चाखो ॥ २६३२ ॥ किया मे मनै कोपको धार भारी ॥ उठ मारगो कीश दै कोट गारी ॥ कहा अङ्गदं वीर को हाल जाये ॥ खफा हो मुझे मारपो तौन आये ॥ ॥ २६३३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन अङ्गद के हाल को भूप भयो हरषाय ॥

भलो काज सुतवर किया क्या कारण तूं जाय ॥ क्या कारण तूं जाय प्रभो भाषै मुशकाये ॥ तव मातुल कथा भणी भूप भूरी कलपाए ॥ भणै खालसा सिंह जान सुग्रीव जनाई ॥ मामाको युवराज वागते मार भगाई ॥ २६३४ ॥

अथ श्रीरामचंद्र जी का ससैन्य लङ्का प्रस्थान ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत आगमन कटकके रामचन्द्र हरषाय ॥ कहन लगे सुग्रीवको मित्र वेग वुलवाय ॥ मित्र वेग वुलवाय सियाकी खवर सुनाओ ॥ भणै भूप अति हर्ष शीघ्र मातुल तुम जाओ ॥ अङ्गदको पठवाय प्रभोका कारज कीजै ॥ नातीका कटुवाक आप चित मो नहि लीजै ॥ २६३५ ॥

॥ शङ्ख नारी छन्द ॥

चले कोपलाई ॥ दधी मूख धाई ॥ भयो हाल सोई ॥ कहा भूप जोई ॥ २६३६ ॥ चले राज पूतं ॥ लिये कीश यूथं ॥ प्रभो पास आये ॥ सवै माथनाये ॥ २६३७ ॥ भणै हालसारो ॥ हनूमान भारी ॥ निधिं कूदधाये ॥

बहूयातु घाये ॥ २६३८ ॥ दिया लंक जारी ॥ भगी यातु नारी ॥ गिरियातु सारे ॥ महा त्रासधारे २६३९ ॥ फिरें लोग नंगे ॥ नचें वीरचंगे ॥ हसें रामभारी ॥ हनूको निहारी ॥ २६४० ॥ रहे वीरमौनं ॥ मथो नाहि कौनं ॥ धरे नाथ धाई ॥ लगा कराठ भाई ॥ २६४१ ॥ हणूको अलाए ॥ अरपूजीत आए॥ वंरलिहु भाई ॥ चितं जीन आई ॥ २६४२ ॥ हनुमान भाषें ॥ प्रभो प्रेम राखे ॥ वरं याहि दीजे ॥ नहीं और लीजे ॥ २६४३ ॥ खुशी नाथ होई ॥ कहा दीन सोई ॥ तवै चिन्ह दीना ॥ प्रभो पाणिलीना ॥ २६४४ ॥ सिया शीस फूलं ॥ उठी देख शूलं ॥ लगे नाथ रोने ॥ महा शोक होने ॥ २६४५ ॥ तवैवीर आखें ॥ सिया जीन भाषें ॥ यही मासवीचं ॥ लिये कीश अचं ॥ २६४६ ॥ महाराज आवें ॥ तवै मोहिं पावें ॥ इसीतौर होई ॥ कहा बात सोई ॥ २६४७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत हाल हनुमन्तसे रामचन्द्र घवड़ाय ॥ लग्न शोधनेको लगे कोविदको वुलवाय ॥ कोविदको वुलवाय विप्र साइत बतलावें ॥ अर्ध रात्रिको प्रभो आप प्रस्थान करावें ॥ भयो खालसा सिंह फौज राघव ले धाये ॥ नदि नाना सब लांघनाथ सागर तट आये ॥ ॥ २६४८ ॥

अथ विभीषण सतोपदेश प्रदान तन्निमित्त रावण कर्तृक पदाघात ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

श्रीरघुपतिकी हाल सुन सब लङ्का घबड़ाय ॥ रावणकी माता भणै साधु पुत्रको जाय ॥ साधु पुत्रको जाय चौर रावणको जाई ॥ कहो पुत्र समुझाय जानकी मात फिराई ॥ पड़े शरणमो जाय वेग रघुवीर मनाए ॥ तब लङ्काको राज चौर मम वंस रहाए ॥ ॥ २६४८ ॥

॥ पादाकुलकछन्द ॥

सुनत विभीषण कलप चलाई ॥ मात निकोशा को समुझाई ॥ पुर्व्वज मती छिन्नभे माता ॥ ताते उचित बात नहि भाता ॥ २६५० ॥ मेरो कहा भूप नहिं मानै ॥ दुर्ज्जन वाक चित्तमो धानै ॥ भणे निकोषा पुन समुझाई ॥ कहो चौर भूवार बुझाई ॥ ॥ २६५१ ॥ मानै भलो चाहि नहिं मानै ॥ चपनो किया चाप बह जानै ॥ चलि विभीषण साधु सयाना ॥ करि प्रणाम भाषे विधि नाना ॥ २६५२ ॥ जबते चाप सिता ले चाए ॥ तबते कुशल देख नहि पाए ॥

रामचन्द्रको नरजिन जानो ॥ पूरण ब्रह्म चित्तमो ठानो ॥ २६५३ ॥ उनसे वैर कुशल नहि भाई ॥ करो प्रणाय दे सीता माई ॥ सुनत कोप रावण करि भाषें ॥ गुरु पितु मात तुल्य तूं भाखें ॥ २६५४ ॥ नर वानर ते भय क्या यतना ॥ खावें यातु पाय सठ जितना ॥ सुन कुम्भ गण अति हरषाए ॥ भाषें भूभृतको समुभाए ॥ २६५५ ॥ आसन मुझको शीघ्र करावें ॥ नर वानर धर उदर भरावें ॥ सुनत विभीषण पुन समुझाई ॥ इनको वचन कुशल नहि भाई ॥ २६५६ ॥ मन्त्री भणो शीघ्र बुलवाए ॥ करो मन्त्रणा हाल जनाए ॥ जाति वंस वचे सो भाई ॥ कीजे मुझपर होय सहाई ॥ २६५७ ॥ सुन भूभुज अति कोप कराये ॥ मारा लात गर्भ्भं वी पाये ॥ भये विभीषण शम्त बुझाई ॥ मेरो बड़ा अन्तमो भाई ॥ ॥ २६५८ ॥ शोच शोच अपशोस करावें ॥ वंस सहित यम लोक सिधावें ॥ अस भण शम्त पयान कराये ॥ भये कुवेर भ्रात गृह जाये ॥ २६५९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन रावणको हालको धनद भये समुझाय ॥ राघवकी शरणागती पड़ो अवर तुम जाय ॥ पड़ो अवर तुम जाय प्रभो पद पद्म मनाए ॥ करो लक्ष्मी

राज यातु कुल नाथ कराए ॥ भये खालसा सिंह सन्त प्रस्थान कराई ॥ हृदिनी पतिके तीर शीघ्र पहुंचे वह धाई ॥ २६६० ॥

अथ विभीषण श्रीरामचन्द्रजीके शरणागत: ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सन्त विभीषणको निरख कीस सर्व्व ववड़ाय ॥ उठे मारणे शैलसी तब वह सन्त अलाय ॥ तब वह सन्त अलाय प्रभो शरणागत आयो ॥ भणे गर्ज्ज सुग्रीव दुष्ट रावण पठवायो ॥ कहैं लक्ष्मण राम जौन शरणागत आवैं ॥ ताको जोजन शते तीन जन नर्क सिधावैं ॥ २६६१ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

ले मन्त्री सुग्रीव अलायो ॥ छल करि कपू भात यह आए ॥ इनको शरण नाथ क्या दीजे ॥ मुण्ड काटि इनका ले लीजै ॥ २६६२ ॥ सुन राघव बोलैं समुझाई ॥ दास पाय पच्छी भुभाई ॥ शरण भूप शीवीका लीना ॥ दर्शन आय बाज भूदीना ॥ २६६३ ॥ भयो बाज नृपको समुझाई ॥ विधि मेरी यह खाद्य

बनाई ॥ दिवस नेब भोजन नहि पाये ॥ क्यों पखार मम भूप लुभाए ॥ २६६४ ॥ भये महीप शरण मम आवैं ॥ तिहं कारण मैं ताहि छुपावैं ॥ पत मेरो बँ भोजन कीजै ॥ शरण जीन ताको नहि दीजै ॥ ॥ २६६५ ॥ अस भण भूप पलक निज दीना ॥ ताते स्वर्ग लोक कै लीना ॥ यद्यपि छल कर्यो यह आए ॥ तदापी नहि दियुं खपाए ॥ २६६६ ॥ असभण यातु कन्त बुलवाई ॥ पूछन लगी प्रभो मुशकाई ॥ छल करि लङ्का कन्त पठाये ॥ ताते तुम यह ढोंग रचाए ॥ ॥ २६६७ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

शुन रघुपतिकी वचनको यातु शन्त कलपाय ॥ पाणि जोड़ भाषत भये पदमो माथ लगाय ॥ पदमो माथ लगाय कपट जो मै करि आये ॥ कलिमो होवैं भूप और ब्राह्मण रघुराये ॥ पुत्र एकसौ होय और मद पान कराई ॥ ताको जोहै पाप मिलैं मुझको सो भाई ॥ २६६८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत सपथ लक्ष्मण मुशकाये ॥ पाणि जोड़ प्रभुसे बतलाये ॥ दुष्ट निशाचर की चतुराई ॥ लैन आय वर मन्द कराई ॥ २६६९ ॥ राज हेतु तप

घोर करावैं ॥ सो अनिष्ट करवेकी पावैं ॥ विप्र जन्म तपको फल पाई ॥ सो वर लेत अधर्म कराई ॥ ॥ २६७० ॥ सुत भू कारण मेध करावैं ॥ सो शत पुत्र पाप करि पावैं ॥ अधम भिखाचरको यह जाती ॥ मद्दिराते छूनका क्या घाती ॥ २६७१ ॥ नाथ विचार करो सब वाणी ॥ तब छूनका कीजे सन्मानी ॥ शुनत वचन राघव मुसकाए ॥ लक्ष्मणको बोलि समुझाए ॥ ॥ २६७२ ॥ शपथ कठोर कौन कछु भाई ॥ ताका मर्म शुनो मन लाई ॥ कलिमें भूप प्रजा नाहिं पालैं ॥ लूट मुल्क घरमो धन घालैं ॥ २६७३ ॥ कर कारज दौरात्म्य मचाई ॥ लेवैं वेष कौन गृह पाई ॥ दया धर्म तन नाहिं धरावैं ॥ उदर हेतु बहु युक्ति करावैं ॥ २६७४ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

देनेको पैशा नहीं खरचा करिवे दून ॥ खाट विछौना बेंचके लै लेवैं चौगून ॥ लै लेवैं चौगून कष्ट निज प्रजा जमावैं ॥ अर्द्धचन्द्र दे तिन्ह महीभुज विदा करावैं ॥ ताते होवे नर्क कलीराजाको भाई ॥ तिह कारण यह शपथ कौन आसर पति आई ॥ ॥ २६७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कलिमो तप नहि विप्र करावैं ॥ ले ले दान पतित हो जावैं ॥ काम क्रोध तनमध्य धरैंगे ॥ बिना दोष लखि शाप करैंगे ॥ २६७६ ॥ ताते कष्ट विप्र बहु पावैं ॥ कारण तीन शपथ यह खावैं ॥ कलिमो पुत्र पापते होई ॥ ताते पाप करै सुत सोई ॥ २६७७॥ अङ्गज पाप जनकको खाए ॥ जनक पाप अङ्गजको जाए ॥ ताते कष्ट परस्पर पावैं ॥ शपथ हेतु भूसुत सो खावे ॥ २६७८ ॥ यातु बोलि मदिराको भाई ॥ कुलाचार भण दीन उड़ाई ॥ सुर नर असुर जन्तु कहि लावैं ॥ कर्मानुसार योनि सब पावैं ॥ २६७९ ॥ नरमो कर्म जौन जस करते ॥ कर्मानुरूप नाम तस धरते ॥ द्विज जो छत्री कर्म करावैं ॥ तिनको छत्री वेद बतावैं ॥ २६८० ॥ छत्री द्विजको कर्म करायं ॥ ताते सो ब्राह्मण हो जायं ॥ ताका मै दृष्टान्त बताई ॥ देवैं भ्रम तव भात बधाई ॥ २६८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

छत्री विश्वामित्र थे विप्र कर्म अब कीन ॥ तबते वे ब्राह्मण भये और ब्रह्ममो लीन ॥ और ब्रह्ममो लीन विप्र थे माधि अमाता ॥ तिनके आत्मज राज प्रसू मत्स्या निज पाता ॥ ताते छत्री नाम भूप होगेते

पाई ॥ एक ब्रह्म सब योनि कमंती जात कहाई ॥ ॥ २६८२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तत्त्व पाय लक्ष्मण हरषाये ॥ पाणि जोड़ पदमो शिर नाये ॥ भये प्रभो लघु बुद्धि हमारी ॥ ताते मैं नहि तत्त्व विचारी ॥ २६८३ ॥ अन्त बिभीषणको रघुराई ॥ लङ्काको दीजे ठकुराई ॥ सुनत प्रभो अति हर्ष बढ़ाए ॥ दयो राज अभिषेक कराए ॥ २६८४ ॥ कीश राम जय गर्ज्जं चलावैं ॥ सुर गण निरख हर्ष अलगावैं ॥ अब सब कष्ट दूर भे भाई ॥ अब रावण वधा कारण सकाई ॥ २६८५ ॥ घरको भेदो भेद बतावैं ॥ यातु वंश प्रभु ध्वंश करावैं ॥ अस भण लेख भवन निज धाये ॥ खबर पाय लङ्केश डराये ॥ ॥ २६८६ ॥ लङ्कामो रण साज बजावैं ॥ अस्त्र सर्व्वं को साफ करावैं ॥ राम कटक मङ्गल सब गाये ॥ लङ्कामी नर नार अलाये ॥ २६८७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रवग भूमि आकरि इहां याम माश कर दीन ॥ असक कौश लखि शस्त्रको साफ करैं मति हीन ॥ साफ करैं मति हीन व्यर्थ हङ्कार करावैं ॥ याम सर्व्वंको नाश आप यमलोक सिधावैं ॥ भये खाकसा

सिंह खेद भस प्रजा करायं ॥ भव सागर ते तरे प्रभो यशको जो गायं ॥ २६८८ ॥

अथ सागर वन्धन एवं श्रीराम चन्द्रजीका ससैन्य लङ्का प्रवेश ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रात होत सब मर्कं लै करैं मन्त्रना राम ॥ द्वीपवती पति बांधकी धरैं विश्वमो नाम ॥ धरैं विश्वमो नाम विभीषण शन्त चलाए ॥ स्रोतस्वती पति नाथ आपकि पित्र बनाए ॥ ताको कीजै याद युक्ति बोलैं सो भाई ॥ शुनत वचन रघुनाथ स्रवन्ती कान्त मनाई ॥ ॥ २६८९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तप कठोर प्रारम्भ कराए ॥ कन्द मूल वन सर्व्व तजाए ॥ त्रय उपवास कीन रघुराई ॥ अपगापति पहुंचे नहिं आई ॥ २६९० ॥ निरख मलीन प्रभो तन भारी ॥ लक्ष्मण भयौं क्रोट हे गारी ॥ अधम अपांपती रघुराई ॥ ताको क्या कीना व्रत भाई ॥ २६९१॥ अहङ्कार तप देख कराए ॥ दुर्दिनी दुष्ट कन्त नहि आए ॥ जो जैसो ठाकुर, रघुराई ॥ ताको तस भर्जे

बनि आई ॥ २६८२ ॥ अग्नि ज्वाल शरनाथ पठाये ॥ लीजे निम्नगा कन्त बुलाये ॥ तब रघुपति शर चाप लगाई ॥ मन्त्र पाठ करि हीन प्रलाई ॥ २६८३ ॥ चला रोप विद्युन सम धाए ॥ तटिनी कन्त विलोक डराए ॥ प्रभी निकट पहुंचे झट धाई ॥ चरण पकड़ रोवैं कलराई ॥ २६८४ ॥ नाथ बुद्धि पति अधम हमारी ॥ तातै मै कछु नाहि विचारी ॥ अब सेवक शरणागति आये ॥ राखहु प्राण रोप बुलवाये ॥ २६८५ ॥

कुण्डलिया छन्द ॥

कृपासिन्धु भगवन्त तब मनमो अति हरषाय ॥ मन्त्र पाठ करि वाणको लीना शीघ्र बुलाय ॥ लीना शीघ्र बुलाय शैवलिनि पति तब भाई ॥ प्राणदान निज पाय स्तोत्र प्रारम्भ कराई ॥ करि अर्चन शुभ युक्ति तरङ्गिणि कन्त चलावैं ॥ राम नाम लिखि शैल नील नल सेतु बनावैं ॥ २६८६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब ख्याती भव सागर तारे ॥ तुच्छ सलिल क्या करे हमारे ॥ अस नुति करि लख भवन सिधावैं ॥ तब रघुपति नल नील बुलावैं ॥ २६८७ ॥ कीन प्रणाम वीर बड़ भाई ॥ पूंछन लगे प्रभी

सुखकाई ॥ भृंगी गुण निज गात धरावें ॥ क्या कारण नहिं प्रगट करावें ॥ २६९८ ॥ पाथि जोड़ नल नील कराये ॥ जातिनहि भय गुप्त रखाये ॥ जाति मध्य गुण जौन बखाने ॥ ताको बुरा जाति सब ठाने ॥ २६९९ ॥ तिहं कारण रघुवीर दोहाई ॥ रखो भृत्य गुण गुप्त कराई ॥ सुनत वचन प्रभु हर्ष अघाए ॥ यह गुण आप कहां ते पाए ॥ २७०० ॥ मर्षे शाप नल नील बुझाई ॥ अब मैं जन्म धरा पर पाई ॥ जाहु मुनि प्रतिपाल करावें ॥ मैं तिनका नित द्रव्य लुकावें ॥ २७०१ ॥ गिरे वस्तु जीवन मो जाये ॥ ताते मुनिवर कोप कराये ॥ बोलें जौन वस्तु यह छूसी ॥ मसि कमल ऊपर अस भूसी ॥ २७०२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन रघुपति अति हर्षके बोलें वचन बुलाय ॥ बड़े बड़े गिरि जौन हैं सबको लावें आय ॥ सबको लावें आय वीर हनुमन्त सिधाये ॥ अङ्गद औ सुग्रीव आदि मर्कट बहु धाये ॥ ले ले ग्रावन कोट शीघ्र सागर तट लावें ॥ राम नाम लिखि सेतु वीर नल नील बनावें ॥ २७०३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

प्रथमतः मन्दिर बनवाये ॥ मुनिगण की सीना

मुलवाये ॥ विधिपूर्व्वक अर्घ्य ठ करवाई ॥ कीन स्थाणु स्थापन रघुराई ॥ २७०४ ॥ वेलपत्र विष्णुपदि वारी ॥ लै चर्ढे सुर नर जो नारी ॥ सो भव सागर बन्धन घाए ॥ विष्णुलोक शिवलोक सिधाये ॥२७०५॥ स्थाणु स्थापना करि रघुराई ॥ भये प्रवर गणको समुझाई ॥ शिव निन्दा जो मूर्ख करावैं ॥ सो सठ कुम्भी नर्क सिधावैं ॥ २७०६ ॥ निज ईश्वर लखिके मै भाई ॥ स्थापन कीना प्रीत बढ़ाई ॥ भव निन्दा मम भक्त चलावैं ॥ ताको मै षति दण्ड करावैं ॥ २७०७ ॥ चस भये कोट कोट समुझाए ॥ सेतु काज प्रारम्भ कराए ॥ यह सेतु नल नील बनावैं ॥ ऋक्ष मर्क सब दिवस चलावैं ॥ २७०८ ॥ नल घरु नील काज भल पाए ॥ सब लोगन मरते धर लाए ॥ गुनत दिवस हनुमन्त बतावैं ॥ ताका फल मै षद्य दिखावैं ॥ २७०९ ॥ चस भय मद्य शैल लै घाए ॥ देन लगे तिनको धमकाए ॥ निरखि षद्रि नल नील डराई ॥ भाग प्रभोको हाल जनाई ॥ २७१० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जो कारण मै प्रथमतः निज गुण प्रगट न कीन ॥ सो झाती सब कोप करि वध कारण धर लीन ॥ वध कारण धर लीन भाग निज प्राण बचाए ॥ गुनत वचन

रघुनाथ भणे हनुमन्त बुझाए ॥ तब प्रकार पुल बांध लङ्कको नाश करावैं ॥ आप काहि नल नील वीरको त्रास दिखावैं ॥ २७११ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

शुनत वचन हनुमन्त लजाए ॥ पुन नल नील सेतु पै आए ॥ त्रय जोजन नित त्यार करावैं ॥ वैत्रिस दिन मो सेतु बंधावैं ॥ २७१२ ॥ लग्न प्रभो उत्तम सुधवाए ॥ लङ्का मो प्रस्थान कराए ॥ कटक सहित लङ्का मो आई ॥ घेर लीन गढ़को रघुराई ॥ २७१३ ॥ निरखि कटक लङ्केश डराए ॥ शुक शारण को लीन बुलाए ॥ भणे दुष्ट तिनको समुझाई ॥ बल खितमो रघुपति लै आई ॥ २७१४ ॥ कौन कौन रण मोर सहाए ॥ देखो आप कटक मो जाये ॥ पाणि जोड़ प्रस्थान कराई ॥ पहुंचा खल कपि रूप धराई ॥ २७१५ ॥ चीन्हा सन्त विभीषण आए ॥ पाणि बांधि प्रभुको दिखलाए ॥ मारण लगे भालु कपि धाई ॥ मने कीन प्रभु होय सहाई ॥ २७१६ ॥ कहने लगे नाथ मुशकाये ॥ क्या कारण छलको करि आए ॥ पाणि जोड प्रणिपात कराई ॥ शुक सारण बोलैं समुझाई ॥ २७१७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लङ्केश्वर मुझको प्रभो भेजा देखन हेतु ॥ प्लवग रूपको धारके लखे आय तव सेतु ॥ लखे आय तव सेतु आप चाहे सो कीजै ॥ कहैं प्रभो मुशकाय वास चितसे तजि दीजै ॥ भणे खालसासिंह प्रभो पदमो शिरनाये ॥ काण्ड सुन्दरा नाम पांचवां पूर्ण कराये ॥ २७१८ ॥

॥ कवित ॥

श्रीगुरू गोविन्द सिंह तिनके पदारविन्द मस्तकमो धार और प्रेम चित्त लायके ॥ पूरण काण्डम कीन उत्तम लगन दीन चण्डिका मनाय नवराति शुभ पायके ॥ सम्वत विक्रम तीश शतकम शत बीश बासर ब्रहस्पति तिथि वेद धायके ॥ मिलत अशुभ हर पूरण करत नर मदन गोपाल सिंह खालसा मनायके ॥ २७१६ ॥

इति खालसा कृत रामायणे पञ्चमो सोपान सुन्दरा काण्डम भि समाप्तः ॥

॥ एकं ॐकार सत्यगुरुप्रसाद ॥

॥ श्रीवाहिगुरूजीकी फते है ॥

अथ लंकाकाण्डमभि लिख्यते ।

श्लोक ॥

नमो नानक देवाय ॥ नमस्ते पर्व्वतात्मजे ॥ नमस्ते कुलदे लक्ष्मि ॥ नमस्ते पापहारिणि ॥२७२०॥ अपर्णा पार्व्वती दुर्गा ॥ मृड़ानी चण्डिकाम्बिका ॥ रुद्राणी भैरवी तारा ॥ महादेवि नमोस्तुते ॥ २७२१ ॥ राजराजेश्वरी देवी ॥ सुनन्दा भुवनेश्वरी ॥ महामाया महालक्ष्मी ॥ देवदेवि नमोस्तुते ॥२७२२॥ उमा कात्यायनी गौरी ॥ काली हैमवती शिवा ॥ सर्व्वाणी वरदा भीमा ॥ देवमातर्नमोस्तुते ॥ २७२३ ॥ नमस्ते शान्तिदे देवि ॥ नमस्ते शक्तिरूपिणि ॥ नमस्ते त्र्यम्बके देवि ॥ नमस्ते विघ्ननाशिनि ॥ २७२४ ॥

अथ लावनी चक्र सुदर्शन ।

वाहि गुरूका नाम जपो और ध्यान धरो उनका दिलमे ॥ जन्म जन्मका पाप तुम्हारा नाश होय तनका छिनमे ॥ पन्थ किया जो वाहिगुरूजी उस मारग प्रस्थान करो ॥ निर्व्विघ्नौसे भवसागरको

लांघ स्वर्गमो पैर धरो ॥ छोड़ सर्व अभ्यास यार तुम प्रीति करो उनसे दिलमे ॥ जन्म जन्मका पाप तुम्हारा नाश होय तनका छिन्मे ॥ २७२५ ॥ मात पिता भाई सुत वनिता सुखके सब साथी जानो ॥ विपत पड़ेते काम न आवैं सत्य वचन मेरो मानो ॥ मृत्यु लोकमो जन्म पायके थे मै भी होकर अन्धे ॥ भ्रात कबीला कुटुम यार सब का कीना सेवा बन्दे ॥ विपत पडी मुझपर जब भाई त्रास पाय भागे दिलमे ॥ जन्म जन्मका पाप तुम्हारा नाश होय तनका छिनमे ॥ २७२६ ॥ सम्पतमो सब यार भ्रात दिन रात सदा घेरे रहते ॥ विपत पड़ेते कटू बोल हर वख्त चित्त दुखी रहते ॥ जो जूतीको दांत उठा कर सदां करैं खिदमत भाई ॥ सो विपत्तिमो तर्ज गर्जकी हुकुम करैं नादरशाई ॥ देखि विश्वकी रीति नकारी चेत मूर्ख अबभी दिलमे ॥ जन्म जन्मका पाप तुम्हारा नाश होय तनका छिनमे ॥२७२७॥ मारकाट विश्वास घातकर हरया करैं परधन नारी ॥ अन्त समयमो धर्म-राज धरके तिनका करते ख्वारी ॥ इहां तो उनका भ्रात कबीला सुत जननी धन भोग करे ॥ वहां अकेले आप अपाना पाप शीर्ष धरि भोग मरे ॥ धर्मराजकी न्याव देख शठक्यों न विचार करे दिलमे ॥ जन्म जन्म

का पाप तुमारा नाश होय तनका छिनमे ॥ २७१८ ॥
चक्र सुदर्शन ग्रन्थ गुरूका सार यह्य वार बतलावैं ॥
एक नाम बिन कलि कालूमते मुक्ति नहीं कवहूं पावैं ॥
नेम धर्म आचार व्रत्त चाहे जितना वतना करिये ॥
बिना नामके धर्मकर्म फोकट सबको चितमो धरिये ॥
सिंह मदनगोपाल नामसे प्रीति करो सच्चा दिलमे ॥
जन्म जन्मका पाप तुमारा नाश होय तनका छिनमे
॥ २७२९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लङ्काकाण्डमे भणत हौं शुनो सन्त मनलाय ॥
जाको पढ़ सङ्कट मिटे यमको दण्ड नशाय ॥ यमको
दण्ड नशाय ॥ जन्म सज्जन हरषावैं ॥ यातु वंसको
ध्वंश प्रभो यम लोक पठावैं ॥ भणे खालसा सिंह
दृष्ट गुरुदेव मनाये ॥ जाको भज भव सिन्धु बीच पापी
तर जाये ॥ २७३० ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजीका विक्रम शुक सारणते श्रवण करि लङ्कापति कोपान्वित भये ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुक सारणको रामचन्द्र कहन लगे समुझाय ॥

लङ्कापतिको भाषि जो वाक हमारो आय ॥ वाक हमारो आय कुशल अपनो जो मागे ॥ शरण गहै मम आय छोड़ हङ्कार अभागे ॥ सागरको करि दर्प दुष्ट सीता ले आये ॥ तासो पुल मे बांध वलय लङ्कामो लाये ॥ २७३१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अब रावण क्या करे उपाई ॥ शरण गहै मेरो वह आई ॥ क्षमा करौं ताको अपकारी ॥ शरण परे ताको क्या मारो ॥ २७३२ ॥ चर हत्या राघव नहि करते ॥ त्रास काहि चितमो धरि मरते ॥ शुनिको अभय दान हरषाई ॥ कीना कोट नुती पख भाई ॥ २७३३॥ शीर्ष नाय प्रस्थान कराये ॥ भणे हाल रावण को जाये ॥ श्रवण रूप मैं धार सिधावें ॥ दुष्ट विभीषण देख रिसावें ॥२७३४॥ वध कारण मुझको ले जायं ॥ चर हत्या नहि राम करायं ॥ भणे मुझे दशरथ सुत जोई ॥ पञ्च करू भूभृत मे सोई ॥ २७३५ ॥ यदी कुशल लङ्केश्वर चाहे ॥ शरण गहै मेरो वह आये ॥ सो मे सत्य चितमो ठाना ॥ अति प्राकर्म्म देख वलवाना ॥ २७३६ ॥ शमन तुल्य राघव लखि पाए ॥ कटक असङ्ख देख घवड़ाए ॥ त्रिभुवन यदि तब होय सहाई ॥ तोभी जीति सको नहिं जाई ॥ २७३७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुनत वचन लै खड्गको उठा मारणे धाय ॥ त्रास पाय चर भागके अपनो प्राण बचाय ॥ अपनो प्राण बचाय भूप गड़ ऊपर आये ॥ देख विभीषण शत्रु प्रभोको दीन दिखाये ॥ भणै खालसासिंह आप राघव कर लीना ॥ त्रास पाय प्रस्थान शीघ्र लङ्कापति कीना ॥ २७३८ ॥

अथ शार्दूल निशाचरको तत्त्व लैनेको रावण कर्तृक प्रेरण ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

वीर महोदय भणत हैं शुनो भूप मन लाय ॥ शार्दूलको भेजके वलको हाल मगाय ॥ वलको हाल मगाय भूप ताको बुलवाई ॥ दीना त्वरित पठाय विभीषण शत्रु रिसाई ॥ धरा दुष्टको जाय कीश भालुक सब धाये ॥ मार सहस्रन लात गुथ्थसे पीट बहाये ॥ २७३९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लै करि रामचन्द्र पै आये ॥ नाथ विहस चरको समुझाये ॥ क्या कारण सेवक पठवाई ॥ भूप नित्य

अपमान कराई ॥ २७४०॥ रणमो भेट परस्पर होई ॥ तब निरखैं भुजबल मम सोई ॥ असभण ताको दीन छुड़ाये ॥ चला हर्ष रघुपति गुण गाये ॥ २७४१ ॥ रावणको करजोड़ अलावैं ॥ शुक सारण पर आप रिसावैं ॥ भयो सत्यवाणी सो आये ॥ राघवको को जीति सकाये ॥२७४२॥ खरदूषण आदिक जो मारा ॥ तिनको क्या नृप तुच्छ विचारा ॥ नारायण नररूप धराये ॥ यह मेरे चितमो सच आये ॥ २७४३ ॥ शुन रावण अतिशय भयपाई ॥ विद्युत जिह्वा यातु बुलाई ॥ ताको भयो खूब समुझाये ॥ लाव रामको शीर्ष बनाये ॥२७४४॥ जाको निरख शिया घबड़ाई ॥ मरैं कन्तकी आस तजाई ॥ शुनत यातु झट त्यार कराये ॥ भयो भूप सीता ढिगआये ॥ २७४५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यह तेरो है कन्तका मुण्ड जानकी देख ॥ शुनत वचन माता निरख गिरी शोक करि खेत ॥ गिरीं शोक करि खेत निरख देवन बतलावैं ॥ मायाको शिर देख मात क्यो शोक करावैं ॥ भयो खालसासिंह राम जय कीश चलाई ॥ त्रास पाय दश माथ भवन प्रस्थान कराई ॥ २७४६ ॥

अथ रावण प्रति ताकौ माता निकषा एवं माता मह माल्यवान कर्तृक सत्योपदेश प्रदान

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पतिको मुण्ड विलोकिके सीता अति कलपाय ॥ निशाचरी सरमा भये भूआको तव आय ॥ भूआको तव आय काहि माता कलपावैं ॥ भये जानकी शीर्ष भूप राघवको लावैं ॥ ताको मोतिन निरख शोक बहुता मैं पाए ॥ क्या जानैं है सत्य चाहि मायाको लाए ॥ २७४७ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

शुनि भक्षिन सरमा बतलावैं ॥ ताको तत्त्व अभी मैं लावैं ॥ असभया अगडज गात धराई ॥ उड़की गड़ भीतरमो आई ॥ २७४८ ॥ जहां भूप मन्त्री बुलवाए ॥ करत मन्त्रणा अति भय पाए ॥ जो मैं सीता देहुं फिराई ॥ सुर नर असुर अयश मम गाई ॥२७४९॥ ताते रण करके भल मरणा ॥ रुपुदेख रणते क्या डरणा ॥ शुनत दुष्ट मन्त्री हरषाये ॥ भला भला सब भाष शुनाये ॥२७५०॥ रावणको शुनकी महतारी ॥

पतित कीन चक्षुसे वारी ॥ चरण पकड़ सुतको समुझावैं ॥ नारायण नर गात धरावैं ॥ २०५१ ॥ तिनसौं वैर एव नहि कीजे ॥ ले सीता राघवको दीजे ॥ जाको दुख ईश्वर जब देते ॥ ताकी बुद्धि प्रथम हर लेते ॥ २०५२ ॥ सुनके निकषाकी शुभवाणी ॥ भयो क्रोध करिके अभिमानी ॥ नर वानरते क्या भय पाई ॥ आज बोल मे देहुं खपाई ॥२०५३॥ माल्यवान सुनके बतलाए ॥ राव विक्रम थति सर्व लखाए ॥ तवापी रण जूझ करावैं ॥ राम लखण नहिं तुच्छ लखावैं ॥ २०५४ ॥ सुनत कोप करि भूप अलाए ॥ नाना दूर तिस तुआए ॥ देख नजर नातीको भाई ॥ माल्यवान प्रस्थान कराई ॥ २०५५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब सरमा उठके चली गई जानकी पास ॥ पाणिजोड़ भाषत भई क्यों हो आप निरास ॥ क्यों हो आप निरास प्रभो आनन्द करावैं ॥ कटक सर्वको देख भूप मनमो घबड़ावैं ॥ भयो खालसासिंह भात सीता हरषाई ॥ सरमाको ततकाल कोट आशीस कराई ॥ २०५६ ॥

अथ लंकाका द्वार रक्षा कारण चतुर्दिश कटक प्रेरण एवं राणी मन्दोदरीका रावण प्रति सत्योपदेश प्रदान ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रात होत रावण भयो वगाय सवै बुलवाय ॥ लङ्काकी युग पोर सो कीजै रक्षा जाय ॥ कीजै रक्षा जाय महोदरको बतलाए ॥ दक्षिणमो तुम रहो कोट बलको ले जाए ॥ इन्द्रजीतको भयो दिशा पश्चिममो जाई ॥ रहो कोट लै योध खूब चैतन्य कराई ॥ २७५७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सेनापती प्रहस्त बुलाऐ ॥ तिनको पूरब पोर बताऐ ॥ ले लै चक्रवीर वे धावैं ॥ गढ़की दिश कोचन सब पावैं ॥ २७५८ ॥ दिश उत्तर नृप आप रहायै ॥ ताकाध्वजिमो गना न जायै ॥ मार मार सब यातु चलावैं ॥ भीतरती कपि देख डरावैं ॥ २७५९ ॥ रण वाजा वहु भांत वजाऐ ॥ भूत प्रेत सुनकी भय पाए ॥ मन्दोदरी नारि घवड़ाई ॥ स्वामीको वोलै बुलवाई ॥२७६०॥ कन्त मोह मोपर जो भारी ॥ देह रामको भूमि कुमारी ॥ यामे कुशल प्रभो तव जानो ॥ नर

नहि राम लखण भगवानो ॥ २७६१ ॥ तिनसौं वैर नाथ नहि कीजे ॥ करि अति प्रीति जानकी दीजे ॥ सुन दृशकन्ध विरुध चलावैं ॥ यामै अयश बहुत मै पावैं ॥ २७६२ ॥ जो है राम लखण भगवानो ॥ तो मम मुक्ति प्रिया तुम जानो ॥ यद्यपि नर होवैं रघुराई ॥ तो तिनको मै देखुं अपाई ॥ २७६३ ॥ सुखसे मै निजराज करावैं ॥ सुर नर असुर सु यश मम गावैं ॥ दोनोमे उपकार हमारो ॥ तूं मुझको क्या मूर्ख विचारो ॥ २७६४ ॥ योगोका निजवेश बनाये ॥ सीताको बोला मे जाये ॥ देहु मात भिक्षाको आई ॥ तूं अधर्म चितमो क्या लाई ॥ २७६५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यह सीता निज मुक्तिको नारि निसानी जान ॥ छल करि मै लाए दूहां चित्त मध्य यहठान ॥ चित्त मध्य यहठान भक्ति मुझसे नहि होई ॥ ताते करि मै वैर भक्ति फल पावैं सोई ॥ भणै खालसासिंह दुष्ट भल युक्ति करावैं ॥ करि अनिष्ट खल कोट मुक्ति राघवसे पावैं ॥ २७६६ ॥

——

अथ श्रीरामचन्द्रजीका वानर कर्तृक गढ़ निर्माण ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

लङ्का का गढ़ घेरबो रही बात अब आय ॥ तब राघव सुग्रीवको भयो मित्र तुम आय ॥ भयो मित्र तुम आय कटक युग ओर पठाए ॥ करो किला निर्माण कपू जाते नहिं आए ॥ सुनत वचन कपिराज वेग नल नील बुलाई ॥ पूर्व दिशाको घेर कटक ताका बैठाई ॥ २७६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पुन अङ्गद युवराज बुलाए ॥ तिनको दक्षिण ओर पठाए ॥ सैन्य सहित घेरा बढ़जाई ॥ पुन भूभृत हनुमन्त बुलाई ॥ २७६८ ॥ तिनको पश्चिम ओर पठाये ॥ सङ्ग वलय घेरा बढ़ जाये ॥ पावन बल पुन भूप बुलावैं ॥ तिनको उत्तर तरफ पठावैं ॥ २७६९ ॥ देख किला मनमो नहिं भाए ॥ पुन युग ओर अनीक पठाए ॥ सेना कन्त कुमुद बुलाई ॥ तिनको भूभृत भयो बुभाई ॥ २७७० ॥ पूर्व दिशा नल नील पठाये ॥ यद्यपि भाग वीर बढ़ जाये ॥ तब उन पर तुम होय सहाई ॥ करिहौ समर कटकको भाई ॥ २७७१ ॥

असमभणताको पूर्व पठाए ॥ चक्र सहित घेरा वह जाए ॥ पुन महेन्द्र द्विविद बुलाई ॥ तिनको भी असत्थूय बुझाई ॥२७७२॥ दीना दक्षिण ओर पठाए ॥ औन अगी अङ्गद युवराए ॥ घेरा सैन्य सहित वह जाई ॥ पुन सुषेणको भूप बुलाई ॥२७७३ ॥ तिनको भी भलभांति सिखाए ॥ दीना पश्चिम ओर पठाए ॥ जहां रहे मारुत सुत जाई ॥ तहां सुषेण गयो हरखाई ॥२७७४॥ घेरा चमू सहित वह जाए ॥ और सबं को और रखाए ॥ तिन सबको उत्तर पठवावें ॥ जहां आपको कटक रखावें ॥२७७५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यह प्रकार सुग ओर मे पृतना दयो पठाय ॥ गढ़ रचना कीना भलो राम लखणको लाय ॥ राम लखणको लाय मध्य गढ़की तीष्ठाये ॥ भन्त विभीषण और भालुपतिको बुलवाये ॥ भये खालसा सिंह अमर दर्शनको पावें ॥ निज निज वाहन तिष्ठ प्रभीको प्रणति करावें ॥ २७७६ ॥

———

अथ शिवाशिवका प्रश्नोत्तर।

॥ कुण्डलियाछन्द ॥

चढ़ि मरालकी पृष्ठ पर पहुंचे ब्रह्मा आय ॥ ऐरावतकी पृष्ठ चढ़ि मिलि इन्द्र हरषाय ॥ मिलि इन्द्र हरषाय मकर पर आसिन आये ॥ चढ़ वृषभ आरूढ़ भीम पहुंचे हरषाये ॥ मिली सिंह पर तिह मात चण्डी उत आई ॥ इमी तौर सुर सबं मिलि वाहन चढ़ि धाई ॥ २७७७ ॥

॥ पादकुलक छन्द ॥

कहं लग तिनका नाम लिखावें ॥ शारद जिनका अन्त न पावें ॥ वे विसफोट देख सब आये ॥ किन्नर आदिक मौन रहाये ॥ २७७८ ॥ आपुस मो सब विरघ चलावें ॥ अब सब का उत्तर प्रभु पावें ॥ रहे भीम शुनकी सुधआई ॥ गिरजा चण्डिका मात अलाई ॥ २७७९ ॥ तब शिवका लहा अधिकारी ॥ अर्जे शीर्ष काट दशधारी ॥ तिन पर प्रभो दया नहिं होई ॥ काहि कथा पूछैगा कोई ॥ २७८० ॥ शुन शम्भू बोलें समुझाए ॥ रावण सबं पाप मिटजाए ॥ मुक्ति होय सुरलोक सिधावें ॥ तिह कारण यह युक्ति करावें ॥२७८१॥ यतनो श्रेष्ठ बुद्धि यह पाई ॥ मम प्रसाद जानो गिरिजाई ॥ रावण जितनी पाप

काराधे ॥ ताते दुष्ट नरकमो जाये ॥ २७८२ ॥ मम दर्शनते यह फल पाई ॥ मिले आय तिनको रघुराई ॥ जाको तप करि मुनी न पावें ॥ सो ईश्वर इनके गृह आवें ॥ २७८३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यह प्रकार शम्भू भयो भगडीको समुझाय ॥ सब सब निर्ज्जर हर्षके निज निज भवन सिधाय ॥ निज निज भवन सिधाय विबुध मङ्गल सब गाये ॥ लङ्का मो नर नार सर्व रोवें कल पाये ॥ भयो खालसा सिंह गुरु नानक परतापं ॥ भवसागर ते तरे जीव कटते सितआपं ॥ २७८४ ॥

अथ अङ्गद रायबारि ।

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

वासर चारि वितीत भयो दशमाथ अगारलुकाय रहाए ॥ अंगदको रघुवीर भयो सुत रावणको तुम जावखिजाए ॥ आहव आय करे सुभसि यह ताति करो युगती तुम जाए ॥ नावत ध्यान करो शुनके निज अंगद रावणको शिरनाए ॥ २७८५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

गढ़ की द्वार गये युवराई ॥ द्वार पाल गढ़ कीवत लाई ॥ रामचन्द्र सुभट को पठवाए ॥ समाचार देने कछु आए ॥२७८६॥ भूभुज को यह खबर जनायो ॥ व्याधासन सुभट को बतलायो ॥ भये यातु रावण को जाई ॥ रघुवर की पहुंचे चर धाई ॥२७८७॥ समाचार भाषण कछु आए ॥ कहा भूप भाट लेहु बुलाए ॥ चला यातु लिये युवराई ॥ दूत रावण सबको बतलाई ॥२७८८॥ सभा लोग मन रूप धराये ॥ रहो तिहि थल मग कराये ॥ सुनत वाक्य सब यातु डराई ॥ रावण के सम गात धराई ॥२७८९॥ केवल इन्द्रजीत नहिं धारा ॥ अनत रूप भव होय अपारा ॥ पहुंचे बालिपुत्र तब धाई ॥ रावण कोट निरखि घबड़ाई ॥२७९०॥ पूछे मेघनाद सी आये ॥ यह सब अनत तोर युवराये ॥ धन्य प्रसू मैं तब लखिराई ॥ कान्तकोट ते प्रीति रखाई ॥२७९१॥

॥ मत्त मयन्द छन्द ॥

कौन पिता तव भूवन लोचन जीत बड़ो मन मो गरवाये ॥ कौन पिता तव जूठन भोजन कौन रहा बलि के गृहजाये ॥ कौन पिता तव को धरिके

मम तात पुरीनिज कैद रखाये ॥ कौन पिता तव को भगनी हरवि मधु देत लयो यश पाये ॥२७६२॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कौन जनक तव को युवराई ॥ चञ्चु मने धरि कैद कराई ॥ सांख्यतासि प्रथम कराये ॥ कौन जनक तुम तोर धराये ॥२७६३॥ कौन जनक तेगो गव्वाई ॥ धरि पर्व्वत कैलाश उठाई ॥ कौन जनक तव मिथिला आए ॥ हरको धनुष देख भय पाए ॥२७६४॥ कौन जनक तव वधुको हरवि ॥ रमण करत पावन पर धरवि ॥ सो सब मोको देहु बताई ॥ कौन कौन को काज कराई ॥२७६५॥ यतने जनक तोर मे जागे ॥ हुतां अनेक देख घबड़ागे ॥ तुम सबको भौ सुयश पठाई ॥ मुझको दीजे बेग पिन्हाई ॥२ ६६॥ सुनत कोप करिकै अरमाते ॥ बिन शासन कछु कर नहि सकाते ॥ काज पाय करि मुगल झुकाई ॥ रहा तिष्ठ मुख मौन कराई ॥२७६७॥ दशकन्धर लज्जा बहु पाए ॥ माया को निज भङ्ग कराए ॥ निज निज रूप धरा सबकोई ॥ भये भूप शोभित अति सोई ॥२७६८॥

॥ मत्त गयन्द छन्द ॥

काल कराल फिरे शिरमो तिह कारण कोप

भये बवराई ॥ मार परै यम लोक विषे हम देत तुझ कवका पठवाई ॥ माफ किया पर आन तुझे पुन चौर कधी पस वाक पगाई ॥ काट तुझे तत काल सुनो शठ यातुन को सब देहुं खिलाई ॥२७९९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनत कोप बहुत करि भाषैं ॥ तब सम होय यातु जो लाखैं ॥ तौभी वाणि पुत्र नहिं डारै ॥ मैं चितमो सोई नृप धारी ॥ २८०० ॥ जनक लीन निज तोहि बंधाई ॥ सध्या कीन सिन्धु सुग जाई ॥ पुन किस्किन्ध्यामो लै धाए ॥ कछुक दिवस उत बोह रखाए ॥ २८०१ ॥ मै निज खेलनको नृप जाऊँ ॥ मार मार झापड़ चलि धाऊँ ॥ पितुतै माग पराजय पायै ॥ मै सोई जानी सुन राए ॥२८०२॥ सुनत कोप लहु श्वरकीना ॥ गालि कोट पञ्चहको दीना ॥ चौर भये तिनको नजरीई ॥ ताज दुष्ट तुझको नहि पाई ॥२८०३॥ जीन जनक तेरो धरि घायै ॥ ताकि भृत्य होय करि घायै ॥ परशुराम सुत श्रेष्ठ कहावैं ॥ धरि धरि जनक बपु बह घावैं ॥ २८०४ ॥ बार समक्य प्रथम कराई ॥ पुनि पुनि जनक बपु सब घाई ॥ दुष्ट धधम क्या गर्व कराये ॥ पितु द्रोहीकि दाम कहाये ॥ २८०५ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

अङ्गद कोप करो सुनके पुन गालि करोड़ दयो डपटाई ॥ मारत्यो नृप भूप भये युग यातु धरो पदमी लपटाई ॥ मार निशाचरको वह वीर धरो पुन रावणको गरआई ॥ लातनते तन कूट भलो विधि ताज उतार पयान कराई ॥ २८०६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

रत्न मुकुट रावणको सीमा ॥ नजर जाय रघुबरको कीना ॥ निरखि राम लक्ष्मण हरषाए ॥ कोटन आशीर्वाद कराए ॥ २८०७ ॥ रावणका सब हाल जनाई ॥ प्रश्नोत्तर जो कीन रचाई ॥ गालि करोड़ दीन मै जाये ॥ तातै दुष्ट कोप अति लाये ॥ २८०८ ॥ मम वध कारण शासन दीना ॥ यातु वेद सुभटको धरि लीना ॥ तिन सबको रघुनाथ खपाए ॥ धरा झपट रावणको आए ॥ २८०९ ॥ ताको लातन मार गिरावैं ॥ गिरते मुकुट छीन ले आवैं ॥ सुनत राम लक्ष्मण हरषाई ॥ लीना निज निज कण्ठ लगाई ॥ २८१० ॥ पुन सुग्रीव विभीषण आए ॥ हर्ष हर्ष निज कण्ठ लगाए ॥ और सबैजो प्लवग रचावैं ॥ सो सब आनन्दमूल ले आवैं ॥२८११॥ अङ्गदको प्रशंस करत हैं ॥

चूमत चरण कमल शरणाई ॥ जय जय रामचन्द्र जय भाखैं ॥ शुभ शुभ यातु कलप सब राखैं ॥ २८१२ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

वानर सोम जगाय गयो गढ़ धाम अगार महा गरजाए ॥ दूसर वानर वीर निशाचर मार दयो अति कोप कराए ॥ ताज उतार लयो गिरती महराज वड़ो मनमो शरमाए ॥ यातु सबै यह भांत भयो कविसिंह यथा मति भाष शुनाए ॥ २८१३ ॥

अथ मेघनादका युद्ध एवं श्रीराम लक्ष्मणजीका नागपासमो बन्धन।

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

ताज उतार लयो गिरती तिहं कारण लाज महा वह पाए ॥ पौरसको ततकाल बुझा रण हेतु महीप भयो कलपाए ॥ जीत सुरेश दिनेश लयो यमराज जलेश धनेश डराए ॥ सो नरको बर पाय मुझे सिर ताज उतार प्रहार कराए ॥ २८१४ ॥

पादाकुलक छन्द ॥

ताते मरण भयो युवराई ॥ करी प्रथम रावणसि जाई ॥ प्रथममन: अङ्गदको घाए ॥ पुन रघुपतिको टेकु खपाए ॥ २८१५ ॥ नर बानरते जो दुख पाई ॥ कोट जन्म लग भूल न जाई ॥ असभण कलप कलप बतलाए । मेघनाद भावें गर्जाए ॥ २८१६ ॥ बाज बाजि करि देहुं खपाऊं ॥ क्या कारण पितु शोक कराऊं ॥ इन्द्र बरुण यमको धरि घावें ॥ नर बानर क्या हार गमावें ॥ २८१७ ॥ असभण ध्वजिनी त्यार कराये ॥ समिध हेतु प्रयाण कराये ॥ ;बाजन सबं बाजने लागे ॥ भूत प्रेत शुनकी सब भागे ॥ २८१८ ॥ पहुच्यो पूर्व द्वारमो धाई ॥ मार मार सब कीश पलाई ॥ नल अरु नील अलहको धाए ॥ पटका भूमि असर गण घाये ॥२८१९॥ चला रुधिर नदिकी सम धाई ॥ रणमो भक्ष्य दीन घबड़ाई ॥ भिड़ाहार दक्षिणमो धाये ॥ जहां डटे अङ्गद युवराये ॥ २८२०॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

मारहि मार उचार भिड़े भट बानर यातु महा गरजाये ॥ कीश धड़ा धड़ शैल हनैं अरु यातु सड़ा-सड़ यातु चलाये ॥ ता छबिकी उपमा अतिसे

कबिने पवने मनमे कवि पाये ॥ अगवको अस शैल
कड़ाकड़ नीर भड़े भड़को अब पाये ॥ २८११ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

संख्य परस्पर खूब करावें ॥ वानर गर्ज गर्ज
करि धावें ॥ अस पतङ्ग दीपकमो जरती ॥ तस सब
दनुज प्लवग कर मरती ॥ २८१२ ॥ मेघनाद सन्मुख
चलि आये ॥ ताको पक्ष सारथी घाये ॥ भागा इन्द्र-
जीत भय पाई ॥ छिपा गगण बादलमो आई ॥२८१३॥
कन्त हीन लखि कटक भगाये ॥ घेरो प्लवग चहूं
दिश धाये ॥ मार मार शिवसि वश घाई ॥ कहु
पकड़ धरि पटक मगाई ॥ २८१४ ॥ इन्द्रजीत लज्जा
बहु पाये ॥ सोच सोच करि युक्ति कराये ॥ सन्मुख
समिति न जीति सकावें ॥ मरको भेद बाहूते घावें
॥ २८१५ ॥ असमय नागपाश कर लीना ॥ मन्त्र पाठ
करि प्रेरण कीना ॥ चला फांस अहिरूप धराई ॥
राम लखणको बांध गिराई ॥ २८१६ ॥ जाको भज
भव बन्धन जाये ॥ सो खुद बन्धनमो प्रभु आये ॥ रचा
शोभा कारण रघुराई ॥ कीना यह क्रीड़ा हरखाई
॥ २८१७ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

रोवत भालु कपी कपिराज विभीषण नील सवे

कलपाये ॥ अंगद लखि सुरेश दिनेश महेश गणेश
महा घबड़ाये ॥ स्थावर जंगम जीव जिती जलमे
थलमें सब जीव रहाये ॥ रोवत देख फणी प्रभुको
तनमो लपटाय रहा गरमाये ॥ २८२८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सीताको जयजटा बतावैं ॥ इन्द्रजीत रण यज्ञ
करावैं ॥ ताको कटक प्रबल सब घए ॥ दास पाय
रणभङ्ग कराए ॥ २८२९॥ मेघ पाछमो प्राण बचाई ॥
नागपाश शरट्टीन चलाई ॥ तामें राम लखण लपटाए ॥
गिरे भूमि अबनी तड़फाए ॥२८३०॥ सुनि सीता
अतिशय घबड़ाई ॥ रोवैं हाहाकार कराई ॥ भणे
मात मस्तक पटकाए ॥ मम कारण प्रभु प्राण हराए
॥२८३१॥ निरख अमर सब भाष सुनावैं ॥ व्यर्थ
काहि जननी कलपावैं ॥ नाथ उठें अबही सुनमाई ॥
अस भण दीना पवन पठाई ॥२८३२॥ सो राघवके
कर्ण अलावैं ॥ नाथ गरुड़को याद करावैं ॥ तव
वाहन फणि देखि रिसाई ॥ धरि धरि अहि निज
उदर भराई ॥२८३३॥ सुनत प्रभो झट याद कराये ॥
पहुंचे गरुड़ शस्त्र गर्जाये ॥ चोंच चोंथ फणिके गण
खाई ॥ मुक्त भये ईश्वर पख भाई ॥२८३४ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

देख सुनो सब लोग भये चक भूमिसुता सुनकी हरषाई ॥ फूल लिये करमो सब लोग दिये प्रभुकी शिरमो बरषाई ॥ त्रासभयो सब यातुनको सुनकी दशमाथ महाभय पाई ॥ वानिगुरू पद मारसमो कपि सिंह झुकाशिर माथ लड़ाई ॥ ॥ १८३५ ॥

अथ श्रीरामचन्द्रजी गरुड़भक्तके वास्ते श्रीकृष्ण भगवानका स्वरूप धारण किया ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

श्रीरघुवीर भये हरखी बर देह खगेश सखा मम आई ॥ जोड़ भुजाञ्जल पाय भये खगराज सियापतिको शिरनाई ॥ वाहनको तिह कारण लाज सखा भय पाज दयो रघुराई ॥ सेवकका जब काज पड़े तब सेवक सेव करैं सब भाई ॥ १८३६ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तब ईश्वर तिनको बतलावैं ॥ सेवक तुल्य मित्र नहिं पावैं ॥ सेवक गात प्राण सम जानो ॥ मुझसि

अधिक मृत्यु सम मानो ॥ १८३७ ॥ सिवक स्वामी भिन्न न कोई ॥ पिता पुत्र सम जानो सोई ॥ सुन अगेय मनमो हरषाये ॥ पानि जोड़ प्रभुसे बत-लाये ॥ १८३८ ॥ जो सुभाव प्रभु मोह करावें ॥ कृष्णरूप ततकाल धरावें ॥ यसों इष्ट देव सुखदाई ॥ जाते मुक्ति मिले रघुराई ॥ १८३९ ॥ भये राम लक्ष्मण सुखकाए ॥ निरख प्रवग सब कोप कराए ॥ देवें कष्ट तुम्है बहु भाई ॥ तातै और स्थान चल भई ॥ १८४० ॥ सुन खगेश भाट लीन उठाए ॥ प्राग बलय बाहर चलिआए ॥ वहां प्रभो राघव हरषाई ॥ कृष्ण अनूपम रूप धराई ॥ १८४१ ॥ मोर मुकुट मुरली कर सोहै ॥ बनमाला कुण्डल मन मोहै ॥ पीताम्बर कटि तड़ित लजाए ॥ पञ्चन गरुड़ कीन हरषाए ॥ १८४२ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

भातव जोजनको चलते प्रभुको अपनी मनमें तड़फाई ॥ देखत कोप करें हरिको पुन भाषतहैं खगको धमकाई ॥ गात धरें तुमरे जब नाथ तबें तिनको हम राम बनाई ॥ लि बदला यहको कविसिंह तबै मनते मम खेद नसाई ॥ १८४३ ॥

अथ ससैन्य धूम्राक्ष सेनापति वधः।

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

श्रीरघुवीर सना करिकै खग राज गये मन मो हरखाई ॥ आतन क्रोध चढ़ा प्रभुको तन भीतर आय महा गरजाई ॥ देख भये कपिराज विभीषण कोप जगो जिन कारण भाई ॥ काल भये हनुमान भने प्रभुको खग आपर नाथ बनाई ॥ २८४४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनकी सबं कीश गर्जावैं ॥ कहां दुष्ट खग राज सिधावैं ॥ खोजन लगे चतुर्दिग जाई ॥ प्रभो बुलाय प्रबोध कराई ॥ २८४५ ॥ वहीं भूर धूम्राक्ष बुलाए ॥ कलप कलप भाषत समुझाए ॥ अस बैरी कबहूं नहिं पावैं ॥ मरत मरत पुन प्राण धरावैं ॥ २८४६ ॥ तात प्रात रण चाप करायो ॥ धरि धरिकै बानर नर खायो ॥ सुनत यातु मनमो हरषायो ॥ सामिध हितु निज वलय बुलाए ॥ २८४७ ॥ प्रात होत प्रस्थान करावैं ॥ झूमि झूमि रजनीचर आवैं ॥ तोप नगाड़ा डंफ बजाए ॥ वीणा ढोल मृदङ्ग बजाए ॥ २८४८ ॥ पहुंचे समर भूमिमे धाई ॥ भिड़े द्वार पश्चिममो जाई ॥ युद्ध परस्पर खूब कराये ॥ कहुंक यातु बानर कछु

धाये ॥ २८४९ ॥ अन्य निरख्ख सब प्लवग डराई ॥
भागनको निज जीव उपाई ॥ महावीर सन्मुख तब
धाए ॥ धरि धरि कोटि निशाचर घाए ॥ २८५० ॥
भागे कटक दनुज भयपाई ॥ घेरे प्लवग चतुर्दिश
धाई ॥ कछु भागे कछु प्राण नशाये ॥ धूम्रचक्षु वायुज
धरि पाये ॥ २८५१ ॥ पटक भूमि यम लोक पठावा ॥
निरख अमर मङ्गल सब गावा ॥ देख भग्न पावक
भय पाए ॥ रावणको रथ हाल अनाए ॥ २८५२ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

त्रास भयो मनमो पतिसैं सुनके रथहाल महा
दुख पाई ॥ आवत यातु सबै भय पाय भगो नर
वानर आजि कराई ॥ मार करो रथ यातु पती तब
देखु सिया नरको झट आई ॥ वंश रहे तब दानवको
कपिसिंह भयो मन दीन चिताई ॥ २८५३ ॥

अथ ससैन्य अकम्पन सेनापति वधः ।

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

आय सभासद भूपभये नरवानरको रथ देख डराये ॥
कौन गये फिरके नहि आय कहो अब कौन समीप

करावैं ॥ मौन रहे सुनकै भल दानव और सबे बल मौन रहावैं ॥ सो सुन होय भये तिनको बल मोहिं कहो नर बानर खावैं ॥ २८५४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वीर अकम्पन गर्ज्जं चलाये ॥ मुझको भूप हेतु पठवाये ॥ नर बानर खावैं बल आई ॥ विधि दीना लिखि मोहिं पठाई ॥ २८५५ ॥ सुनत हर्ष महेश चलाये ॥ सत्य सत्य कहा सत्य कहाये ॥ यह कायर सब नाम धरावैं ॥ आप प्रात बानर नर खावैं ॥ २८५६ ॥ सुनत दुष्ट मनमो गरभाये ॥ भट योद्धा कर कौन उठाये ॥ होत प्रगे नित्र फौज सजाई ॥ पहुंच्यो सम्पूर्ण भूआई ॥२८५७॥ अश्वकरी रणमो गर्ज्जाए ॥ पलल लोभ गीदड खग आए ॥ बाजासर्व्वं बाड़ाबाड़ बाजे ॥ सुन सुन वीर परस्पर गाजे ॥ २८५८ ॥ भिड़े द्वार पश्चिममो धाये ॥ मर्कं बातु सब प्रधन कराये ॥ महेन्द्र देवेन्द्र लड़े पख भाई ॥ तिन्हे विद्याधर मार भगाई ॥ २८५९ ॥ पहुचे वीर कुमुद विसाये ॥ तिनकै भी बल मार हटाये ॥ निरखि नील पहुचे गर्जाई ॥ तिनका लोचन चन्द्र सपाई ॥ २८६० ॥ देख वीर मर भङ्ग विसाये ॥ कौना संख्य दनुजसे जाये ॥ द्वारमान रण भङ्ग कराई ॥ पहुचे

बीर पवनसुत धर्ई ॥ २८६१ ॥ धरि धरि दानव गण
पटकाए ॥ पाणि चरण शिर भङ्ग कराए ॥ त्रासपाय
अकम्पन दल भागे ॥ भग्यो अकम्पनको कपि आगे ॥
२८६२ ॥

॥ मत्तगयन्द छन्द ॥

घातन मारि विदारि दये सब देखि त्रिलोक महा
दुख पाये ॥ रावणको रण ढाल भये घर यातु सबै
हनुमान खपाये ॥ शोच करयो सुनिकै पतिसे शठ
और नयो पुन फौज बुलाये ॥ बाढि गुरू हर त्रास
भयो कविसिंह तबै तब पाप नशाये ॥ २८६३ ॥

अथ ससैन्य प्रहस्त सेनापती वधः ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

प्रहस्तनाम सेनापती रावण लियो बुलाय ॥ कम्प
कम्प तासो भयौ मातुल प्रथम कराय ॥ मातुल प्रथम
कराय त्वरित बानर नर घावैं ॥ कह्यो यह राज
और मम बंस बचावैं ॥ बोलि हर्ष प्रहस्त सुभै जो
प्रथम पठाते ॥ तौ भज्नौ सुत काट पाप काहे सन-
पाते ॥ २८६४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

चस भव वीड़ा गीन उठाये ॥ चीर वेद वर वीर बुलाये ॥ महानाद कोपनयग भूमं ॥ महाधनू कारती रण भूमं ॥ २८६५ ॥ कटक सहित पहुंचे सब धाये ॥ प्रात होत रण भूम सिधाये ॥ पहुंचे पूर्वद्वारमो धाई ॥ मार मार भय घोर मचाई ॥ २८६६ ॥ निरखि कटक सब मर्क डराए ॥ समाचार वेदार पठाए ॥ पहुंच वेद बीर झट धाई ॥ समर परस्पर होन लगाई ॥ २८६७ ॥ नल चरु नील भिड़े गर्राये ॥ भागे दनुज कटक भय पाये ॥ सेनापती कछे युग धाई ॥ तिनको धरैं प्रवग युग धाई ॥ २८६८ ॥ महा हनूको हनू धराये ॥ पटकि भूमि यम लोक पठाये ॥ यज्ञधूम माहेन्द्र खपाई ॥ कोपनको देवेन्द्र नसाई ॥ २८६९ ॥ महानादको चङ्गद मारे ॥ मारा निरख प्रहस्त विचारे ॥ पहुंचा प्रधन हेतु गर्राई ॥ धरैं नील नल कोप कराई ॥ २८७० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शीश पकड़ नल भूमिमो ताको दीन गिराय ॥ ले यावनको नील नव दीना ताहि खपाय ॥ दीना ताहि खपाय दुष्ट यमलोक सिधाये ॥ देव लेख खुश होय सर्व प्रभुकि यश गाये ॥ भये खालसासिंह मग्न

बिह्वल तब आई ॥ रावणको रण हाल सबै भाषे अकुलाई ॥ २८७१ ॥

अथ रावणका प्रथम युद्ध ।

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

सुनकी रणहालं पीटत भालं धावत कालं भूप भये ॥ मन्त्रिण बुलवाए विहस चलाए प्रात सिधाए ताहि छये ॥ झट फौज मंगावत स्यन्दन धावत शस्त्र सजावत प्रात भये ॥ रणभूमि सिधावत इष्ट मनावत हाम जगावत कोट गये ॥ २८७२ ॥

॥ भुजङ्गप्रयात छन्द ॥

चले दैतकी फौज बांकी अपारं ॥ लगे नाथकी चोटकं चीक मारं ॥ बजा बाजनं घोरसारे करायं ॥ सबे कानकी कोटको मार खायं ॥ २८७३ ॥ लगी आपकी फौजकी मार भूमं ॥ गये हार टूजे सबे वीर भूमं ॥ भिड़े दौडकी वालिकी आत धाए ॥ चला शैलको फौज भूगी खपाए ॥ २८७४ ॥ हना रावणं रोपको मार भाई ॥ गिरे भूमकी भूमकी बीच धाई ॥ लखे रामकी चोपकी बाण धाए ॥ कहा नाथके आतकी दौड़ धाए ॥ २८७५ ॥ लडं आयकी है सुनो नाथ

मेरे ॥ कहा रामने योग्य है नाहि तेरे ॥ कहा बात की पूतने जोड़पाणी ॥ करूं पाणि मे राखिये मोर बाणी ॥२८७६॥ कहा नाथने दैंतको जीत पायो ॥ सबै फौजको घेरके खूब घायो ॥ चले हो खुशी नाथ को माथनाये ॥ चढ़े कूदके यानके बीच आये ॥२८७७॥ लगे भागने देखके दैंत सारे ॥ चला तातको भूपको बीरमारे ॥ लगा लोटने रावणा लातखाई ॥ उठा बाण ले बीरके गातघाई ॥२८७८॥ गिरे वायुजं भूमके बीच भूमं ॥ भिड़े देखके दौड़के नीलभूमं ॥ धरे नेवलं रूपको वीर नीलं ॥ चढ़े भूपके शीसमो मारकीलं ॥२८७९॥ लगा खोजने नीलको भूप भारी ॥ यहांसे वहां भागके नील मारी ॥ नही देखने बीरको दैंत पाये ॥ महा लाज के बीचमो भूप घाये ॥२८८०॥ लगे मूतने शीसकी बीच नीलं ॥ भिंजा मूतसे भूपको कीन गीलं ॥ गिरा जीभके बीचमो धारजाई ॥ लगा थूकने रावणा लाजपाई ॥२८८१॥ हसे देखके देवता लोग पाए ॥ भगे मूतके बासको नील पाए ॥ भिड़े देखके रामके भ्रात धाई ॥ बडो पाणि कीना लिखे कौन भाई ॥२८८२॥ किया भूपको मारके तीर चीरं ॥ गिरा भूमके यानके बीच बीरं ॥ उठा होशको पायके

शैल लीना ॥ चला रामके भ्रातको चोटकीना ॥२८८३॥ गिरे भूमिमो झूमके नाथ आये ॥ भगे भालु कीशं महात्रास पाये ॥ उठाने लगा नाथको भूप आई ॥ हिलाने सका रोम चंद्रं न भाई ॥२८८४ महा आयके रावणा लाजपाये ॥ हनूमानजी देखके दौड़ आये ॥ भगे गोदमे नाथको वीर लेके ॥ भगे रामको गोदमो आय देके ॥२८८५॥ हना रावणा शैलको मार नाथं ॥ करूं मे उसे जायके आजपाते ॥ लगे रोवने रामओ देख भाई ॥ भिड़े कोपको धारके वीरधाई ॥२८८६॥ लड़े यानमो वैठके यातु आये ॥ हनूमान ले नाथको कांध धाये ॥ लड़े राम शोभा कवी शेष गायं ॥ मनो देवराजं करी वैठ आयं ॥२८८७॥ भगे कोपको धारके नाथ जाये ॥ धरों टीकमाथं अभी तों घाये ॥ रहा मौन वो नाथको नाहिं मारे ॥ हनूमानके माथ वेको विचारे ॥२८८८॥ भलो कैदमो आजमे कीश पाये ॥ नहीफेर ऐसा मिले दांव आये ॥ अभी रामके वोझमो पोद पायं ॥ फसाहै भला मारिए वेग वायं ॥१८८९॥ यही ठानके रोप टीना चलाये ॥ महावीरके गातको खूब घाये ॥ किया वातके पूतने गात भारी ॥ लगी व्योममो जायके पूंछ कारी ॥ २८९० ॥

मग्ना मेजकी देखके त्रास पाये ॥ पड़ी शालिके पुंछकी याहि पाये ॥ लगा कांपने रामजी बाण धारी ॥ दिया सारथी वाजिको चोपमारी ॥ २८९१ ॥ चढ़ा दूसरे यानमें वेग धाये ॥ तबै ऐषिकं बाण ले राम जये ॥ चढ़ा चापमें जोप्र दीना चलाई ॥ गिरा भूमके रावणा बाण खाई ॥ २८९२ ॥ लखा भूपको यातु वेहोश सारे ॥ भगे यान ले सारथी त्रास धारे ॥ लगे नाचने देवके भालु कीशं ॥ भगे दैत सारे मग्ना काढ़ खीशं ॥ २८९३ ॥

॥ त्रिभङ्गी छन्द ॥

पुरं भीतर जाए भूप चलाए मानुष धाए यातु घनै ॥ शुनके दल सारे हिम्मत हारे त्रास अपारे धार मनै ॥ दे करि जा धरणी पूजो चरणी सुरकी करणी करि चंगी ॥ गुरुदेव मनाते सिंह चलाते छन्द बनाते तिरभंगी ॥ २८९४ ॥

अथ कुम्भकर्णका निद्राभङ्ग ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुन रावण सबको भणै कलप अलप समुझाय ॥ जो नन्दी मुझको कहा सो पहुंचा अब आय ॥ सा

पहुंचा अब आय धनदसे प्रधन करावें ॥ आजि जीत मै हर्ष शम्भु अर्च्चनको जावें ॥ मन्दी रोके द्वार मुझे जाने नहि देते ॥ वानरको मुख बोल हांस तिनका मे लेते ॥ २८९५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अतुष्ट होय मन्दो बतलाए ॥ कौश बोल उपहास कराए ॥ प्लवग वंस तव नाश करावें ॥ सो मैं सत्य देख यह पावें ॥ २८९६ ॥ अमर हेतु तप घोर कराए ॥ सो ब्रह्मा दीना नहिं आए ॥ कहा और चाहै सो लीजै ॥ अभ्यामहं जीत वर दीजै ॥ २८९७ ॥ यक्ष पिशाच प्रेत सुर सर्व्वं ॥ जीतो समाघात करि अर्व्वं ॥ नर वानरको भक्ष्य विचारी ॥ वरदीना नहि कुमति हमारी ॥ २८९८ ॥ जाको तुच्छ गनै जो कोई ॥ ताको सत्य हते गो सोई ॥ कुम्भकर्ण गृहमो निज सोते ॥ नहिं जाने मुझ पर क्या होते ॥ २८९९ ॥ ताहि लाव अब पाश जगाई ॥ उदर भरे नर वानर खाई ॥ शुनत यातु सब तूर्ण सिधाए ॥ सदन कुम्भकर्णके आए ॥ २९०० ॥ ढोल दुन्दुभी डम्फ बजायो ॥ कर्ण निकट चितकार करायो ॥ श्वास लगे जाके तन जाई ॥ चले लुढ़क कशनतक धाई ॥ २९०१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुन श्वासं घीचे जबै घुसि नासिका बीच ॥ अब बाहर श्वासा चले गीरे नाकते सीच ॥ गीरे नाकते सीच सटासट हनुम सिधावैं ॥ पुन घींचे जब श्वास प्राण भीतर घुसि आवैं ॥ कीट वार कृश तौर यातु पावैं पुन आए ॥ हार मानकि भगी सबी नहिं कोय जगाए ॥ २९०२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन रावण पुन युक्ति बतावैं ॥ पशु करी सूकर ले आवैं ॥ कर्ण नासिका मध्य हूबाई ॥ दीजे कमल सिन्धुने लाई ॥२९०३॥ जलते मरैं जन्तु घबड़ाए ॥ तब निद्रा वह भङ्ग कराए ॥ शुनत युक्ति सब यातु सिधावैं ॥ गज बाजी सूकर ले आवैं ॥ २९०४ ॥ कर्णं नासिका बीच ढुकाए ॥ पौर उदक बहु दीन भराए ॥ छट पटाय पशु प्राण तजाई ॥ तौभी निद्रा भङ्ग न भाई ॥२९०५॥ शुन रावण पुन कोप कराये ॥ भणे प्रहार करो सब जाये ॥ यातु कोट पहुंचे द्रुत आई ॥ मार मार तन भङ्ग कराई ॥ २९०६ ॥ तौभी नाहि जगाय सकाये ॥ रमणी कोट दीन पठवाये ॥ लेपन तेल मङ्गमो कीना ॥ चन्दन अगर अतर का लीना ॥२९०७॥ मङ्ग मङ्गमो दीन लगाये ॥

कामातुर सब नारि कराये ॥ ताते निद्रा हीन तजाई ॥ उठे वीर धरि रमण कराई ॥ २९०८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुन भोजन मांगन लगे शुक्र शिष्य सब धाय ॥ गजबाजी सूकर महिष हीना कोटन लाय ॥ हीना कोटनलाय वीर प्राशन तब कीना ॥ मदिरा कोटनकुम्भलाय तिनको पुन हीना ॥ भर भरकै जिन उदर भूपसे भेटन जावैं ॥ निरखि लक्ष्मण राम विभीषणसे बतलावैं ॥ २९०९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

कौन वीर कितसे यह पाए ॥ यासौं पाहव जीत न जाए ॥ पाणिजोड़ वह शस्त बताई ॥ मध्यम भ्रात मोर रघुराई ॥ २९१० ॥ कुम्भकर्ण ख्याती सुर द्रोही ॥ षहै षब्द निद्रा वस सोही ॥ वासर भूमि जागरण जानौ ॥ सो दिन प्रलय सृष्टिको मानौ ॥ २९११ ॥ तप करि ब्रह्मासे वर पाए ॥ या सौं कोय न जीत सकाए ॥ जब षकाल निद्रा भंग होई ॥ सो दिन मरे प्रधन करि सोई ॥ २९१२ ॥ षब रघुवीर शुनी मन लाए ॥ षड्मासमो हीन जगाए ॥ पदामृत्यु ताको रघुराई ॥ शुन राघव शिष्ठ सुगवाई ॥ २९१३ ॥ कुम्भकर्ण रावण पै आए ॥

करि आदर भूभुज तिष्ठाए ॥ पूंछे कुम्भकरण गिरनाई ॥ क्या कारण नर जन्य कराई ॥ २८१४ ॥
भये दुष्ट तिनको समुझाए ॥ सुपर्णवाक्य ध्रम नसाए ॥ तिहकारण भयो बतलाई ॥ लायो नरको नारि चुराई ॥ २८१५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ताको दु:ख मै दंबशी धरि योगीका भेष ॥
सीताको गृह लायकै धरी मात सम पेख ॥ धरी मातसम पेख कोप राघवकरि आए ॥ सागरमो पुल बांधि बहुको नाश कराए ॥ भये खालसा-सिंह प्रवर तिनको समुझावैं ॥ नारायण नर रूप धार सब यातु खपावैं ॥ २८१६ ॥

अथ ससैन्य कुम्भकर्ण वधः ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब भ्राता करणी दुरो पाप करत दिन जाय ॥
ताते प्रथम भाषिए क्यों करि वंस रहाय ॥ क्यो करि वंस रहाय भूप सुन कोप कराए ॥ दे गारो धमकाय गर्जके भाष सुनाए ॥ प्रवर भयो मम ज्येष्ठ होय उपदेश करावें ॥ कुम्भकर्ण करजोड़ भूपको भाष सुनावें ॥ २८१७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मै सेवक तेरो सुन भाई ॥ कोनकार मै दीन बनाई ॥ अभ्यागम कहूं कहूं मे आये ॥ नर वानरको खांव खिवाये ॥ २९१८ ॥ सुन सुनता मनमो हरषाई ॥ दीने भूषण काट मंगाई ॥ पट पट मो या सजाए ॥ चढ़ि स्यन्दन प्रस्थान कराए ॥२९१९॥ पहुचे सम्र द्वार भूपाई ॥ निरखि प्लवग भागे भय पाई ॥ सब बीर पवङ्ग समुझाए ॥ अमरपुरको वास धराए ॥ २९२० ॥ रामचन्द्रकी चरण मनाई ॥ अभ्यागम कीजे सब पाई ॥ जीते सुयश विश्वमो पावें ॥ निधन स्वर्गमो बास करावें ॥ २९२१ ॥ दोनो मो उपकार विचारो ॥ कागे समीक यातुसे भारो ॥ सुनकी भालु कीश हरषाये ॥ भिड़न हेतु सन्मुख चलि आये ॥ १९२२ ॥ बाजा सबैं कड़ाकड़ बाजे ॥ सुन सुन बीर मत्त हो गाजे ॥ धम् धम भम् भम् शब्द करावें ॥ हर्ष ग्रध्र गोमायू पावें ॥ २९२३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कुम्भकर्ण निज फौज सों पुर्व्व द्वारकी बीच ॥ भिड़े दुन्द्र भी ठौंकके शस्त्र सबैको खींच ॥ शस्त्र सबैको खींच लड़े मल नील विसाये ॥ धरि धरिके सब प्लवग यातु निज उ र भर.ए ॥ प्राण कर्ष दे

कटक कोश भागी भय पाई ॥ पुन धरि धरिवी दनुज खापनो तुण्ड भराई ॥ २९२४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

दूषी तीर निगलि पुन धावें ॥ निरखि निरखि निर्भर हरषावें ॥ कितनो कटक कोश धरि खावे ॥ कितनो पटकि भूमिमों घाये ॥ २९२५ ॥ गिरे वीर नल मुर्छा खाई ॥ भिड़े नील सन्मुख तब धाई ॥ तिनको कुम्भकर्ण चहु मारा ॥ गिरे भूमि करि भूमि मझारा ॥ २९२६ ॥ भिड़े निरख शरभङ्ग रिसाए ॥ तिनको धरो यातु खिजलाए ॥ धरणी पटकि चपत कराई ॥ लड़ते कुमुदवीर द्रुत धाई ॥ २९२७ ॥ उनको झापड़ मार गिराये ॥ निरखि गन्धम दन खिजलाए ॥ मारा गिरिको खूब घुमाई ॥ लगा दनुज तनमो जस राई ॥ २९२८ ॥ कुम्भकर्ण ताको धरि पाये ॥ कामड़ मार गातको घाये ॥ भगी गन्धमादन भय पाई ॥ भिड़े गवाक्ष गर्जकी पाई ॥ २९२९ ॥ तिनको यातु लात चस मारा ॥ कि च मिचाय करि दन्त पसारा ॥ लड़े वीर चहुद तब धाये ॥ तिनको दंत प्रहार कराये ॥ ॥ २९३० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गदा खाय पछाड़ गिरे रक्त तुण्डते जाय ॥ और मर्कको घरकी कुम्भकर्ण धरि खाय ॥ कुम्भकर्ण धरि खाय बलय भागे भय पाई ॥ भिड़े वीर गज-बली यातु तिनको पटकाई ॥ निरखवीर हनुमन्त गर्ज सम्मुख चलि आयं ॥ भयो परस्पर युद्ध पकड़ तिनको पटकायो ॥ २८३१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मर्कपती सुग्रीव सिधावें ॥ कुम्भकर्ण तिनसे बतलावें ॥ मै बिधिको प्रपौत्र सुन भाई ॥ मुझसे अन्य न जीत सकाई ॥ २८३२ ॥ यद्यपि कोट तोर सम पावें ॥ तौ भी मोर न रोम नशावें ॥ देखो बिक्रम मोर कपीशं ॥ यस भय मयभाग करि धीशं ॥ ॥ २८३३ ॥ तापर धर कपि कम्प चलाए ॥ तासु सम यावन होआए ॥ कुम्भकर्ण भाषें मुसकाई ॥ रोम चन्द्र नहि मोर नशाई ॥ २८३४ ॥ सुनतकोप सुग्रीव करायं ॥ ताको याठा छोर खपायं ॥ कुम्भ-कर्ण पति कोप कराई ॥ मारा यावन चन्द्र चलाई ॥ ॥ २८३५ ॥ चोट खाय सुग्रीव पपारा ॥ गिरे भूमि के भूमि मझारा ॥ पड़े अचेत होय कपिराई ॥ चला उठाय यातु हरषाई ॥ २८३६ ॥ कांधे कुम्भकर्ण ले

आवैं ॥ तबते चेत कीशगति पावैं ॥ पकड़ नासिका कर्ण नशावै ॥ गिरा यातुमनमोअर माये ॥ २९३७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कर्ण नासिका पाणिलि कीना भूप पयान ॥ चन्द्र पलककी बीचमो पहुंचे दल मो आन ॥ पहुंचे दल मो आन देख मर्कट हर्षाये ॥ कर्ण नासिका भूप रामको नजर कराये ॥ देख प्रभो अति हर्ष कोप भूभुजको दीना ॥ कुम्भकर्ण गर्ज्जाय प्रधन आकरि पुन कीना ॥ २९३८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पकड़ पकड़ शाखामृग खावैं ॥ लखत बलीमुख देख डरावैं ॥ लक्ष्मण बाण पाणि लै आए ॥ तिनसि कुम्भकर्ण बतलाए ॥ २९३९ ॥ तुम क्या लड़ो साथ मम भाई ॥ रामचन्द्रको देहु पठाई ॥ सुनत गर्ज रघुपति चलि आये ॥ खूब परस्पर रोप चलये ॥ २९४० ॥ धरगो बलीमुख यातु रिसाई ॥ उदर भरगो पुन और धराई ॥ निरखि राम अति कोप कराये ॥ छोड़े ब्रह्म अस्त्र गर्ज्जाये ॥ २९४१ ॥ ताते दक्षिण पाणि खपाई ॥ अगो यातु मनमो शरमाई ॥ पुन राघव ऐषिक शर लीना ॥ ताते काट वाम कर दीना ॥ २९४२ ॥ इन्द्रबाण पुन नाथ चलाए ॥ ताते

मारथा युगल धरिघाए ॥ तौ भी दुष्ट न प्राण तजाई ॥ घरा राहुकी सम धाई ॥ २८४३ ॥ भागी राम लखण घबड़ाए॥ ब्रह्म अस्त्र पुन राम चलाये ।। काटे मुराड बाण वह जोई ॥ गिरा यातु धरणी तड़फाई ॥२८४४॥

॥ कुराडलिया छन्द ॥

ले ले करमो पुष्पको अमर सर्व्व हरषाय ।। रघुनन्दनको अस्त्रैंश भौर भर्ण शिरनाय ।। भौर भर्ण शिरनाय प्रभो भल कष्ट कटाये ।। इनसे कबहुन चैन देव हम लोगन पाये ॥ भर्णै खालसासिंह भग्न अपसर्प शिधाई ।। रावणको रण हाल सर्व्व भाषें कलपाई ॥ २८४५ ॥

अथ ससैन्य रावणके चार पुत्र एवं नाते गीतके युगल भ्राता वधः ।

॥ गजल ॥

शुनकर बिराटर मौतको रावण बहुत् गमको किया ॥ रोने लगा अफसोस कर मोहका जगा तुझको दिशा ॥ २४४६ ॥ भाई गमी हूं मे कमाई

षे बिरादर जानिये॥ तेरे जुदाईसे भया पागल बड़ा मेरा हिया॥ २८४७॥ तूं जीतके त्रैलोकको झट बारव: मुझको करो॥ अब छोड़के हमको बिरादर राह तूं अपना लिया॥ २८४८॥ मुझको भी अपने साथ मे ले कर चलो अब जलदसे॥ तेरी मै खिदमत्को करूं तब हो सवर मुझको मियां॥ २८४९॥ सिंहसायेर गजल अन्दर बोलते रावण शुनो॥ दिन चारमे तेरे भी तनका आवेगा छियाछिया॥२८५०॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असमय भूप वहुत कलपावें॥ पटक शीर्ष धरणी घवड़ावें॥ निरखि वेद आत्मज चलि आयें॥ लेकरि गोदभवे समुझाये॥ २८५१॥ क्या कारण पितु शोक कारावें॥ अदा प्रवग नरको धरि खावें॥ शुन भूभुज अतिशय हरषाये॥ मानहुं प्राण अनुजपुन पाये॥ २८५२॥ अश्वकरी स्यन्दन मगवायं॥ शस्त्र हस्त दे वलय सजायं॥ भूषण वसन सवं मंगवाये॥ रचि रचिके सुतको पहिराये॥ २८५३॥ बाजा सवं कड़ाकड़ बाजे॥ मार मार अधमभय माजे॥ प्रात होत युगपुत्र रिसाये॥ कटक सहित प्रस्थान कराये॥ २८५४॥ तत्त्वपाय सुतको सब साई॥ मारगमो आघात कलपाई॥ कुम्भकर्णको

और खपाये ॥ तिनसे पुत्र लड़ो जिन जाये ॥२८५५॥ बच मति छिन्न भूपको होई ॥ जाते पुत्र भेजते सोई ॥ पातमज और कहा यह कीजे ॥ बचन कुबेर असुरकालीजे ॥ २८५६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनत प्रभुकी वचनको पुत्र सर्व सकुचाय ॥ बड़ न और भाषत भये क्या मुझको सिखलाव ॥ क्या मुझको सिखलाय इन्द्र यमको धरि मारैं ॥ नर-वानर क्या चारमारकी मध्य विडारैं ॥ तोरभगुरको जीत जनक पुष्पकले पाये ॥ ताकीसिवैं ऋक्ष वान बोलत नहिं पाये ॥ २८५७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभय भाल वेद धमकाई ॥ सुनत प्रभू सब त्रास धराई ॥ फिर पाई रुद्रन कलपाये ॥ देवक-नाम महोदर पाये ॥ २८५८ ॥ तिनको मारि सर्व-समुझाई ॥ सुत रक्षा कारण पठवाई ॥ महापाल देवखुलवाये ॥ तिनको भी रण भूमि पठाये ॥२८५९॥ यह चे वीर राग गर्जाई ॥ भिड़े हार दधिचमोचाई ॥ उनसे पञ्चदबोर भिधाये ॥ इतसे यातु नरान्तक आये ॥ २८६० ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ भूमि-कम्प सम भूमि हिलाई ॥ पदको पकड़ि वालिसुत

लावै ॥ पटकि भूमि पर वीर खपावै ॥ २९६१ ॥ देख देवान्तक कोप कराई ॥ पहरको वेग उपटाई ॥ मारमार कर भूमि गिराये ॥ कोटि वालिपुत्र तल- फाये ॥ २९६२ ॥ निरखि पाशुगन कोप कराई ॥ मारो लाखि गर्जके पाई ॥ देवान्तक यमलोक सिधाए ॥ पहुंचे वीर महोदर पाए ॥ २९६३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

फौज चतुर्हिंग भेजके घेरा यातु रिसाय ॥ हनूमानको दौड़के धरा महोदर पाय ॥ धरा महोदर पाय नील रावनसे धाये ॥ मारा ताहि घुमाय यातु यमलोक पठाये ॥ करो कोप वैशिरा नील पर खड्ग चलाई ॥ धरो कूद हनुमन्त तेग ताको लैघाई ॥ २९६४ ॥

॥ पाद्राकुलक छन्द ॥

महापार्श्व लखि कोप कराये ॥ घेरा गर्ज्ज हनूको आये ॥ मार मार वानर बहु धायं ॥ निरख भक्ष रथ कीश करायं ॥ २९६५ ॥ पहुचे मर्क वरुण सुत पाई ॥ हेमकूट शुभ नाम रहाई ॥ तीन समर कीना चल पाये ॥ सो मुझसे नहिं भाष सकाये ॥ २९६६ ॥ चल धरि धरिके यातु खपाई ॥ अस कृपाल तयड़ुल तरु धाई ॥ हेमकूट गिरिचन्द्र

चलाये ॥ ताते महापापको घाये ॥ २८६७ ॥ भागे यातु वलय भय पाई ॥ गरुड़ निरखि अस उरग पलाई ॥ पतीआय लज्जा बहु पाये ॥ भिड़ा दौड़ सम्मुख हूत घाये ॥ २८६८ ॥ ताको गात पश्य भय पाई ॥ भागे भालु मर्व घबड़ाई ॥ अन्त विभी-षणको बुलवाये ॥ पूछें राम लषण मुसकाये ॥ ॥ २८६९ ॥ चक्रिन दिव्य तिष्ठको घायो ॥ अति-शय रूप कठोर धरायो ॥ पाणि जोड़ तब अन्त बताए ॥ पतीआय रावणसुत आए ॥ २८७० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

जब भुमिष्ठ सुत बर भयो भात गातको देख ॥ पतीआय ध्य ती धरो पश्य डरैं सब लेख ॥ पश्य डरैं सब लेख पाप नहि पुत्र करावें ॥ प्रविट्टारण करि जीत विभुवनको सुत पावैं ॥ गात धरे निष्पाप तेज ताते रघुराई ॥ लक्ष्मणको पठवाय प्रभो सुत देहु खपाई ॥ २८७१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पस भण अन्त भणे समुझाये ॥ तबते निकट पतीतन पाये ॥ पश्य विभीषणको शिरनाई ॥ कश जन्म निज सुफल कराई ॥ २८७२ ॥ निश वासर प्रभु साथ रहावैं ॥ जाको तपो न तप करि पावैं ॥

जस भव रामचन्द्रपे पाये ॥ मग्न होय करजोड़ चलाये ॥ २९७३ ॥ श्याम चरणमो दान कराई ॥ नाम श्यामव लेइ रखाई ॥ भये राम अत्यन्त सुखकाये ॥ तब सम भक्त देख नहि पाये ॥ २९७४ ॥ राज पितृव्य सायमो कीजे ॥ यह वरदान तात मम कीजे ॥ भाषेँ जतोगात शिरमाई ॥ करौं राज क्या लै रघुराई ॥ २९७५ ॥ यह वरदान मुझे प्रभु दीजै ॥ संस्फोट तब साथ करीजे ॥ तब करती निज प्राण तजाई ॥ रटिशौं तब ख्यातो सुखदाई ॥ २९७६ ॥ सुन रघुपति भाषे सुखकाये ॥ दौना जो माग्यो वर पाये ॥ लक्ष्मणको रघुनाथ पठावैं ॥ संख्यपर-स्य घोर कराबैं ॥ २९७७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अग्नि बाण पढ़ि दैतने दौना शीघ्र चलाय ॥ वरुण बाणको छोड़के दौना नाथ खपाय ॥ दौना नाथ खपाय यातु गज रोप चलाए ॥ पञ्चानन शर छोड़ नाथ दौना द्रुत घाए ॥ छोड़ा यावन रोप यातु अतिशय गर्व्वाई ॥ पाशुग पाशुग छोड़ प्रभो पाशुग बहवाई ॥ २९७८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

इमी तौर बहु अन्य करावे ॥ कोय न काको

जीत सकाये ॥ अविलम्बित आशुग तब आई ॥ लक्ष्मणको वह युक्ति बताई ॥ २९७९ ॥ तनमो अजय कवच धराये ॥ ताते शस्त्र न घात कराये ॥ ब्रह्म अस्त्र बिन शस्त्र न कोई ॥ मार न सकै प्रभो शुन सोई ॥ २९८० ॥ शुन लक्ष्मण मनमो हरषाये ॥ ब्रह्म अस्त्र पढ़ि मन्त्र चलाये ॥ चला रोप विद्युत सम धाई ॥ काट मुण्ड पद टूक कराई ॥ २९८१ ॥ गिरा शीर्ष धरणीमो आये ॥ राम नाम भव शोर मचाये ॥ निरखि विभीषण शक्त चलावैं ॥ धन्य धन्य सुत जन्म धरावैं ॥ २९८२ ॥ यातुधान कुल सुफल कराये ॥ तव सम श्रेष्ठ पश्च नहिं पाये ॥ अस भय कोट नुतीकरि भाई ॥ क्रन्दन करत घोर कलपाई ॥ २९८३ ॥ जय जय भालु मर्क सब भाषैं ॥ धन्य धन्य निर्झर गण आखैं ॥ भग्न प्रणिधि अतिशय भय पाई ॥ रावणको रण हाल जनाई ॥ २९८४ ॥

॥ गजल ॥

फरजन्दकी शुन मौतको राजा जमीं पर गिर पड़ा ॥ है ठोकता छाती धड़ा धड़ बोलता फिर कड़ मड़ा ॥ २९८५ ॥ जो हमारे पियारको मारा उसे मारूं अभी ॥ जो हमारे जिगरका मिट जायगा

सब गड़बड़ा ॥ २९८६ ॥ सुनके इन्द्रजीतने बोला सुनो मेरे पदर ॥ सर बांदराको आयके मारूं सभी मे रड़ पड़ा ॥ २९८७ ॥ फरअन्दके सुन बातको रावण बहुत होकर खुशी ॥ गोधा लिया ले गोदमें उठ कर जमीसे फड़ फड़ा ॥ २९८८ ॥ सिंह सायेर शेरका बर मागता रघुबीरसे ॥ गा गाके तेरे नामको पापीको देवें घड़ बड़ा ॥ २९८९ ॥

अथ इन्द्रजीतका द्वितीय बार युद्ध गमनोद्योग ।

॥ लावनी चक्रसुदर्शन ॥

चला जनकको नमस्कार कर जननीके सम्मुख आये ॥ अवे प्रभुको जोड़ भुजादल पाद पद्म मो शिरनाये ॥ प्रश्नहेतु मम जनक पठाये भेट-नको जननी आये ॥ मन्दोदरि सुन पकड़ पुत्रको भाषत है यति अकुलाये ॥ समर छोड़ सुत रहो हमारे पास नहीं देवें जाये ॥ अवे प्रभुको जोड़ भुजा दल पाद पद्मको शिरनाये ॥ २९९० ॥ जगमो निन्दा होय महा अरु मात पिता दुखको पाई ॥

तिस्कारण मै लडूं आय नर वानरको खाऊं
धाई ॥ धाय पकडु पुन भयो मन्दोदरि तास
सुनी चितमोलाई ॥ नर नारायण रूप धारके पहुंचे
लङ्कामो धाई ॥ उनसे संग्राम जीत नहि जाये पुत्र
सुनी मनमों लाये ॥ भयो प्रभूको जोड़ भुजा दस
पाद पद्ममो शिरनाये ॥ २९९१ ॥ जो भगवान
होयँ सुन माई तो मेरो मुक्ती जानो ॥ यातुवंशको
भाग बड़ो है मात सत्य चितमो ठानो ॥ यद्यपि
नर वानर हैं माता बाप सांच दिलमों मानो ॥
मै चुन चुनके एक एक नर वानरको धरि धरि
हानो ॥ इनमो दोनो तौर जीत है चौर विश्व
यशको गाये ॥ भयो प्रभूको जोड़ भुजा दस पाद
पद्ममो शिरनाये ॥ २९९२ ॥ मेघनादके वचन श्रव-
णकर रोवत रानी बिलपाई ॥ देख बहू सब चरण
पकड़के भयो शोकको समुझाई ॥ कौन कौनको
पुत्र जगत्‌मो कोशाको जननी माई ॥ कधी पुत्र हो
पिता शोभंजो कधी पिता सुत होजाई ॥ यह
विधिको व्योहार बन्यो है सत्य वचन मै बतलाये ॥
भयो प्रभूको जोड़ भुजा दस पाद पद्ममो शिर
नाये ॥२९९३॥ क्या बैठो तूं शोच रहो है नरवानर
ते घबड़ाई ॥ अब्ब कातू मार हतूं जाय नर वानर

को धर ले भाई ॥ रही मौन राखी सुन बाखी मेघ वस्तु सब मगवाई ॥ बगा बस्त्र धरणेको पायी छाग महिष बहु कटवाई ॥ शिवरको पावकते पामर हर्ष कौट सम्मन पाये ॥ भखे प्रभुको जोड़ भुजादल पाद-पद्ममो शिरनाये ॥२९९४॥ पुन मन्दोदरि भखे पुत्रको रजनीमो जिन समर करो ॥ पच बन्धु सबकी तनका सुत बन्धुपरूपो रोग हरो ॥ प्रात होनते फौज साथ ले समर भूमिमां पैर धरो ॥ धरि धरि बन्दर भक्ष सर्बको यातुधानके उदर भरो ॥ सुन जननीकी बाक रणौसे मेघनाद पर्ति गरमाये ॥ भखे प्रभुको जोड़ भुजादल पादपद्ममो शिर नाये ॥ २९९५ ॥ रजनीमो माता नर बानर भालुक सोवत हरषाई ॥ चोरीमे जाकरके सबको मारूं पुन घर माई॥ सुन राखी बोलत नहिं बाखी रोवत मनमो कगपाई ॥ जननी पूजने गौरीशङ्कर जाते पङ्कज बच पाई॥ मेघनाद रणभूमि बीचमो पहुंचा स्यन्दन चढ़ धाये ॥ भखे प्रभुको जोड़ भुजादल पाद पद्ममो शिरनाये ॥ २९९६॥ चक्र सुदर्शन भखे शिष्य वर निन्दकको पाशीस करैं ॥ जिनके रसना बलते सेवक निज कलूषते पार परैं ॥ जैसा धोबी पटक पटकके बस्तरका मल साफ करैं ॥ तैसा निन्दक पाप सर्बको करि करि निन्दा माथ

धरैं ॥ सिंह मदनगोपाल देखनी निर्भयकी मति लगाये ॥ भये प्रभूको ओढ़ भुजादल पाहनमो सिरनाये ॥ २९९७ ॥

अथ इन्द्रजीतका द्वितीयवार युद्धारम्भ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पर्वराजिकी मध्यमें इन्द्रजीत गर्ज्जाय ॥ चढ़ि स्यन्दन कर शस्त्र ले पूर्व्वद्वारमें आय ॥ पूर्व्वद्वारमें आय निरखि नल नील पराये ॥ अबँ निशाकी बीच दुष्ट मारण क्यों आये ॥ बासरमें रणछोड़ बीरकोरूप धराई ॥ भगे प्रधन युवराज आज तोको नहिं पाई ॥ २९९८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तीर अमलको मार खपावैं ॥ छल विभीषण शीर्ष धरावैं ॥ अमनी तीर छोर युवराई ॥ शक्त विभीषण कण्ठ लगाई ॥ २९९९ ॥ तब हमलोगन चैन करावैं ॥ यह अपनो मै परण बतावैं ॥ शुनके मेघनाद गर्ज्जाये ॥ छिपा गगण बादलमो धाये॥३०००॥

बाण हति करिषी युवराई ॥ होना सब बानर हर्ष पाई ॥ रक्त पाद पत तुगड अपाये ॥ लोटैं भूमि श्रवण तड़फाये ॥१००१॥ छटपटाय तन त्याग कराई ॥ निरखि यातु प्रतिमय गरुआंई ॥ भये हार दक्षिणमो आये ॥ कौन वीर देवे रण आये ॥ १००२ ॥ सुनकी शब्द कोपकराई ॥ भवै दोड़ सन्मुखमो आई ॥ वीर तुम्हे शठ कौन मचाये ॥ घोर यामिनीमो सब आये ॥ १००३ ॥ निशवांसर नहि शयन करावैं ॥ जबते तोरजमय नहि पावैं ॥ तुमको घोर संशतन पाई ॥ तबतु विभीषणको लीठाई ॥ १००४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तब अमणीको पकड़के वाम तरफ बैठाय ॥ राज-छत्र देवें जबै तब निद्रा मम आय ॥ तब निद्रा मम आय क्रोध सुन यातु कराये ॥ सभ मध्य मो आय वचांसि रोप चलाये ॥ श्रवण सवननचार यातुको पथ्य न पावैं ॥ करि करिके संस्फोट असुर बानरगण धावैं ॥ १००५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तड़फड़ाय तनत्याग कराई ॥ निरखि दुष्ट मन-मोहरषाई ॥ दशानन सम शब्द कराये ॥ उत्तर-

द्वार हर्ष चलि पाये ॥ १००६ ॥ उठी धूमचमू घब-
राई ॥ चोर उठे सुग्रीव रिसाई ॥ निरखि यातु
को भूप पठाए ॥ चोरात्मज चोरो ते धाए ॥१००७॥
वानरमो रण घोर करावें ॥ तस्कर रावि होमती
पावें ॥ यह कारण निद्रा तजवाए ॥ निशवासर
वन जाग रहाए ॥ १००८ ॥ जब ते लङ्कनाथ नहिं
पावें ॥ अन्त विभीषण तत्वत् न पावें ॥ प्रभु और
अब कष्ठ लगाई ॥ सोवें साधु विभीषण आई
॥ १००९ ॥ तब कमलोगन ग्रहन करावें ॥ शुनत
कोप करि यातु सिधावें ॥ चढ़ा नभस अतिशय
गर्जाई ॥ मार मार मार्गण बरषाई ॥ १०१० ॥
मरें प्रवग दल अतितड़फाए ॥ निरखि हर्ष रावण
सुतधाए ॥ भिड़ा द्वार पश्चिममो धाई ॥ जहां
विश्वकर्त्ता रघुराई ॥ १०११ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

उठे पवन सुत गर्जके मेघनाद भयपाय ॥ छिपा
व नाहक मध्यमो थरथर गात कराय ॥ थरथरगात
कराय अविभ्रम दृष्टि करायें ॥ जब कपी जित
औन सर्वको मार खपाये ॥ अर्द्धचन्द्र खुरपाश्र्व बाण
पक्ष यातु चलाई ॥ रामलखणको मार दुष्ट वैहोम
कराई ॥ १०१२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

अभ्यागमदंजोत गृह आए ॥ भये अनन्द परमो शिरनाए ॥ लक्ष्मण बैरी सबघाई ॥ सैन्य सहित रघुनाथ सुपाई ॥ ३०१३ ॥ अङ्गद नील बिभीषण घाये ॥ हनूमन्त सुग्रीव मगाये ॥ जाम्बवान अरु सब जेते ॥ यमसौं भेट कीन पितु तेते ॥ ३०१४ ॥ हार बिधो शिर नौन रहाए ॥ पुनि पुनि प्रबल अलगण घाए ॥ शुनि लक्ष्मण महा हरषाई ॥ पट-भूषण दीना बहुलाई ॥ ३०१५ ॥ लै गोदी चूमन शिर लागी ॥ पौर नगर रच करि बहु पागी ॥ लाख लाख आशीस करायो ॥ कै प्रसाद सुत भवन सिधायो ॥ ३०१६ ॥ प्रसू पद्मपदमो शिर नाई ॥ प्रथम कथा सब विहस चलाई ॥ जनक अरु पुनय कारि मे आए ॥ पितु प्रसाद जननी यह पाए ॥ ३०१७ ॥ शुन रात्रो अतिशय हरषाई ॥ कोट कोट आशीस कराई ॥ जो जो थी प्रभु अन्त मगाए ॥ सो सो नार शुनत हरषाए ॥ ३०१८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सबको दैत प्रबोध दे निज मन्दिरमो आय ॥ दौड़ दौड़ पती सबै निज निज कण्ठ लगाय ॥ निज निज नाथ अबाय प्रभो तुमको मै पायो ॥ धन्य हमारी

भाग कटपु यम लोक पठाये॥ भये खालसासिंह दनुज शोभा असपाई॥ तारा गणकी मध्य चन्द्र सोहै जस भाई॥ २०१९॥

अथ ससैन्य महाराज रामचन्द्रजीका मूर्च्छा निवारण।

॥ कुण्डलिया छन्द॥

ब्रह्माके वरदानते बचे विभीषण श्रन्त॥ सीताको वर पायके उठे वीर हनुमन्त॥ उठे वीर हनुमन्त परस्पर युक्ति करावैं॥ कौन तरे भगवन्त बहुरि जीवन पुन पावैं॥ जामवन्तके निकट वीर पहुंचे असगाये॥ गात अचेतन देख विभीषण श्रन्त चलाये॥ २०२०॥

॥ पादाकुलक छन्द॥

उठके मन्त्रो मन्त्र बतावैं॥ जाते प्राण दान प्रभु पावैं॥ जामवन्त भाषत कलपाये॥ अन्त समय पहुंच्यो मम आये॥ २०२१॥ अब क्या भूभुज मन्त्र बतावैं॥ अथवा स्वर्गलोक मे पावैं॥ यद्यपि बचे पवनसुत भाई॥ तौ बल सहित उठैं रघुराई॥ २०२२॥ सुनत

विभीषण शस्त्र चलाए ॥ बान लगाय मति छिन्न कराए ॥
देखहु पवन पुत्र तब आगे ॥ सुनत ऋक्षपति देखन
लागे ॥ १०२३ ॥ महावीरको निकट बुलाई ॥ अर्थि
भानु कहन समुझाई ॥ गिरि कैलाश परओ मेरु ॥
ऋष्यमूक ख्याती उत हेरू ॥ १०२४ ॥ तापर औषध
हैं युग भाई ॥ सुन ख्याती ताका मन लाई ॥ अस्तो-
संधारिणी कहावैं ॥ सो अस्तोको जोड़ लगावैं॥१०२५॥
विशल्य करणि जो अगद कहाए ॥ सो तनका सब
दर्द नशाए ॥ सुवर्ण करणि भेषज बतलाई ॥ ताते
तनका अङ्ग हो जाई ॥१०२६॥ मृत्युसञ्जीवनी बतावें ॥
सो पुन जीवन दान करावें ॥ यह औषध निशमी
ले आई ॥ कटक सहित रघुनाथ बचाई ॥ १०२७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

त्रिभुवनमो यश राखिये सुनो बीर हनुमन्त ॥
असमय करि भालुक पती, कीना तनका अन्त ॥
कीना तनका अन्त निरखि हनुमन्त सिधाए ॥ ऋष्य-
मूक पर बीर दृष्ट भीतर चलि आए ॥ खोज खोजकी
थकी शैल बूटी नहि पावें ॥ यावनको करजोड़ नुती
करि भाष सुनावें ॥ १०२८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जगमे अपनो सुयश रखाओ ॥ दे बूटी प्रभु

काज कराये। ॥ अचल दुष्ट हङ्कार कराई ॥ रहा भोम नहिं दीन बताई ॥ २०२९ ॥ महावीर तब कोप कराए ॥ धरि पर्वतको गर्ज चलाए ॥ तब सम कोट सिन्धु धर बोरा ॥ प्रभो कार्य्य लगिँ कौन निहोरा ॥ २०३० ॥ तूं पामर मनमो गरभाए ॥ तुझको भी शठ देहुं डुबाए ॥ अस भण गिरिको लीन उठाई ॥ धरि मुनिरूप भयो धर आई ॥ ॥ २०३१ ॥ क्षमा मोर अपराध करावें ॥ यह झूटो तो कर युग जावें ॥ अस भण कोट नुती करि भाई ॥ दे भेषज निज प्राण बचाई ॥ २०३२ ॥ हर्षवीर प्रस्थान कराये ॥ दण्डमध्य लङ्कामो आये ॥ अस्थी सञ्चारिणी सुंघाई ॥ सबका अस्थी दीन जुटाई ॥ २०३३ ॥ विशल्य कर्णिको प्राण लगाए ॥ सबके तनका दर्द मिटाए ॥ सुवर्ण करणिको दीन सुंघाई ॥ हेम तुल्यसो गात कराई ॥ २०३४ ॥ मृत्यु सञ्जीवनी सुंघाए ॥ ताते प्राण दान सब पाए ॥ रामचन्द्र लक्ष्मण हरषाई ॥ सैन्य सहित उठ करि बतलाई ॥ २०३५ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

धन्य धन्य हनुमन्त धनि तव सम भक्त न कोय ॥ क्या तुझको देवें सखा मम शरीर तव होय ॥ मम

शरीर तब होय वीर गुन शीर्ष निवाए॥ राम लक्ष्मण पकड़ पाश्वी कण्ठ लगाए॥ भने खालसासिंह विनय मेरी गुन लीजे॥ धरि गुरु नानक रूप प्रभो दर्शन निज दीजे॥ १०२६॥

अथ लङ्कादग्ध।

॥ कुण्डलिया छन्द॥

प्राण दान रघुनाथके गुन कलेश हराय॥ भये सभासद्‌को महा करि क्रन्दन कलपाय॥ करि क्रन्दन कलपाय प्रधन को जीत सकाये॥ मर मरके नर कहत मनों जीवन पुन पाये॥ प्राण महाधन तानि काज ताते यह कीजे॥ लङ्का को करि द्वार बन्द मारंग नहि दीजे॥ १०२७॥

॥ पादाकुलक छन्द॥

सुनकै सब कायर हरषाए॥ गढ़को द्वार बन्द करि आए॥ सुखसे बासर रैण कटायो॥ मानहुं जन्य जीत ग्रह पायो॥ १०२८॥ वहां राम लक्ष्मण सुखदाई॥ भये सर्व्व मंत्री बुलवाई॥ संख्यजीत लङ्केश का आये॥ गढ़ भीतर सोती हरषाये॥ १०२९॥

शुन सुग्रीव भयो शिरनाई ॥ लंकाप्रभी कायर भय पाई ॥ जामवन्त पुन विहस चलायं ॥ लङ्का दहन करौ रघुरायं ॥ ३०४० ॥ तव पामर संग्राम करावें ॥ सत्य युक्ति रघुवीर बतावैं ॥ भला भला शुन सभा चलाये ॥ गर्ज्जं गर्ज्जं सब बीर सिधाये ॥ ३०४१ ॥ उछल कूद गड़ भीतर जाई ॥ दे दे पावक गेह जलाई ॥ धरि धरि यातुधामको कीशं ॥ फोड़े पटकि चञ्चिमो शीसं ॥ ३०४२ ॥ भागीसब युवती भय पाई ॥ धरि धरि ऋक्ष मर्कं ववराई ॥ करैं उलङ्ग छोड़के सारी ॥ धरि कपोल कामड़ चस मारी ॥ ३०४३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

गिरती युवती वास धरि युवक ऋक्ष कपि धाय ॥ धरि धरिके युवती युवक रमण करैं हरषाय ॥ रमण करैं हरषाय देख रावण घवड़ाए ॥ चाजि विना निस्तार चाज नहिं गर्ज्जं चलाए ॥ भयो खालसा सिंह लङ्कको दग्ध कराई ॥ ऋक्ष मर्क्क सब भाग प्रभोको हाल जनाई ॥ ३०४४ ॥

अथ ससैन्य कुम्भ निकुम्भ सेनापति बधः ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कुम्भ निकुम्भ बुलायके भणो भूप समुझाय ॥ कुम्भकर्ण तव जनकते नित मम प्राण बचाय ॥ नित मम प्राण बचाय स्वर्गको जीत कराये ॥ धरि धरिके सब शिव नहमो कैद रखाये ॥ तिनको पङ्कज होय लागि रण देख डरावैं ॥ तव सन्मुख धरि मार भ लु कपि रणम करावैं ॥ ३०४५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुनको युगल भ्रात परमाए ॥ भये गर्ब्ब पदमो शिरनाए ॥ बिन शासन नहि मार सकावैं ॥ पद्य प्रबग भालुक धरि खावैं ॥३०४६॥ सुन भूभुज मनमो हरषाये ॥ लै गाढी शिर भूमि पठाये ॥ तव सम वीर पुत्र नहिं पावैं ॥ चढ़ि स्यन्दन वैरी गण खावैं ॥३०४७॥ सुनत युग्म भ्राता हरषाये ॥ चढ़ि चक्रिन रण भूमि सिधाये ॥ भिड़े द्वार दक्षिणमो जाई ॥ देख गात सब प्रबग डराई ॥३०४८॥ भागन लगे बलय घबड़ाये ॥ भिड़े महेन्द्र देवेन्द्र रिसाये ॥ तिनको कुम्भ वीर परमारा ॥ गिरे अचेतन भूमि

मझारा ॥ २०४६ ॥ निरख वीर अङ्गद गरजाये ॥ मारा धरणी मैंज घुमाये ॥ गरते यावन कुम्भ नशाई ॥ मारा वाण वाण गर्जाई ॥ २०५० ॥ गिरे वीर अङ्गद मरणाये ॥ खबर पाय राघव घबड़ाये ॥ समर हेत वे वीर पठाई ॥ ऋषभ सुषेण कुमदको भाई ॥ २०५१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ले ले यावन वृक्षको लड़े वीर वे धाय ॥ तिनको भी शर मारके जर जर गात कराय ॥ जर जर गात कराय सूर रण भङ्ग कराये ॥ खबर पाय सुग्रीव दौड़ सन्मुख चलि आये ॥ तिनको भी शर मार कुम्भ बेहोश कराई ॥ चेतनको पुन पाय कूद स्यन्दन पर जाई ॥ २०५२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

धरा कुम्भको भूप गिराये ॥ पटक भूमि शिर फोड़ खपाये ॥ निरख निकुम्भ भिड़े तब आई ॥ भगे भूप सुग्रीव डराई ॥ २०५३ ॥ पहुंचे हनूमान तब आये ॥ प्रधन परस्पर घोर कराये ॥ मञ्चो रोप यातु गर्जाई ॥ लग्यो पवनसुतको शर आई ॥ २०५४ ॥ गिरे अचेतन भूमि मझारा ॥ निरखि दुष्ट मन माहिं विचारा ॥ ले कपिको भूभुज पेजाई ॥ करें मजर

अस कौन उठाई ॥ २०५५ ॥ चला यातु मनमें हर-
षाए ॥ तबते चेत पवनसुत पाए ॥ कर्ण नासिका
को धरि खाई ॥ मुण्ड नोचि यम लोक पठाई ॥
॥ २०५६ ॥ लैकरि शीर्ष प्रभो पै आये ॥ कौन
नजर रण हाल जनाये ॥ नाथ त्रिलोक नाथ हरषावैं ॥
कोट कोट आशीस करावैं ॥ २०५७ ॥ गर्जैं सब
मर्क हरषाए ॥ जय जय रामचन्द्र जय गाए ॥ मारा
अलय प्रबल असुराई ॥ धरि धरि सर्प गरुड़ जस
खाई ॥ २०५८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

रावणको करजोड़िकैं भनौ दूत समुझाय ॥ कुंभ
कुम्भ निकुम्भ नृप महासमरमो जाय ॥ महासमरमो
जाय सुनत भूभुज घबड़ाए ॥ गिरैं अचेतन होय
यातु सब नींद उठाए ॥ भयौ खासनसासिंह चेत
रावण जब पाई ॥ पुत्र युग्मकी हेतु खूब रोवैं कलपाई
॥ २०५९ ॥

अथससैन्य मकराक्ष सेनापति वधः ।

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पुत्र युगलके शोकते रावण अति घबड़ाय ॥ खर आत्मज मकराक्षको भयो दुष्ट समुझाय ॥ भयो दुष्ट समुझाय जनक राघव तव घाए ॥ तिहं कारण मे जाय पुत्र धरणी जा लाए ॥ ताते इतनो कष्ट ताति तनमो मे पाई ॥ करौ निवारण आप कृश नर वानर खाई ॥ ३०६० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

पाणिजोड़ मकराक्ष चलावैं ॥ अब का जनक रुपु मे घावैं ॥ खाते व्यञ्जन करि मे तब ही ॥ सेतु बांधि आये नर जब ही ॥ ३०६१ ॥ विन आज्ञा क्या नाथ करावैं ॥ जाय प्लवग नरको धरि खावैं ॥ शुन रावण पामर हरषाए ॥ दीना भूषण वस्त्र मगाए ॥ ३०६२ ॥ चक्र चक्र प्रति दीन सजाई ॥ प्रधन हेतु बहु फौज बुलाई ॥ खर आत्मज तब कीन विचारा ॥ नर रूपी विष्णू अवतारा ॥ ३०६३ ॥ इनसे समर जीत नहिं आए ॥ वृषभ आड़ते देहु खपाए ॥ अस विचार युग वरद मंगाई ॥ चक्रिन मो जोते मुष-

काई ॥ २०६४ ॥ पञ्च पञ्च गो पञ्च सिखाए ॥ ले गाभीगण साथ सिधाए ॥ ढोल नगाड़ा डम्फ बजाई ॥ भिड़ा द्वार पश्चिममो धाई ॥ २०६५ ॥ निरख वीर हनुमन्त डराए ॥ क्यों करि समर करूं मे जाए ॥ गोहत्या होवेगा भाई ॥ पसभण भञ्ज दीन घबड़ाई ॥ ॥ २०६६ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

मार मार भण यातु सब मारे बाण चलाय ॥ गिरे प्रवग भालुक सकल निरख प्रभो घबड़ाय ॥ निरखि प्रभो घबड़ाय सदागति बाण चलाये ॥ ताते गाभी वृषभ चौर गोचर्म हटाये ॥ घेरा वानर कटक यातु बलको उपटाई ॥ मार मार भण फौज परस्पर शोर मचाई ॥ २०६७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

लड़ा वीर मकराक्ष रिसाए ॥ मार मार शर कीश हटाए ॥ भये क्रुष्ट राघवको जाई ॥ जनक जनक भ्राता मम घाई ॥ २०६८ ॥ मनमो पाप महा गर्भाए ॥ घरा तोहि यमलोक पठाए ॥ तर्पण करूं जनकको जाई ॥ सुनि रघुवीर भये मुशकाई ॥ २०६९ ॥ खरदूषणके निकट पठाए ॥ तोर शोक

सब देखु भयाए ॥ दण्ड मात्र शठ सबुर करावें ॥ सुनत वचन मकराक्ष रिसावें ॥ ३०७० ॥ कोप धार अस बाण चलाई ॥ अन्धकार सब सृष्टि कराई ॥ नाथ देख निज बाण चलाए ॥ ताते तमको दूर कराए ॥ ३०७१ ॥ पुन पवन खर पुन चलाई ॥ जर जर प्रभुका गात कराई ॥ नाथ भयो मार्गणका खाये ॥ खरते वीर पुन लखि पाये ॥ ३०७२ ॥ दण्ड मात्र मै ताहि खपायो ॥ प्रस्तर मेघ मुत प्रधन करायो ॥ असभय प्रभो महा गर्जाए ॥ पर्ध चन्द्र शर चाप लगाए ॥ ३०७३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ताते वरको काटिके अग्निवाण पुन जोड़ ॥ हन्यो प्रभो वह यातुको रोप चापते छोड़ ॥ रोप चापते छोड़ पुनः ऐषिक शर जोड़ा ॥ ताते मारा फौज और कुञ्जर रथ घोड़ा ॥ भणे खालसासिंह भग्न अपसर्प सिधाए ॥ खर आत्मजको निधन भूपको भाष सुनाए ॥ ३०७४ ॥

अथ ससैन्य तरणीसेन सेनापति वधः।

॥ कवित ॥

सुनके लङ्केश राय गिरके अचेत होय शोकके अपार शोक चित्त बिच पायके ॥ भाषत कलप कर बीर शून्य घर घर कीन राम लछमण लङ्का बिच आयके ॥ कौन ऐसो बीर अब मार नर कीश सब बिक्रम दिखाय काल रण बिच जायके ॥ सुन सर्ब्ब यातुधान प्राणको संहार जान भागत अपार त्रास चित्त बिच लायके ॥ ३०७५ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

देख भूप मनसो घबड़ाए ॥ तरणीसेन बीर बुलवाए ॥ भयो भूप तिनको समुझाई ॥ सत्य बचन तब जनक बताई ॥ ३०७६ ॥ मैं निर्बोध चित्त नहि लाये ॥ चरण प्रहार कीन बहुराये ॥ ताते अब अशक्त भय पाई ॥ लीना शरण रामकी जाई ॥ ३०७७ ॥ बहु सम्यो उपदेश बताए ॥ बंस नाश कीना बिलखाए ॥ सुन तरणी भाखैं गिरमाई ॥ जनक परम गुरु बेद बताई ॥ ३०७८ ॥ ताते करो कछुक नहि ताप ॥ जो जो पिता अधर्म कराए ॥ सुन भूभृत भूरी

हरखाई ॥ शिर चुम्बन करि भाष शुभाई ॥ ३०७९ ॥ तव सम श्रेष्ठ पुत्र नहिं कोई ॥ करी भला जाते सब होई ॥ विहस विभीषण पुत्र बुलाए ॥ कहुं समर सबही मे जाए ॥ ३०८० ॥ जनक सहित नर वानर भाला ॥ देवें मार पापको डाला ॥ स्मृती शास्त्र वेद बतलावें ॥ गुरुलघु रणमो नाहिं गणावें ॥ ३०८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन तरणीके वचनको भूपभये हरखाय ॥ तव सम सुत जगमी नहीं क्या देवें मे लाय ॥ क्या देवें मे लाय समरको जीत कराये ॥ करी लङ्कमो राज-विभ्रमो नाम रखाये ॥ भये विभीषण पुत्र चरणमो मुण्डलगाई ॥ राज लोभ नहिं मुझे पापकीजे ठकुराई ॥ ३०८२ ॥

॥ पादाकुल छन्द ॥

मारे क्या रणमो मरजावें ॥ परलमो चन्द्र भूप करि पावें ॥ शुन रावण भाषें मुखकाई ॥ तव सम वीर निरखि नहिं पाई ॥ ३०८३ ॥ पसभण भूषण वस्त्र मगाए ॥ पञ्चपञ्च मो दीन सजाए ॥ करि प्रणाम तरणी सुखकाई ॥ शरमा जननीके एह आई ॥ ३०८४ ॥ भये प्रसूको माथ निवाये ॥ प्रधन

हितु भूभुज पठवाये ॥ सुन बरमा चतिभय भयपाई ॥ पाथि पकड़ सुतको समुझाई ॥ २०८५ ॥ कौन कुमति तुझको सुत आयो ॥ प्रभुसे प्रथन चित्तमो लायो ॥ नारायण नरगातधराई ॥ पहुचे पुत्र लक्ष्मो आई ॥ २०८६ ॥ रामचन्द्रकी शरण धरावें ॥ पिता पुत्र मिलि सेव करावें ॥ प्राण मथाधन ताति बताई ॥ समिति छोड़ कीजे सिवकाई ॥ २०८७ ॥ सुन तरणी कर जोड़ चलाए ॥ सेवकाई नहिं होन सखाए ॥ खड्ग वजा तनत्याग कराई ॥ कह गोलोक वास मे आई ॥ २०८८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुनि मकरकी वचनको शरमा चति कलपाय ॥ पाथि पकड़ रोने लगी पुन तरणी समुझाय ॥ पुन तरणी समुझाय मात काहे कलपावें ॥ जगमोक्षा-को पुत्र कौन जननीवतलावें ॥ जेसि नरपर नारि कोट स्वग वास कराए ॥ प्रात होनते भगे पुनः काको पाए ॥ २०८९ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तैसे मात पिता सुन भगनी ॥ को काको भर्त्ता को रमणी ॥ सुन शरमा मनमो शरमाई ॥ पुत्र

मोह तजि मौन रहाई॥ ३०९० ॥ तरणी सैन चली हरषाये॥ राम नाम निज अंग लिखाये॥ भणे वाद्य कारको समुझाई॥ बोल राम जय देहु बजाई॥ ३०९१ ॥ वाद्यकार आसनको पाए॥ हर्ष राम जय बोल बजाए॥ सुन तरणी अतिशय हरषाई॥ चढ़ि स्यन्दन प्रस्थान कराई॥ ३०९२ ॥ राम नाम शुभ मन्त्र भलाए॥ भिड़ा द्वार पश्चिमसो आए॥ लड़े युग्म दलकी बल धाई॥ मार मार भणा शोर मचाई॥ ३०९३॥ यातु राम भणा शस्त्र चलाये॥ ॥ मरें प्लवग रणमो तड़फाये॥ भिड़ पवन सुत कोप कराई॥ राम नाम तरणी तब गाई॥ ३०९४॥ मारा बाण बीरको धाए॥ गिरे धरनि अंगज ब्रबड़ाए॥ भागे मर्क सर्व भय पाई॥ खबर द्वार लोचनमो धाई॥ ३०९५॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अंगद नील सुषेण नल सेनापति सब आय॥ समर भंगको पश्यके पूछें प्रभो बुलाय॥ पूछें प्रभो बुलाय विभीषण मित्र बतावें॥ कौन वीर यह आय प्रबलको जीत करावें। भणें विभीषण भक्त प्रभो पदमो शिरनाई॥ रवणका यह पुत्र आय दनुज रघुराई॥ ३०९६॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मनमो तरणी सेन चलावैं ॥ रामचन्द्र दर्शन कब पावैं ॥ जन्म सुफल मेरो कब होई ॥ अस भय बीर चले पुन सोई ॥ १०९७ ॥ निकट राम लक्ष्मणके आए ॥ रोका नील बीर धमकाए ॥ ग्रन्त पुत्र कर जोड़ चलावैं ॥ ईश्वरके दर्शनको जावैं ॥ १०९८ ॥ मारग छोड़ देहु कपिराई ॥ भयो नील नल कोप कराई ॥ वचा भक्त हो कारि तूं आए ॥ भयड तपस्वीरूप धराए ॥ १०९९ ॥ गयड मूर्ख विप्रमो जोई ॥ निरख वेश भूले तव सोई ॥ अस भए अतिशय कोप कराए ॥ मारा यावन वृक्ष चलाए ॥ ११०० ॥ तरणी-सेन भिड़े गर्जाई ॥ मार बाण तरु शैल खपाई ॥ और वृक्ष नल नील चलाए ॥ ताको भी अस्त्रात्मज-घाए ॥ ११०१ ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ को कवि सके प्रधन सो गाई ॥ अन्तःकरण रघुनाथ मनाए ॥ मार शूल नलनील गिराए ॥ ११०२ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

समर भङ्गपथ भ्रातके पश्च वालिसुत धाय ॥ मारागोव भ्रमायके तरणी रोप चलाय ॥ तरणी रोप चलाय अष्टि सो टीन खपाई ॥ पुन अङ्गद

खिसलाय चपल सो बीर चलाई ॥ ताको भी शर मार विभीषण पुत्र खपाए ॥ और त्रिलोकीय लाय बालि सुत हीन चलाए ॥ ३१०३ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

मार बाण धर यातु खपाए ॥ पश्च बीर चक्रष्ट खिसलाए ॥ मारा लात वाजिको जाई ॥ तासे हय युग प्राण तजाई ॥ ३१०४ ॥ और तुरग पुन दनुज मगाये ॥ भिड़ा जीत चक्रिनसो धाये ॥ चक्र-ष्टको शरमार गिरायो ॥ निरखि महेन्द्रदेवेन्द्र रिसायो ॥ ३१०५ ॥ मारा पर्वत पाणि चलाये ॥ लगा बीर तरणीको जाये ॥ रामनाम शुभ मन्त्र चलाई ॥ बच्यो यातु मरणे ते भाई ॥ ३१०६ ॥ महामन्त्र चस्तप पुन गाये ॥ मार्यो रोप कोशको धाये ॥ गिरे बीर भ्राता पस भूमं ॥ भिड़े यातु मद्रकन समभूमं ॥ ३१०७ ॥ निरखि सुषेण वृन्द गर्जाए ॥ ले महीध्र सन्मुख चलि चाए ॥ चढ़े कूट चक्रिन परधाई ॥ छोर धनुष चस लात चलाई ॥ ३१०८ ॥ गिरा चचेत बीर घबड़ाए ॥ कामड़ कपि मारे खिसलाए ॥ रोम रोम तन भङ्ग कराई ॥ चला रुधिर नदिकी समधाई ॥ ३१०९ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

पदाघात करि रथहिको दीना वीर खपाय ॥ शेष सारथी मुण्डको भगे सुषेण डराय ॥ भगे सुषेण डराय चेत तबही जब पाई ॥ धीर यान पर तिष्ठ भालु बानर बहु घाई ॥ वाम पाय सब कीश समर को भङ्ग कराये ॥ झपट मर्कपति धाय गोत्र मारा गर्जाये ॥ ३११० ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तिनके धर तबही झट धाई ॥ मारा शून गर्जके धाई ॥ गिरे भूप रण भूमि मझारा ॥ भगे भालु कपि त्रास अपारा ॥ ३१११ ॥ मारग शून्य शत्रु सुत पाई ॥ तजि स्यन्दन प्रस्थान कराई ॥ सम्मुख रामलखणके आये ॥ जोड़ भुजादल शीर्ष निवाये ॥ ३११२ ॥ भयो विभीषण शत्रु दिखाई ॥ यातु प्रभो प्रणिपात कराई ॥ कहैं रामलक्ष्मण मुसकाये ॥ क्यों प्रणाम कीना वह धाये ॥ ३११३ ॥ भये शत्रु प्रभुको समुझाई ॥ वह सेवक तेरो रघुराई ॥ निमक नित्य भूभुजको खाए ॥ तिह कारण रणमो वह आए ॥ ३११४ ॥ सुन राघव भाषें मुसकाई ॥ यद्यपि मम सेवक है भाई ॥ ताको मम-मा पूरण होई ॥ यह वर दीन सुनो सब कोई

॥३११५॥ तब लक्ष्मण करजोड़ भलाए॥ रावण को जय यातु मनाए॥ कया वर कंठिन दयो रघुराई॥ तब रघुवीर भये मुशकाई॥३११६॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शन्त कभी नहि चाहिगे पापोका कल्याण॥ यह निश्चय चितमे धरी कीना जौन बखान॥ कीना जौन बखान यातु शरचाप लगाए॥ कहा प्रभो को गर्ब्ब मध्य तुमको मै जाए॥ कहूं भूपका काज सत्य चितमे धरि लीजे॥ प्राण यहो निज चहो भग्न रण ते अब होजे॥३११७॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन लक्ष्मण अति कोप कराई॥ मारा बाण गर्ब्बके धाई॥ शन्त पुन रघुनाथ मनाए॥ निज-शर ते वह रोप खपाए॥३११८॥ मार्गण व्यर्थ पश्य हरिभाई॥ पुन द्वितीय बाग चाप लगाई॥ छोड़ा तरणी ओर रिसाए॥ निरख राम जय यातु चलाए॥३११९॥ मारा पाशुग धनुष लगाई॥ ताते प्रभु पविन को धाई॥ लक्ष्मण अग्निबाण पुन छोड़ा॥ तरणी वरुण बाणते तोड़ा॥३१२०॥ रोप पाशुपत प्रभो चलाए॥ पलप वैष्णव बाण लगाए॥ छोड़ा कार्मुक ते गर्ब्बाई॥ ताते प्रभु

का विधिवत खपाई ॥ ३१२१ ॥ लक्ष्मण पर्वत बाण चलाए ॥ तरणी पवन बाण ते धाए ॥ सर्प बाण पुन नाथ चलावैं ॥ गरुड़ बाणते यातु खपावैं ॥३१२२॥ कूर बाण पुन लखण चलाई ॥ अन्धकार सब सृष्टि कराई ॥ चिकुर बाणको यातु चलाए ॥ अन्धकार-सब नष्ट कराए ॥ ३१२३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

यातु भुजाबल पश्च की लक्ष्मण कोप कराय ॥ गन्धर्व्व नाम शर छोड़के दीना बलय खवाय ॥ दीना बलय खपाय देख तरणी खिजलाए ॥ मारा जाठा दौड़ प्रभो मूर्छा मे। जोए ॥ निरखि पवन सुत धाय गोदमे। लीन उठाई ॥ भागे दलकी मध्य निरखि राघव घबड़ाई ॥ ३१२४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

धनुष बाण सन्मुख धरि धाए ॥ त्रिभुवन गात मध्य लखि पाए ॥ तरणी सिर प्रणाम कराई ॥ पुनः भुजादल जोड़ चलाई ॥ ३१२५ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश तुम्हो हो ॥ चन्द्र पुरन्दर सूर्य्य तुम्हो हो ॥ निश वासर तिथि योग फणीशा ॥ स्वर्गमृत्यु पाताल महीशा ॥ ३१२६ ॥ अधम निशाचर योनि धराई ॥ कहं अधर्म कोटन रघुराई ॥ नाथ दयामय नाम धरावैं ॥ काट

मुक्त मम मुक्ति करावैं ॥ ३१२७ ॥ शुन राघव रोवैं बलपाए ॥ भक्ते विभीषण को बुलवाये ॥ परम भक्त मेरो यह भाई ॥ सत्य वचन तेरो लखिपाई ॥ ३१२८ ॥ क्यों करि इनसी समर करावैं ॥ पुत्र तुल्य निज भृत्य रखावैं ॥ पराभवा राघव शस्त्र तजाई ॥ तिष्ठे निज आसन मो आई ॥ ३१२९ ॥ मनमो तरणी सेन विचारैं ॥ तुष्ट होय प्रभु मोहि न मारैं ॥ क्यों करि निज उद्धार करावैं ॥ प्रभु शर विना मुक्ति नहि पावैं । ३१३० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अस विचार पुन बाण ले तरणीसेन चलाय ॥ मै कोना निज इष्टको तुती समरमो आय ॥ तुती समरमो आय आप मनमो हरषाय ॥ मुझको सेवक बोल भाग निज प्राण बचाये ॥ अबही तुमकोमार करूं तुमरो सेवकाई ॥ शुनत लक्ष्मण वीर खड्ग ले गर्ज्ज चलाई ॥ ३१३१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

दुष्ट निशाचर दास धराए ॥ कोना कोट तुती तू आए ॥ अब तुझको यम लोक पठावैं ॥ छव विभीषण शीर्ष धरावैं ॥ ३१३२ ॥ अस भण चली प्रभनको भाई ॥ रोका शस्त्र विभीषण आई ॥

रावणको कर जोड़ जनाए ॥ समर जाय कीजे प्रभु आए ॥ ११३३ ॥ अधम निशाचर वीर अपारा ॥ लक्ष्मणको मूर्छामो डारा ॥ सुनत प्रभो शर चाप चढ़ावे ॥ प्रधन हेतु सन्मुख चलि आए ॥ ११३४ ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ को कवि सके पार सो गाई ॥ अर्द्धचन्द्र शर नाथ चलाए ॥ तासे रथसे वाजि खसाये ॥ ११३५ ॥ तरखो अतिशय कोप कराई ॥ नाथ दृष्टि कीना गर्व्वाई ॥ अर अर प्रभुका गात कराए ॥ मार मार भय घोर मचाए ॥ ॥ ११३६ ॥ पुन प्रभुको घेरा चल धाई ॥ जस राहु घेरे शशि जाई ॥ निरखि विभीषण मन्त्र बतावें ॥ ब्रह्म अस्त्र पढ़ि नाथ चलावें ॥ ११३७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

ब्रह्माको वरदान है सुनो प्रभो मननाथ ॥ ब्रह्म-अस्त्र बिन औरते कभी न मारा जाय ॥ कभी न मारा जाय ब्रह्म शर नाथ चलाए ॥ निरखि विभीषण पुन प्रभोको माथ निवाए ॥ लगा ब्रह्म शर जाय मुण्ड पञ्च टूक कराई ॥ कटा मुण्डमय राम नाम अति घोर मचाई ॥ ११३८ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

जय जय रामचन्द्र जय गाए ॥ नाचें नाच

मर्का हरषाए ॥ निरखि विभीषण ग्रन्त सिधावैं ॥ पुत्र मुराड ले करि द्रुत ग्रावैं ॥ ३१३९ ॥ रघुपतिके पद पर धरि दीना ॥ हा हा करि क्रन्दन बहु कीना ॥ शोक पाय लोटै तड़पाए ॥ त्वरित प्रभो लखि गोद उठाए ॥ ३१४० ॥ पुन पूछैं तिनसे रघुराई ॥ क्यो ग्रधैर्य्य रोदन करि भाई ॥ दूती मध्य दुखको का पाए ॥ करि क्रन्दन ग्राकुल हो ग्राए ॥ ३१४१ ॥ भणै विभीषण ग्रन्त बुझाई ॥ तव सेवक ग्रात्मज यह ग्राई ॥ प्रभु ग्रागे निज प्राण तजाये ॥ कह्यो गो लोक बास सुत जाए ॥ ३१४२ ॥ मै सेवा तवकी करि भाई ॥ क्या फलको पावै रघुराई ॥ जो जो ग्रव होय तव ग्राये ॥ सो सो मुक्ति पदारथ पाये ॥ ३१४३ ॥ तिंह कारण रोवैं रघुराई ॥ सुन राघव भाखैं कलपाई ॥ जीवन मृत्यु साधुको जानो ॥ एक तुल्य सब वेद बखानो ॥ ३१४४ ॥

॥ कुराडलिया छन्द ॥

क्यो मुझको नहिं प्रथमतः कह्यो पुत्र निज भ्रात ॥ क्यो रणमो उपदेश करि करो पुत्रको घात ॥ करो पुत्रको घात मित्र ग्रव क्यो कलपावैं । प्रथमतः ग्री कहै काहि सुतको मै धावैं ॥ भणै विभीषण

राम पुत्र जिनकी बचवाई ॥ करैं बंसको नाम प्रगट तातें जग गाई ॥२१४५॥

॥ कवित ॥

सुन रघुबीर धीर अधर सहित गिर क्रन्दन करत ऋच्छ मर्कगण धायकै ॥ रावणको रथ हाथ भाषत खोटत भाल तरुवो निधन पर रथा शिव आयकै ॥ सुनत लछमन रोष गिरत प्रवेस होय धावत हनुमत पति द्रुत निज धायकै ॥ श्रीगुरु गोविन्द सिंह सूरमा पूरण ब्रह्म मदनगोपाल सिंह गावत मनायकै ॥२१४६॥

अथ ससैन्य वीरबाहु एवं भस्म-लोचन सेनापति वधः।

॥ कवित ॥

चित्रसेन नाम एक गन्धर्व रहत लेख नगरी मध्य चन्द्र कन्या उपजायकै ॥ चित्राङ्गदा नाम धर पालन करत पर पयोधर उदय होवत जब धायकै ॥ निरखि लछमन आय अभ्यागम करि राय चित्रसेन जीत और चित्राङ्गदा लायकै ॥ रमण करत सुत

अङ्गज प्रसव भन चित्राङ्गदा कीन शुभ वासरको पायकी ॥ २१४७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वीरबाहु शुभ नाम रखायो ॥ जब बहु धर्म्म कर्म्म मो आयो ॥ तप करणे काननमो जाये ॥ अनाहार बहुता दुख पाये ॥२१४८॥ तुष्ट होय ब्रह्मा चलि आवैं ॥ वीरबाहुको विहस बतावैं ॥ तव सम भक्त यातु नहि कोई ॥ वर मांगो मरजी जो होई ॥२१४९॥ पाणिजोड़ रावण सुत गाए ॥ विष्णुहाथ मम नाश लखाए ॥ विहस विधाता ताहि बतावैं ॥ जाति स्वभाव बिना नहि पावैं ॥ २१५० ॥ कुञ्जर प्राण आप निज लीजे ॥ या पर प्रथम त्रिभुवन कीजे ॥ अन्त समय तेरो जब होई ॥ मिलैं परम गुरु ईश्वर सोई ॥२१५१॥ तिनसे सम्प्रहार भन कीजै ॥ करि कुल रीति मुक्ति पुन लीजै ॥ शुन वरदान दनुज हरषाए ॥ चढ़ि मदकल लङ्कामो आए ॥ २१५२ ॥ रावणको सब हाल जनायो ॥ शुन लङ्केश महा हरषायो ॥ पुत्र गोद लै चुम्बन लागे ॥ शुन ताकी जननी बड़ भागे ॥ २१५३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

आत्मजको बुलवायके लीना गोद उठाय ॥ शिर

चुम्बन करि पुत्रको आशीर्व्वाद कराय ॥ आशीर्व्वाद कराय पुत्र वरदान शुनायो ॥ कछुक दिवसकि वाद वहाँ मातामह आयो ॥ रावणको समुझाय देश माती ले जाए ॥ चित्रसेन निज राज दयो ताको हरषाए ॥३१५४॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

वीरभुजा उतराज करावैं ॥ कधी कधी लङ्कामो आवैं ॥ समर हाल शुनने वह पाई ॥ नृररूपी नारायण आई ॥ ३१५५ ॥ लङ्काके असुर गण घाये ॥ मुक्ति ठान पहुचा निज आये ॥ रावणको प्रणिपात कराई ॥ कलह कथा पूछै कलपाई ॥ ३१५६ ॥ क्या कारण वानर नर आए ॥ करि करि प्रबल यातुगण घाए ॥ भणै भूप सुतको समुझाई ॥ सुपर्नखा यह समिध कराई ॥३१५७॥ ताको कर्ण नाक नर घाए ॥ मै ताको पत्नी हर लाए ॥ ताते कोप कस्यो रघुराई ॥ सिन्धु बांध कीशप दल धाई ॥ ३१५८ ॥ कुम्भकर्ण आदिक सब वीरं ॥ रणमो दीन प्रबग नर चीरं ॥ वीर शून्य लङ्काका भाई ॥ कोना जटल मर्क नर आई ॥३१५९॥ वीरभुजा करजोड मनावैं ॥ जनक रूपु सबको मै घावैं ॥ शुनके यातु कान्त हरषाये ॥ शिर चुम्बन करि भाष शुनाये ॥ ३१६० ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

तव सम जगमो कौन है महा वीर अवतार ॥ नर वानरको मारके करौ पुत्र उपकार ॥ करौ पुत्र उपकार सुनत जननी घवड़ाई ॥ करि क्रन्दन ले गोद नीत भूरी समुझाई ॥ भणै पुत्र हरषाय मात पदमो शिर नाये ॥ तव प्रसाद रण जीत प्रसू पहुंचू मै पाये ॥ ३१६१ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

तव जननी मनमो भय पाई ॥ भस्मनयन निज भृत्य बुलाई ॥ भखै नार तिसको कलपाये ॥ अकुज सम रण भूमि सिधाये ॥ ३१६२ ॥ करौ तात रक्षा तुम जाई ॥ जाते सम गातज फिरि आई ॥ भखै भस्मलोचन शिरनाए ॥ पायू छिन्न मोर हो आए ॥३१६३॥ ताके रणसो तात पठावें ॥ जीवत पुत्र छोड़ नहि आवें ॥ असभय सैन्य बलाय लै धाए ॥ ढोल नगाड़ा डम्फ बजाए ॥३१६४॥ चढ़ि मदकाल रावण सुत धाई ॥ भिड़ा द्वार पश्चिममो जाई ॥ भस्मनयनको अग्र कराये ॥ निरख विभीषण शब्द कराये ॥३१६५॥ रघुपतिको करजोड़ बताई ॥ रक्षा करौ कटक रघुराई । ठूली बांध चलुजो आए ॥ करि कठोर तपको वर पाए ॥ ३१६६ ॥ जाको वह देखे

रघुराई ॥ भस्म होय राखो सम भाई । जब ब्रह्मा ताको वर दीना ॥ साथो सर्व भस्म कर कीना ॥२१६७

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देख विधाता भयनमो ठूली बन्धन कीन ॥ और यातु बुलवायके भेज लङ्कमो दीन ॥ भेज लङ्कमो दीन निरखि रावण हरखाए ॥ काज आजिके हेतु भस्मलोचनसो भाए । रामचन्द्र सुन हाल बहुत मनमो घबडावैं ॥ क्यों करि अपनो प्राण कटक इनसे बचवावैं ॥२१६८॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

आके विभीषण भल बुझाई ॥ क्यों प्रभु इनसे भय पाई ॥ जब ठूली खोलै वह पाए ॥ तब दर्पण शर नाथ चलाए ॥ २१६९ ॥ सोई यातुधानको धाए ॥ सुनि रघुपति अतिशय हरषाई ॥ लयो मिलि भाव काठ लगाए ॥ तबते असुर निकट वह आए ॥ २१७० । ज्यो ठूली खोलैं हरषाई ॥ त्यों प्रभुवर शर चाप लगाई ॥ उलसे कार्य्यं र चक्षु पसारन ॥ इनसे प्रभु दर्पण शर मारन ॥ २१७१ ॥ निरखि गात अपनो वह पाई ॥ तत्काल तन भस्म कराई ॥ असे असुर बल अन्त पाए ॥ आवै भानु कीश हरषाए ॥ २१७२ ॥ कोरभुज लखि कोप बढाई ॥

ले कृपाण पहुंचा कर घाई ॥ मार मार वानर गण धाए ॥ भागे सैन्य कान्त भय पाए ॥ ३१७३ ॥ भयो त्वरित राघवको घाई ॥ कौणप दल भूगी मैं घाई ॥ वीरभुजा रण घोर कराए ॥ दीजे प्राण दान प्रभु जाए ॥ ३१७४ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

सुन खल सबके वचनको नारायण मुसकाय ॥ भयो सखा मुझको कहो घव क्या करूं उपाय ॥ सब क्या करूं उपाय विभीषण शान्त बतावैं ॥ ब्रह्मा ते बरदान नाथ बालक यह पावैं ॥ यह कुमार जब मरैं प्राण ताको तव जाई ॥ सुन नारायण हर्ष मित्रको कण्ठ लगाई ॥ ३१७५ ॥

॥ पादा कुलक छन्द ॥

चले प्रभो खग चाप लगाए ॥ देख वीरबाहु शिर नाए ॥ जोड़ भुजा दल भाष सुनाई ॥ जाको तप करि तपो न पाई ॥ ३१७६ ॥ सो ईश्वर सन्मुख मम पावैं ॥ यह बरदान नाथ ते पावैं ॥ तब करते निज गात नशाई ॥ करूंगो लोक वास गे जाई ॥ ३१७७ ॥ अधम जान मुझको नहिं मारैं ॥ पावन पतित नाम क्यों धारैं ॥ सुन ईश्वर बोलैं मुसकाई ॥ तव सम भक्त कोय नहिं

भाई ॥ ३१७८ ॥ शुन्त विभीषणकोंले सङ्गा ॥ करी लङ्कमो राज अभङ्गा ॥ भयो वीरवाहु शिर नाई ॥ आपर तोर दया रघुराई ॥ ३१७९ ॥ सो कहा क्या छार गणावैं ॥ केवल पाद पद्म तव भावैं ॥ शुन राघव तव शस्त्र तजाए ॥ समर छोड़ तिष्ठे हरषाए ॥ ३१८० ॥ वीरभुजा मन मध्य विचारा ॥ सेवक आन नाथ नहि मारा ॥ अधम निशाचर योनि धरावैं ॥ क्यौं करि मुक्ति पदारथ पावैं ॥ ३१८१ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

कुलाचार बिनु प्रभो ते मुक्ति न पाई जाय ॥ अस विचार शर चाप ले कर्कश वाक चलाय ॥ कर्कश वाक चलाय प्रभोको गर्ज्ज शुनाए ॥ मै तेरे वध हेतु आपनो इष्ट मनाए ॥ तुम नारायण बोल अधनते प्राण बचाई ॥ अवही तोको मार देहु यम लोक पठाई ॥ ३१८२ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुन नारायण कोप कराए ॥ अधन हेतु पुन शस्त्र उठाए ॥ भयो परस्पर खूब लड़ाई ॥ को कवि सकै अधन सो गाई ॥३१८३॥ अर्द्धचन्द्र प्रभु बाण चलाए ॥ यातु आपको दीन खपाए ॥ वीर

चाप पुन हनुमन धाई ॥ मारा बाण जालधरधाई ॥३१८४॥ निरखि प्रभो ऐषिक शर जोड़ा ॥ ताते यातु बीरको तोड़ा ॥ बीत्यो प्रहर पाणि जब जाए ॥ तब लक्ष्मण लङ्केशो धाए ॥ ३१८५ ॥ कीना समर घोर गर्भ्भाई ॥ कोय न काहिमान सकाई ॥ यातु लक्ष्मण पर शूल चलाए ॥ ताको निरखि राम द्रुत धाए ॥ ३१८६ ॥ बीरभुजा बोलैं शिरनाई ॥ अधर्म्म युद्ध कीना रघुराई ॥ मैं लक्ष्मण पर शूल चलाए ॥ तुम क्यों प्रभो आयके धाए ॥ ३१८७ ॥ भणे नाथ तको समुझाई ॥ चन्द्ररूप लक्ष्मण मम भाई ॥ भिन्न जानि तू भ्रान्ति कराए ॥ पुन वह दनुज भणे शिर नाए ॥ ३१८८ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

स्वर्ग मर्त्त पातालमो जीव जन्तु हैं जौन ॥ सब घट घटमो बास है कहो भिन्न तब कौन ॥ कहो भिन्न तब कौन प्रभो कौणपक्यों घावैं ॥ विहस भणे रघुनाथ तात तुझको बतलावैं ॥ कौणपमो मम बास बाम्भोमे बह नाहीं ॥ निज अधर्म्मते मरै दोष मुझको कछु नाहीं ॥३१८९॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

शुनत असुर लज्जा तब पाए ॥ समरहार

कीना गर्ज्जाए ॥ ताको कोय न जीत सकाई ॥ इन्द्र पवनते बोल पठाई ॥ ३१९० ॥ शर शरभङ्ग दीन जो लाए ॥ ताते दन्तित देहु खपाए ॥ तब वह प्रलय होय रघुराई ॥ शुन रघुपति वह बाण चलाई ॥ ३१९१ ॥ काट मुण्ड मदकलको धाए ॥ पुन वह बाण गर्ज्जशे धाए ॥ वीर भुजाका शीर्षे खपाई ॥ तिष्ठा राम तून शर जाई ॥३१९२॥ राम नाम शुभ मन्त्र चलाए ॥ नाचे काटा मुण्ड हरषाए ॥ निरखि विभीषण शस्त्र सिधायो ॥ धन्य धन्य भण मुण्ड उठायो ॥ ३१९३ ॥ प्रभु पद मो लाकरि रख दीना ॥ सुफल जन्म ताका हरि कीना ॥ जय जय शांकु कोश सब गावैं ॥ अमर पक्ष्य मनमो हरषावैं ॥ ३१९४ ॥ भग्न दूत भागे भय पाए ॥ कलह हाल नृपको बतलाए ॥ शुन लंकेश गिरे घबड़ाई ॥ पुत्र हेतु रोवैं कल-पाई ॥ ३१९५ ॥

॥ कवित ॥

अनुज सहित राम जम्बूवान हनूवान सुग्रीव अङ्गद भालु कपि सब आयके ॥ भाषत आनन्द गाज इन्द्रजीत करि पात रावणको मार काज आपनो करायके ॥ विभीषण शिर छत्र देवैं रण जीत पत्र

छन्द

आतम पुराण ज्ञान राम नाम गायकै नरगणपाल सिंह पुस्तक रचत भज्ञ गुरु पूरण ब्रह्म नानक मनायकै ॥ ३१९६ ॥

अथ इन्द्रजीत वध.

॥ कवित ॥

पुनि आज्ञा पाय भूप कुटनको जाय कूप ... न दौड़ जनकको लायकै ॥ भाषत है जोड़ पाणि आजि करि मार बाण श्रीरामलछमण सुगड लाज रण आयके ॥ सुनत लङ्केश रोय बोलत अचेत होय बंस सर्ब्ब ध्वंस मोर संग्राम करायकै ॥ भयो मेघनाद पुत्र वारिदमो जाय सुन मारूं कपुंगण अद्य पावक मनायकै ॥ ३१९७ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

सुन रावण अतिशय हरषाये ॥ पुत्र शोक निज गयो भुलाये ॥ प्रधन हेतु यह ढोंग रचाई ॥ भयो दुष्ट सुतको समुभाई ॥ ३१९८ ॥ महा महा योधा पठआए ॥ जीवत लौट कोय नहि आए ॥ बार बार रण आप करावें ॥ कपुगण मार मार गृह आवें ॥ ३१९९ ॥

राम लखणते कलह कराई ॥ बांध्यो नागपासमो जाई ॥ कश्यप सुत आ प्राण बचाये ॥ पुन विग्रह कीना सुत जाये ॥२२००॥ बलय सहित रघुपतिको घाई ॥ प्राण दान दीना मम पाई ॥ दुष्ट पवनसुत भेषज लाए ॥ ताते जीव दान सब पाए ॥२२०१॥ इन्द्र-जीत बोलैं शिरनाई ॥ मृत्यु कहा जीवनको पाई ॥ इनको कोय न जीत सकावैं ॥ मर मर प्राण जीन पुन पावैं ॥ २२०२ ॥ शुन भुनता सुतको समुझाते ॥ प्रथमतः वायुज जौ घाते ॥ तब औषधिको को म ई ॥ देते प्राण दान रघुराई ॥ २२०३ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

अबको सुत वर जायकी हनूमानको मार ॥ पुन राघवको मारकी सोध जनकका धार ॥ सोध जनकका धार लङ्कमो राज करावैं ॥ इन्द्रजीत करजोड़ जनकको भाष शुनावैं ॥ रणमो पावे प्राण राज बहुता मे पाई ॥ लङ्काको हे राज ... कराई ॥ २२०४ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

असभण मेध याग बह पाए ॥ छाग महिष गाकुल मगवाए ॥ घृत तण्डुल तिल जव पल चीनी ॥

ले युवराज याग तव कीनी ॥३२०५॥ मन्त्र योगते शुचि चलि धाए ॥ कोप धार तिनसे बतलाए ॥ वार वार क्यों मेध करावें ॥ अब दर्शन मेरो नहि पावें ॥ ३२०६ ॥ नारायणसे बैर कराथे ॥ रावण वंस ध्वंस हो जाथे ॥ मर मर प्रभो प्राण पुन पाई ॥ मूर्ख तथाच प्रतीत न लाई ॥ ३२०७ ॥ मरकी जीव कौन नर पावें ॥ आंधर तोहिसूझ नहि आवें ॥ असभण चित्त-भानु गृह धाए ॥ ताते मेघनाद भय पाए ॥ ३२०८ ॥ जनक हेतु मनमो सकुचाई ॥ भिड़न चला रण भूमि हराई ॥ चढ़ा गगन रावण सुत धाए ॥ मार मार भालुक कपि धाए ॥ ३२०९ ॥ निरखि राम लक्ष्मण भय पाई ॥ पूछन लगी मित्र बुलवाई ॥ को शर अन्त-रिक्षसे मारा ॥ जाय बिलोकन दुष्ट कारारा ॥३२१०॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

शुन रघुपतिकी बचनको भयो विभीषण शान्त ॥ मेघनाद आयो प्रभो जाका अब है अन्त ॥ जाका अब है अन्त शुनत भागा भय पाए ॥ विद्युतजिह्वा नाम निशाचरको बुलवाए ॥ इन्द्रजीत करजोड़ तिन्हे भाषे शुन भाई ॥ मायाकी झट देहु मुझे सीता गढ़ि लाई ॥ ३२११ ॥

॥ पादाकुलक छन्द ॥

ताको रथमो देहुं खपाई ॥ निरखि राम निज प्राण तजाई ॥ लक्ष्मण भ्रात शोकको पाए ॥ निज तनको दिष्टान्त कराए ॥ ३२१२ ॥ भागें भालु मर्क भय पाई ॥ होवे मङ्गल समर जय भाई ॥ शुनत यातु अतिशय हरषाए ॥ तत्काल सीता गढ़ि लाए ॥ ३२१३ ॥ ताको भयो यातु समुझाई ॥ स्वामी तोर राम शुन माई ॥ देवर लक्ष्मण नाम धरावें ॥ दशरथ श्वशुर तोर कहि लावैं ॥ ३२१४ ॥ जनक भूप तव जनक कहाए ॥ लंकामो रावण हर लाए ॥ मेघनाद तुझको लै जावें ॥ राम नाम भव शोर मचावैं ॥३२१५॥ भेद सर्व्वं ताको बतलाई ॥ सीता इन्द्रजीतको लाई ॥ निरखि दुष्ट अतिशय हरषायी ॥ ले रथ पर रण भूमि सिधाये ॥ ३२१६ ॥ गयो द्वार पश्चिम गर्जाई ॥ सिंहनाद करि खड्ग खिचाई ॥ दुष्ट जानकीको धमकावैं ॥ तोकोमार कान्त तव धावैं ॥ ३२१७ ॥

॥ कुण्डलिया छन्द ॥

देख खड्गको जानकी करि क्रन्दन कलपाय ॥ कहा रघुनायक प्रभो देवर लक्ष्मण भाय ॥ देवर